आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मई 2022
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मई 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 03
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

60th षष्ठी प्रवेश

ज्ञान के पट खोल अनन्यदर्शी बनें

बिन्दु से सिंधु तक

- संघर्ष व समस्याएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।
- सावधान रहने वाला साधक चित्तवृत्तियों के मकड़जाल में फंस नहीं पाता।
- मन को जैसी सामग्री प्राप्त होगी उसी प्रकार के विचारों का निर्माण होगा।
- यदि मनुष्य में अहंकार भाव आ जाए तो साधना में उसका मन नहीं लगेगा।
- आत्मज्ञान जितना गहरा होगा प्रतिक्रियाएँ उतनी ही कम होती चली जाएगी।
- व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने जीवन के प्रति पूर्ण ईमानदार रहे।
- अशांति तो एक प्रकार से छाया मात्र है। उसका मूल आधार तो महत्त्वाकांक्षा है।
- समस्याओं से घबराना व्यक्ति की कमजोरी एवं कायरता का द्योतक है। समस्याओं से जूझना जीवंत जीवन का सूचक है।
- कभी-कभी अधिक बोलने वाला जितना घातक नहीं होता, उतना मौन या कम बोलने वाला घातक सिद्ध हो जाता है।
- कर्म प्रधान व्यक्ति को सोचना चाहिए कि मुझे मेरा कर्म करना है। लोग उसे अच्छा कहें या बुरा, उससे उसे कोई लेना-देना नहीं।
- मन का भेदन करने वाले कटु वचनों को सुनकर भी समभाव बनाए रखना जीवन उन्नति का मार्ग है।
- जो करना है उस पर केवल कल्पना के घोड़े नहीं दौड़ाकर उसे प्राप्त करने का संकल्प जागृत करना चाहिए।
- व्यक्ति बड़ा या छोटा ओहदे या पद से नहीं होता और न ही ज्ञान से होता है, बल्कि बड़ा होने का मापदण्ड आचरण है।
- माया, छल, प्रपंच जहाँ विद्यमान हैं वहाँ सद्गुणों का प्रकटीकरण अथवा प्रस्फुटन संभव नहीं है।
- किसी को कोई बात कहनी है तो उसमें तीन बिन्दुओं का ध्यान रखें -1. आत्मविश्वास पूर्वक कहें 2. शांत भाव से कहें 3. विश्लेषण, धैर्यपूर्वक कहें।
- सत्य हमारे हृदय में है, किन्तु ईर्ष्या एवं माया ने भी वहाँ स्थान बना रखा है। इन दोनों के कारण सत्य आवृत्त हो चुका है।
- किसी की प्रशंसा यदि गलत कार्यों से हो रही हो तो उसकी देखा देखी में गलत मार्ग पर कदम मत बढ़ाओ।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

आगमवाणी

सव्वेसिमासमाणं हिदयं गब्भो व सव्वसत्थाणं।
सव्वेसिं वद्गुणाणं पिंडो, सारो अहिंसा हू।।

-भगवती आराधना (790)

अहिंसा विश्व के सर्व आश्रमों का हृदय है, सभी शास्त्रों का उद्गम स्थान है तथा सर्वव्रतों-सिद्धान्तों का नवनीत रूप सार है।

Non-violence is the essence of all tenets of all the faiths, the heart of all worldly stages of life (ashrama) and the origin of all the scriptures.

से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए।

-आचारांग (1/4/4)

जो आरम्भ (हिंसा) से उपरत है, वही प्रज्ञावान बुद्ध है।

One, who keeps away from violence is really wise and enlightened.

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
न हंतव्वा, न अज्जावेयव्वा न परिघेतव्वा, न परियावेयव्वा
न उद्दवेयव्वा इत्थं विजाणह नत्थित्थ दोसो।
आरियवयणमेयं।

-आचारांग (1/4/2)

किसी भी प्राणी, किसी भी भूत, किसी भी जीव और किसी भी सत्त्व को नहीं मारना चाहिए, न उन पर अनुचित शासन करना चाहिए, न उनको गुलामों की तरह पराधीन बनाना चाहिए, न उन्हें परिताप देना चाहिए और न ही उनके प्रति किसी प्रकार का उपद्रव करना चाहिए।

उक्त अहिंसा धर्म में किसी प्रकार का दोष नहीं है, यह ध्यान में रखिए।

No living being, no vitality, no soul, no existence ought to be killed, tortured, ill treated, tormented, enslaved or unduly suppressed. Remember that the vow of non-violence remain unflawed.

जेवऽन्ने एएहिं काएहिं दंडं समारंभंति,
तेसिं पि वयं लज्जामो।

-आचारांग (1/8/1)

यदि कोई अन्य व्यक्ति भी धर्म के नाम पर जीवों की हिंसा करते हैं तो हम इससे भी लज्जानुभूति करें।

Even if the others kill in the name of religion, we feel ashamed.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

अनुक्रमणिका

AS A SKILLED MERCHANT AND
A STEADFAST RELIGIOUS MAN 07
परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री श्रीलालजी म.सा. के देवलोकगमन
पर आयोजित शोकसभाएँ 09
सरलता से सिद्धि 12
दो बीज : समता-विषमता के 15
अहिंसा व धर्म 17

हित वचन 20
श्रीमद् भगवती सूत्र 24
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 25

महामाता कौशल्या 28
शाकाहार में शंका कैसी 35
समता दर्शन : एक वैज्ञानिक व्याख्या 39
वर्तमान शिक्षा प्रणाली... 43
जैन धर्म में वर्णित 18 पाप... 48
माता-पिता बच्चों के सहयोगी बनें, अवरोधक नहीं 55
इम्युनिटी का चोर 58

समकित के 67 बोल 32

रास्ता तकदीर का 14
श्रमणोपासक 16
श्रमणोपासक का करते अभिनन्दन 34

विविध
गुरुमुख वचन सदा सुखदाई 51
कुछ इन्टरेस्टिंग 53
गुरु चरण विहार 61

चिन्तन पराग

ज्ञान का पट खोलें

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

आम व्यक्ति के दिन-रात वैसे ही व्यतीत हो रहे हैं, कुछ करने योग्य किया नहीं जा रहा है। व्यर्थ की कल्पना, व्यर्थ के विचार मस्तिष्क के पटल पर आने-जाने से शक्ति का अपव्यय हो रहा है। निद्रा, स्वप्न, जागृति, चिन्ता आदि प्रक्रियाओं में समय बीत रहा है। भव्य चेतन! इन सभी दशाओं में तुझे सावधानीपूर्वक आगे बढ़ने की आवश्यकता है। इन्हीं दशाओं में तू अनादिकाल से चलता आ रहा है। उनसे ऊपर उठने का सोचा भी नहीं गया। यत्किंचित् सोचा भी गया तो ऊपरी तौर से। अन्त:स्थल से सोचने का जरा भी प्रयास सही ज्ञानपूर्वक नहीं बन पाया। यही कारण है कि आत्मा का विकास प्राय: अवरुद्ध-सा ही रहा। भव्य प्राणी! अब भी समय है, अवसर है, अवकाश है, जीवन की योग्य दशा है, साधन-सामग्री का अनुकूल योग है वास्तविक ज्ञान का पट खोलने का। क्यों नहीं खोला जा रहा है? क्यों व्यर्थ में पड़ा हुआ है? अब तो जाग! अब तो चेत! अब तो संभल! जरा सोच कि क्या कर रहा है? बड़े दु:ख का विषय है कि तुम्हारा सारा समय व्यर्थ में जा रहा है। कुछ भी सही मायने में कर नहीं पा रहा है। कब करेगा? कब जागेगा? कब चलेगा गन्तव्य स्थान पर? सही दिशा सामने रखकर सच्चे पुरुषार्थ बल से चल पड़। सफल होंगे तुम्हारे दिन-रात।

साभार- गहरी पर्त्त के हस्ताक्षर

अनन्यदर्शी आचार्य श्री नानेश

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

श्रीमद् आचारांग सूत्र में कहा गया है- **''जे अणण्णा दंसी से अणण्णा रामे, जे अणण्णा रामे से अणण्णा दंसी''** जो अनन्य दर्शी होता है, वह अनन्य में रमण करता है। जो अनन्य में रमण करता है, वह अनन्य दर्शी होता है। दुनिया के समग्र पदार्थ जो अपने से भिन्न हैं वे अन्य हैं। अन्य यानी दूसरा। अनन्य अर्थात् स्वयं। जो स्वयं में रमण करता है, जो स्वयं में स्थित रहता है, जो स्वयं को देखता है वह खुशहाल रहता है। दूसरों को देखना, दूसरों की तरफ देखना हमारी खुशहाली को नष्ट करना है। यदि दूसरे को अपने से उत्कर्ष में देखा जाएगा तो हीन भाव बनेंगे और मन में टीस पैदा होगी। अंदर ही अंदर वह वेदना उसे सालती रहेगी। यदि अन्य को अपने से हीन देखेंगे तो मन उत्कर्ष से, गर्व से भरेगा। मैं दूसरों से श्रेष्ठ हूँ, ऊँचा हूँ। मेरे में ये अमुक विशेषताएँ हैं जो अन्यों में नहीं हैं। इस प्रकार का उत्कर्ष या पूर्व प्रकार की हीनता दोनों ही जीवन के लिए घातक है। दोनों से आत्मगुणों का हनन होता है। दोनों ही स्थितियों से आत्मानन्द खिसकने लगता है। अत: शास्त्र हमें कहता है कि स्वयं में स्थित होओ, स्वयं को देखो। जब अन्य कोई विचार सारणी में होगा ही नहीं तो व्यक्ति तुलना किससे करेगा? जब तुलना ही नहीं होगी, हीन-उत्कर्ष के भाव भी पैदा नहीं होंगे। परिणामस्वरूप आत्मानंद यथावत् बना रहेगा।

आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालालजी म.सा. अनन्यरामी थे। वे अपनी शानी के एक ही थे। उनका ज्ञान, दर्शन, चारित्र, संयम, सोच, प्रज्ञादि सब अनन्य थे। आज उनकी जन्म-जयंती है। आने वाले समय (2020) में उनके जन्म को सौ वर्ष पूरे होने वाले हैं यानी जन्म शताब्दी। वह भी अनन्य रूप से आयोजित हो, आरंभ-समारंभ के बजाय अधिक से अधिक ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना अभिप्रेत है। उसके अनेक आयाम दिए गए हैं व आने वाले समय में भी संभव हैं।

6.6.2016, ज्येष्ठ सुदी 2, सोमवार **साभार- आरोह**

विराम

लेखन को प्रभावी रूप देने के लिए कई प्रकार के विराम चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, जो कि लेखन में भावों की अभिव्यक्ति, वाक्य का अर्थ स्पष्ट करने, उतार-चढ़ाव और ठहराव को दर्शाने के लिए आवश्यक होते हैं। हिन्दी व्याकरण में वाक्य की स्थिति अनुसार 16 प्रकार के विराम चिन्ह बताए गए हैं।

विराम = विश्राम, अटकाव, ठहराव

विराम का प्रयोग सही स्थान पर किया जाए तो वह लेखनी को प्रभावशाली बनाता है, जबकि विराम चिन्हों का प्रयोग सही नहीं किया जाए तो अर्थ कुछ अलग ही रूप ले लेता है।

जैसे- **1. रोको, मत जाने दो। 2. रोको मत, जाने दो।**

मेरे विचार से उपर्युक्त उदाहरण से विराम चिन्हों/विराम की महत्ता स्पष्ट होती है। यह हुई भाषा सम्बन्धी नियमों अर्थात् व्याकरण की बात। परन्तु चिन्तन करें, दृष्टिगोचर करें कि क्या हम हमारे जीवन में विराम का उचित स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं। जिस तरह लेखनी में विराम परिचायक होते हैं वैसे ही जीवन रूपी रचना विधान में भी समय-समय पर उपयुक्त विरामों की आवश्यकता होती है। आज के चिन्तनशील व बुद्धिशाली महामानव ने प्रकृति के समस्त नियमों की भाँति विराम की परिभाषा भी बदल दी है और शायद यह सब पढ़ते-पढ़ते कुछ लोगों के मन में तो उधेड़बुन भी प्रारंभ हो गई होगी कि हम अपने जीवन में कब, कैसे व कितना विराम लेते हैं?

शास्त्रों में कार्य करते हुए मानसिक व शारीरिक थकान दूर करने के लिए विश्राम स्वरूप एक संतुलित निद्रा का विधान है, जिसके अन्तर्गत दिनभर खूब श्रम किया जाए और रात्रि में निश्चिंत हो कर गहरी निद्रा ली जाए।

परन्तु एक दृष्टि दौड़ाई जाए तो निष्कर्ष यह निकलता है कि आगे बढ़ने की होड़ ने दिनचर्या को रात्रिचर्या बना दिया है और हम अपने आपको सर्वेसर्वा समझने लगे हैं। प्रकृति के नियम क्या हैं? शास्त्र क्या कहते हैं? महापुरुष हमें क्या समझा रहे हैं? इससे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। **“लाईफस्टाईल और करियर ऑरियण्टेड”** इन दो शब्दों ने समाज, सभ्यता, संस्कृति, नियमों पर अपनी हुकूमत जमाली है।

आजकल प्रचलन हो गया है कि व्यक्ति हफ्ते में 5 दिन काम करे और 2 दिन उसे विराम अर्थात् विश्राम चाहिए। इस गणना के अनुसार देखा जाए तो व्यक्ति एक साल में लगभग 100 दिन विराम लेता है और अपनी कार्य करने की औसतन उम्र 25-60 वर्ष की उम्र में लगभग 9 साल का विराम लेता है। इसमें त्यौहार, पारिवारिक अवसर व अन्य-अन्य प्रकार के विराम सम्मिलित नहीं हैं।

हम चिन्तन करें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं! जहाँ हमारे महापुरुष 4-5 घण्टे विराम लेकर भी ऊर्जावान होकर जन-जन के कल्याण हेतु प्रयत्नशील रहते हैं, भगवान महावीर ने अपने पूरे संयम काल में एक बार विश्राम लिया, वह भी 2 घड़ी का, वहीं हम उनके अनुयायी पथभ्रष्ट कैसे बन रहे हैं?

चिन्तन करें- **“समयं गोयम! मा पमायए”**

अति दुर्लभ, छोटा-सा मानव जीवन, जैन कुल, सुगुरु, सुदेव, सुधर्म अनंतानंत पुण्यवानी से मिला है। इसे विभिन्न प्रयोजनों पर विराम देकर व्यर्थ न करें और शारीरिक व मानसिक विराम की स्थिति होने पर विराम अवश्य लेवें, परन्तु यथोचित्... साथ ही इसके निष्कर्ष में समय का कुशल प्रबंधन करते हुए जीवन को निर्णायक बनाए।

-सह-सम्पादिका

AS A SKILLED MERCHANT AND A STEADFAST RELIGIOUS MAN

Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHAND JI M.SA.

Continued from 15-16 April 2022-

Dear children!

Honorable Ratanchand ji was delighted to see the emerging youth and shining beauty of his beloved son. One day Ratanchand ji called Hukmichand to him. After **showering his inner affection, he started caressing the head of Hukmichand and said, 'Hukm!** Now you wake up early in the morning and after finishing your essential work, go to the shop, clean it and start handling the business, so that I can devote some of my time to religious activities.

Hearing this from his father, Hukmichand bowed his head at his father's feet and started going to the shop without any hesitation. Within a few days, he took over all the work of the shop. With his cordial behavior and work efficiency, he made so much progress in business that even father Ratanchand ji was surprised. He easily influence all those he would spend customers who had never worked with Ratanchandji and convinced them to never leave their shop and go elsewhere.

Ratanchand Ji was now free from business worries. Whether it was to buy or to sell goods, he put all the responsibility with complete certainty on Hukmichand and started spending his free time performing rituals like Samayik-Pratikraman and reading religious scriptures. He started to spend his maximum time in veneration and worship of saints.

All these qualities were also ingraine in Hukmichand. At the same time, whenever saints arrived, he used the oppurtunity to listen to their discourses along with their darshan. With complete devotion and gratitude he also performed samayik-pratikraman and gained knowledge from them. This instilled an unwavering faith in religion within him. As a result, he readily did all his business work considering it as his duty and completed it with full vigilance.

TO BIND IN A UNION : MARRIAGE

Dear children!

As Hukmichand's brilliance and gracefulness began to bloom, the aura of his modesty, decency, softness, simplicity, spontaneity etc., started spreading all around. Being aware of his qualities, all the respectable people of the society started to think that if the relation of our worthy daughter is associated

with such a suitable boy, then it would increase the pride of both the families. Also, the girl will be able to live a delightful and comfortable life.

Inspired by these sentiments, many expressed their inner feelings to honorable Ratanchand ji through their close and trusted relatives. Two-three elder members of the families reached Todarai Singh with the proposition of an engagement. This news also reached Honorable Ratanchand ji.

When Ratanchand ji told this good news to his wife Motibai, she jumped with immense joy. With intense fervor, she started dreaming about his beloved son - Hukmichand's engagement, marriage and that when her courtyard would reverberate with the sound of her daughter-in-law's anklets. With the hope of fulfillment of her dreams, she started preparing for the hospitality of the guests and visitors.

But a problem stood before them. The problem was that Hukmichand had been to Boondi for business work for two days and he had not returned yet. Yet, while waiting for his arrival, they started to honor and welcome the guests who had arrived. The guests could discern the decency and opulence of the family at their reception. After getting the essence of Hukichand's modesty, business efficiency, prudence etc. from the Jain and non-Jain families of Todai village, they felt joyfulness and were eagerly waiting to see Hukmichand and conduct the engagement ceremony.

Continued...

A Mouse

A mouse was placed at the top of a jar filled with grains. It was so happy to find so much food around him that no longer he felt the need to run around searching for food. Now he could happily live his life. After a few days of enjoying the grains, he reached the bottom of the jar.

Suddenly, he realize that he was trapped and he couldn't get out. Now he has fully dependent on someone to put grains in the jar for him to survive.

He has no choice but to eat what he's given.

A few lessons to learn from this-

1. Short term pleasures can lead to long-term traps.
2. If things come easy and you get comfortable, you are getting trapped into dependency.
3. When you are not using your skills, you will lose morethan your skills. You lose your CHOICES and FREEDOM.
4. Freedom does not come easy but can be lost quickly.
5. Nothing comes easily in life, and if it comes easily, it may be due to your earlier good karmas. Try to be static in that situations.

Don't curse your struggles. They are your blessings in disguise.

Let think for a moment.

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. के देवलोकगमन पर आयोजित शोकसभाएँ

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे...

आषाढ़ शुक्ल तृतीया को आचार्य प्रवर 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. का नश्वर शरीररूपी दैदीप्यमान नक्षत्र विलुप्त हो गया था। आचार्यश्री के देवलोक गमन से सर्वत्र अश्रुपूरित माहौल व्याप्त हो गया था, आपश्री के देवलोकगमन पर आयोजित शोकसभाओं का विवरण आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है जिसे पढ़कर आप भी भावविभोर हो उठेंगे।

मारवाड़, मालवा, मेवाड़, गुजरात, काठियावाड़, दक्षिण, पंजाब इत्यादि प्रान्तों के अनेक नगरों एवं गाँवों में पूज्यश्री के स्वर्गवास के समाचार मिलते ही कामकाज बन्द रखा गया, अगते पर्व पाले गए, धर्म-ध्यान, दान-पुण्य किया गया और जीवदया के कार्यों पर लाखों रुपये व्यय किए गए। उन सबका यहाँ वृत्तान्त सम्भव नहीं है, किन्तु उनमें से मुख्य-मुख्य सभाओं का वर्णन नीचे दिया जा रहा है-

मुम्बई संघ की वृहद् सभा

दिनांक 24 जून 1920 को चिंचपोकली के जैन उपाश्रय में जैन संघ की एक आमसभा की गई, जिसमें सैंकड़ों लोगों ने उपस्थित होकर पूज्य आचार्यश्री के स्वर्गवास से जैन सम्प्रदाय और धर्म की भारी हानि होने एवं उसकी पूर्ति संभव न होने के विषय में भावाभिव्यक्ति देते हुए अत्यन्त शोक प्रदर्शित किया। अन्त में मुम्बई जैन संघ की ओर से बीकानेर में विराजमान युवाचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.की सेवा में बीकानेर संघ तथा रतलाम संघ को शोक संवेदना तार देना निश्चित हुआ।

पूज्य आचार्य श्री के देवलोकगमन पर जीवों को अभयदान देने के लिए एक निधि की स्थापना की गई, जिसमें उपस्थित व्यक्तियों ने पाँच हजार रुपयों से एक निधि बनाई, जो अभी भी कार्यरत है। उस दिन मुम्बई में जौहरी बाजार, शेयर बाजार, कपड़ा मार्केट एवं किराणा बाजार सहित लगभग प्रतिष्ठान बन्द रहे।

रतलाम

तारीख 25 जून 1920 को बड़े स्थानक में संघ सभा का आयोजन किया गया। सभा में मुम्बई संघ का शोक सन्देश पढ़ा गया। तीन-चार वक्ताओं ने पूज्यश्री का जीवन चरित्र सभा के समक्ष प्रस्तुत किया तथा पूज्यश्री के अकस्मात् वियोग के लिए अत्यन्त खेद होना व्यक्त कर निम्न प्रस्ताव पारित किया-

पहला प्रस्ताव

श्रीमान् परमगुणालंकृत, क्षमावान, धैर्यवान, तेजस्वी, जगद्वल्लभ, महाप्रतापी, आचार्य पदधारक परम पूज्य महाराजाधिराज श्री श्री 1008 श्री श्रीलालजी म.सा. का आषाढ़ शुक्ला 3 शनिवार को जैतारण में आकस्मिक स्वर्गवास का खेदजनक और हृदयभेदक समाचार सुनकर रतलाम संघ को अत्यन्त दु:ख हुआ है। सम्पूर्ण जैन समाज ने एक

अमूल्य रत्न खो दिया है और ऐसा रत्न फिर प्राप्त होना दुर्लभ है। यह सभा मुम्बई संघ का उपकार मानती है और परम पूज्य 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा. को और संघ को मुम्बई और रतलाम संघ की तरफ से आश्वासन देने के लिए बीकानेर तार दिए जाने का निर्णय लेती है व परम पूज्य 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा. का यश दिनो-दिन बढ़े, ऐसी कामना हृदय से करती है।

दूसरा प्रस्ताव

श्रीमान् पूज्यश्री महाराज के स्वर्गवास के समाचार सुनते ही तमाम संघ ने उसी समय अपनी दुकानें बन्द कर शोक व्यक्त किया। तथापि संघ की ओर से निर्णय लिया गया कि स्वर्गस्थ पूज्य महाराजश्री के प्रति श्रद्धा जाहिर करने के लिए आषाढ़ सुदी 13 मंगलवार के दिन समस्त बाजार बन्द रखा जाए तथा गरीबों को अन्न-वस्त्र का दान दिया जाए। इस कार्य के लिए 4 व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई।

उपरोक्त प्रस्ताव के अनुसार मिति आषाढ़ सुदी 13 को रतलाम में कई दुकानें बन्द रहीं। अन्न-वस्त्रादि दान किए गए।

राजकोट

तारीख 29.6.1920 को यहाँ के तालुका स्कूल के सभा भवन में राजकोट स्टेट के मुख्य दीवान रायबहादुर हरजीवन भवानभाई कोटक बी.ए., एल.एल.बी. के सभापतित्व में राजकोट के निवासियों की एक आमसभा आयोजित की गई। सभापति महोदय एवं अन्य वक्ताओं ने पूज्यश्री द्वारा राजकोट के चातुर्मास में किए गए अवर्णनीय उपकारों का अत्यन्त ही प्रभावकारी भाषा में विवेचन किया और पूज्यश्री के स्वर्गवास के प्रति शोक प्रकट करते हुए निम्न प्रस्ताव पारित किया-

प्रस्ताव

राजकोट के निवासियों की यह सभा जैनाचार्य 1008 पूज्य श्री श्रीलालजी म.सा. के असामयिक निधन पर अन्त:करण से अत्यन्त खेद प्रकट करती है।

संवत् 1967 का चातुर्मास निष्फल जाने से संवत् 1968 के चातुर्मास में विशेषतया जानवरों के लिए बड़ा भारी दुष्काल पड़ा। उस समय चातुर्मास के दौरान पूज्यश्री ने यहाँ के तथा बाहर गाँवों के लोगों को दया तथा सेवा धर्म का सच्चा अर्थ समझाकर लोगों में दयाभाव उत्पन्न किया था। उसके प्रभाव से राजकोट में उस दुष्काल में भी स्थानीय एवं बाहर से अच्छी राशि एकत्रित हुई, जिससे मनुष्य जाति एवं जानवरों को जीवन सम्बल दिया गया। ऐसे एक सच्चे महान विद्वान् और चरित्रवान महामुनि के स्वर्गवास से सिर्फ जैन जाति को ही नहीं, अपितु पूरे मानव समाज की बड़ी भारी क्षति हुई है।

उपरोक्त प्रस्ताव पत्र द्वारा तथा उसका सार तार द्वारा बीकानेर व रतलाम संघ को सभापति महोदय के हस्ताक्षर से भेजने का भी निर्णय लिया गया।

दूसरा प्रस्ताव

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. द्वारा हम पर किए गए उपकारों के लिए उनको जितना भी मान दिया जाए, उनके प्रति जितनी भक्ति प्रकट की जाए, उतनी ही कम है। ऐसा मानते हुए सभा ने संकल्प किया कि कल चातुर्मासिक पक्खी के दिन महाराजश्री के प्रति भक्तिभाव रखने वाले लोग अपना-अपना काम-धन्धा बन्द रखकर हो सके तो उपवासादि कर धर्म-ध्यान में बिताएँ और इस प्रकार स्वर्गस्थ महाराजश्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें। इस संकल्प की प्रति भी सभापति महोदय के हस्ताक्षर से बीकानेर तथा रतलाम संघ भेजा जाना तय हुआ।

जोधपुर

दिनांक 3 जुलाई 1920 पूज्य महाराजश्री के स्वर्गवास से संघ में शोक की लहर छा गई। पंडित श्री पन्नालालजी म.सा. ने उस दिन व्याख्यान बन्द रखकर शोक रखा।

कोलकाता

तार द्वारा समाचार मिलते ही समस्त श्रावक भाइयों ने मारवाड़ी चैम्बर्स की सम्मति से बाजार बन्द रखा और संवर, पौषध तथा दान-

पुण्य का दौर चालू हो गया।

भीलवाड़ा

आषाढ़ शुक्ला 4 को प्रात:काल समाचार मिलते ही जैन व जैनेत्तर समाज में शोक की लहर छा गई। धर्म-ध्यान, दान-पुण्य इत्यादि का दौर प्रारम्भ हो गया। जावरा वाले संत श्री देवीलालजी म.सा. यहाँ विराज रहे थे, उन्हें भी यह समाचार जानकर शोक हुआ। व्याख्यान बन्द रखा एवं गोचरी करने भी नहीं गए। बाद में भी अनेक बार आचार्यश्री के गुणानुवाद व्याख्यान में करते रहते थे।

सादड़ी

अवसान की खबर मिलते ही जीवदया के लिए रु. 400/- एकत्रित कर जीव छुड़ाए गए। द्वितीय श्रावण बदी 11 को एक दवाखाना खोला गया।

रामपुरा

श्री ज्ञानचन्द्रजी म.सा. के सम्प्रदाय के मुनि श्री इन्द्रमलजी यहाँ विराजमान थे। पूज्यश्री के स्वर्गवास के समाचार सुनकर उन्हें भी अत्यन्त खेद हुआ। उस दिन आहार-पानी भी नहीं किया। संघ में शोक की लहर दौड़ गई।

रायचूर

यहाँ पूज्य श्री श्रीलालजी म.सा. की पुण्यस्मृति में 'श्रीलाल जैन पुस्तकालय' खोला गया।

धोराजी

व्याख्यान परिषद् में शतावधानी पं. रतनचन्द्रजी महाराज ने पूज्यश्री के स्वर्गवास पर श्रद्धांजलि देते हुए उनके उत्तम गुणों का अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया, जिससे श्रोताओं का हृदय शोकमग्न हो गया और आँखों से अश्रु प्रवाह होने लगा। इस अवसर पर व्रत-प्रत्याख्यान हुए। संकलन करके रु. 125/- के कपासिये अपंग पशुओं को खिलाए गए।

कपासन

तपस्वी श्री हजारीमलजी म.सा. आदि ठाणा यहाँ विराजित थे। आचार्यश्री के स्वर्गवास के समाचार मिलते ही साधु, श्रावकों में भारी शोक छा गया। दूसरे दिन व्याख्यान बंद रहा। महाराज ने उपवास किया। पींजरापोल खोलने का प्रबन्ध हुआ।

जावद

समस्त श्रावकों ने दुकानें बन्द रखी और उपाश्रय में एकत्रित हुए। कसाइयों की भी दुकानें बन्द रही। गरीबों को वस्त्र तथा भोजन एवं पशु-पक्षियों को खल, घास, ज्वार पूड़ियाँ आदि खिलाए गए। कई तेलियों ने अपनी ओर से पशुओं को खल खिलाई।

उपरोक्त स्थानों के अतिरिक्त उदयपुर, बीकानेर, दिल्ली, आकोला, शिवपुरी, सिन्दुरणी, जावरा, मोरवी, जयपुर इत्यादि अनेक शहरों और गाँवों में शोकसभाएँ तथा दान-पुण्य, संवर, पौषध हुए।

साभार- अद्भुत योगी

-क्रमश:

ज्ञान हानि के 7 कारण

1. आलस्य करे तो ज्ञान घटे।
2. निद्रा अधिक लेवे तो ज्ञान घटे।
3. क्लेश करे तो ज्ञान घटे।
4. शोक करे तो ज्ञान घटे।
5. चिन्ता अधिक करे तो ज्ञान घटे।
6. शरीर में रोग अधिक रहे तो ज्ञान घटे।
7. कुटुम्ब-परिवार के मोह में डूबा रहे तो ज्ञान घटे।

सरलता से सिद्धि

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री गणेशलालजी म.सा.

सत्य की कसौटी पर चढ़कर खरे उतरने वाले एक उदाहरण का जिक्र यहाँ किया जा रहा है जो बहुत ज्यादा प्राचीनकाल का भी नहीं है। यह घटना है राजस्थान के बूंदी नगर की, जहाँ पहले चांप राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम सोनादेवी था, जिसे उनके वंश के नाम से अधिकतर हाड़ी रानी ही कहा जाता था।

एक बार चांप राजा को बादशाह अकबर के दरबार में जाने का अवसर मिला। वे हाड़ी रानी से अत्यधिक प्रेम करते थे और रानी भी पूर्ण पतिपरायणा थी। विलग होने की इच्छा न होते हुए भी चांप राजा किसी तरह शीघ्र लौट आने का आश्वासन रानी को देकर और अपनी स्मृति की निशानी रूप एक रूमाल व कटार सम्हला कर वहाँ से विदा हुए।

अकबर बादशाह का दरबार लगा हुआ था, जिसमें कई स्थानों के नवाब, सामन्त व राजा उपस्थित थे। चांप राजा भी यथास्थान बैठे हुए थे। दरबार में कई बातों की चर्चा चलाते हुए बादशाह ने कहा कि **हम तो हज (तीर्थयात्रा) करने की बजाय किसी सती-साध्वी का दर्शन करना चाहते हैं, सो है किसी की घर वाली कोई ऐसी साध्वी, जिसकी पतिपरायणता व साधुता पर उसकी आत्मा पूर्ण रूप से विश्वास करती हो?** सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। इस शर्मनाक चुप्पी को देखकर चांप राजा से न रहा गया, वे छाती ठोक कर बोले कि बादशाह किसी सती-साध्वी के पुण्य दर्शन की अपनी इच्छा उसके घर पर पूरी कर सकते हैं, उन्हें अपनी हाड़ी रानी पर ऐसा ही अमिट विश्वास है। बादशाह ने पहले परीक्षा की शर्त रखी और राजा ने उसे गंभीरता से स्वीकार करते हुए कहा कि अगर मेरे कथन के विरुद्ध कुछ भी अन्यथा साबित हो जाए तो मैं वीर राजपूत होने के नाते अपना सिर दे डालने का इस दरबार के सामने वादा करता हूँ।

इस तरह हाड़ी रानी की कठोर कसौटी वेला उपस्थित हो गई। राजा को वहीं ठहरे रहने के लिए कहा गया और एक कुटिल सामन्त मियां शेरबेग उस कसौटी के लिए वहाँ से बूंदी भेजा गया। बूंदी पहुँचकर मियां ने अपना डेरा शहर से कुछ दूर ही लगवा लिया। फिर उसने एक मालिन को कुटिलता के पाठ पढ़ाकर इस तरह तैयार किया कि वह राजमहल में चांप राजा की बुआ बनकर पहुँची। उसने रानी को अपने साथ नहाने के लिए तैयार किया। हौज में कुटिलतापूर्वक क्रीड़ा करते हुए उसने यह जानकारी प्राप्त कर ली कि हाड़ी रानी की जंघा के ऊपरी भाग में एक बड़ा-सा काला दाग है। अब बुआजी जब रवाना होने लगी तो अपने छोटे बेटे के लिए चांप राजा द्वारा रानी को दी हुई निशानी रूप दोनों चीजें- रूमाल और कटार को ही मांग लिया। रानी ने हिचकिचाहट जताई और दूसरी सुन्दर वस्तुएँ देने को कहा तो बुआजी ने रूठने का स्वांग रचा। इस पर सरलहृदया हाड़ी रानी ने वे दोनों चीजें दे दी और

बुआजी लौट गई।

अब तो मियां शेरबेग चांप राजा को नीचा दिखाने का हौंसला लेकर दिल्ली पहुँच गए। दरबार में उसके रूमाल और कटार के पेश होते ही चांप राजा चौंके, फिर भी उन्होंने अनुमान लगाया कि ये चीजें तो चोरी या धोखेबाजी से भी लाई जा सकती है। उन्होंने इस हरकत का विरोध किया, किन्तु जब कुटिल शेरबेग ने हाड़ी रानी के सतित्व हरण के प्रमाण में जंघा के काले दाग का जिक्र किया और कहा कि इन चीजों- रूमाल और कटार को विदाई के उपहार के रूप में बताया तो चांप राजा कुछ बोल न सके। यकायक उनका सिर शर्म व रोष से नीचे झुक गया। उनके हृदय में हाड़ी रानी के प्रति अविश्वास के बादल मंडरा गए। उन्होंने अपनी मृत्यु स्वीकार ली और उससे पहले एक बार बूंदी जाने की इजाजत मांगी।

बादशाह ने शंका प्रकट की कि ''वापिस न आओ तो'', इस पर एक अन्य सामन्त पहाड़सिंह ने बूंदी राजा की जमानत दी कि वे न आए तो नियत समय पर मृत्यु के लिए वह स्वयं उपस्थित होगा। तब चांप राजा को बूंदी जाने की आज्ञा दे दी गई। बूंदी पहुँच कर ज्योंहीं चांप राजा अपने महलों में पहुँचे, हाड़ी रानी ने उसी सरल प्रेम व पतिपरायणता से उनका स्वागत किया, किन्तु राजा तो घृणा व रोष की आग में जले जा रहे थे। उनके मस्तिष्क को उससे अवकाश ही कहाँ था कि रानी के हृदय को समझ सके? उन्होंने अपनी निशानी रूप दोनों चीजें मांगी और जब रानी ने उनके किसी को दे डालने का स्पष्टीकरण किया तो राजा क्रोधित हो उठा और उसे कलंकिनी का तिरस्कार एवं अपनी मृत्यु का समाचार देकर उसी क्रोधावस्था में वापिस दिल्ली के लिए प्रस्थान कर गए।

इस घटना ने हाड़ी रानी की आँखें खोल दी कि किसी तरह उसे कुटिलता के जाल में फँसाया गया था। कुटिलता की जीत से उसने यह नहीं सोचा कि वह सत्य से पतित होकर कुटिलता में रम जाए, बल्कि उसने सत्य के बल पर ही कुटिलता को परास्त करने का निश्चय किया और कुछ सरदारों को साथ लेकर चुपचाप दिल्ली पहुँच गई।

हाड़ी रानी ने वहाँ जाकर जानकारी प्राप्त की। इधर चांप राजा को दिल्ली पहुँचने में कुछ विलम्ब हो गया और फाँसी का निश्चित समय हो चला। इसलिए पहाड़सिंह चांप राजा के स्थान पर फाँसी के लिए उपस्थित हो गया। ज्योंहीं पहाड़सिंह ने प्रसन्नतापूर्वक अपने मित्र के लिए फाँसी के तख्ते पर कुर्बान होना चाहा कि चांप राजा भी उसी वक्त आ पहुँचा। अब दोनों मित्रों में वाद-विवाद होने लगा कि फाँसी मुझे ही दी जाए। पहाड़सिंह की हठ थी कि चूंकि उसे तख्ते पर ले आए हैं, अब चांप राजा को फाँसी पर नहीं चढ़ाया जा सकता और राजा भला अपने लिए अपने मित्र को कैसे मरने दे सकते थे? इस विवाद की बात से बादशाह खुश हुआ और उसने फाँसी को ही स्थगित करने का आदेश दे दिया।

यह समाचार सारे शहर में फैल गया और हाड़ी रानी को भी यह बात मालूम हुई। उसने बादशाह को ऐसी खुशी के अवसर पर अपना गायन सुनाने का सन्देश भेजा। बादशाह ने स्वीकृति दे दी। दरबार के बीच गायन हुआ, जिसे सुनकर सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। बादशाह ने इसके लिए पुरस्कार देने की बात कही तो हाड़ी रानी ने मांग की कि दरबार में बैठे हुए मियां शेरबेग बूंदी में मेरे पास आए थे और कुछ दिन रहे थे। उस समय का इन्होंने आधा कर्जा तो चुकाया, लेकिन आधा बाकी रह गया है। वह आधा कर्जा अब मुझे दिलवा दीजिए।

ऐसा सुनते ही मियां शेरबेग चौंक पड़ा कि यह बला कहाँ से चली आई और आधा कर्जा कैसा? वह बोल उठा- जहांपनाह! यह बिलकुल झूठ बोलती है? मैं इसको जानता तक नहीं। मैंने इसको कभी देखा नहीं। कुरान हाथ में लेकर कहता हूँ कि मैंने इसकी आवाज तक नहीं सुनी। मियां शेरबेग की बात पूरी होते ही वेश्या रूपधारी हाड़ी रानी ने पर्दे के आवरण से अपने आपको ढक लिया। यह दृश्य देखकर चांप राजा के

अलावा सभी दरबारी व बादशाह आश्चर्य करने लगे कि यह क्या रहस्य है? बादशाह ने इसका कारण पूछा तो रानी ने अपना असली परिचय देते हुए कहा कि मियां शेरबेग ठीक कहता है कि उसने मेरा मुँह तक नहीं देखा, आवाज तक नहीं सुनी, किन्तु जिस कुटिल व माया भरे षड्यंत्र से उसने मुझे बदनाम करने व मेरे पतिदेव चांपराय को लज्जित करने की जो गुस्ताखी की है, उसे स्पष्ट करने के लिए ही मुझे वेश्या का रूप बनाकर यहाँ आना पड़ा। जब से चांपराय यहाँ आए हैं, तब से उनकी याद में तप-जप करती हुई जीवन जी रही हूँ। रानी ने मियां शेरबेग की कुटिलाई की सारी कहानी भी कह सुनाई। अब बेग कुछ भी छिपा न सका और बादशाह से माफी की भीख मांगने लगा। इस तरह हाड़ी रानी ने सत्य की विजय करके दिखलाई। दरबार में हर्षनाद छा गया और चांप राजा का मस्तक गौरवान्वित हो उठा।

निष्कर्ष यह है कि सत्य की राह में कठिनाइयाँ आती हैं, कुटिलताएँ आती हैं किन्तु अगर आप उनसे घबराएँ नहीं और उन्हें कुचलते हुए आगे बढ़ जाएँ तो दुनिया की कोई ताकत सत्य की ज्योति के पास पहुँचने से आपको नहीं रोक सकती।

साभार- नवीनता के अनुगामी

भक्ति रस

रास्ता तकदीर का

-संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

अनंत-अनंत यात्रा पथ पर चलते-चलते,
लख चौरासी योनियों में भटकते-भटकते,
अर्जित तो कर लिया हमने मनुष्य होने का हक,
पर मालिक ना हुए कभी मनुष्यत्व के हम।
क्योंकि शाश्वत तो कुछ भी नहीं जगत् में
न ही मनुष्यत्व, न ही पशुत्व।।

करुणा के कारण पशु से तुम बने मानव,
तो क्रूरता व कठोरता के कारण
बन सकते हो पशु भी तो।
बहुत ही सरल है
यह चौरासी का गणित संध्या,
शायद थोड़ा है कठिन भी
बशर्ते चौरासी योनियों में न उलझे मन।।

करुणा अपनी संभालकर रखनी होगी,
क्रूरता पर लगाम लगानी होगी,
वरना ये आरा, यह चक्र फिर तुम्हें नीचे ले जाएगा,
फिर-फिर चौरासी में भटकाएगा।

रास्ता संकरा है,
दोनों और खाई है गहरी,
रस्सी पर चलते नट की तरह
लगता है अब गिरा, तब गिरा।
कदम फूँक-फूँक कर रखना होगा,
संभल-संभल कर चलना होगा।।

एक ओर रखी है परमात्म पद की पूँजी,
दूसरी ओर धन कूड़ा करकट की तरह है बिखरा पड़ा।
व्यर्थ को ना इकट्ठा करना संध्या,
सार्थक की ओर भी दृष्टि डाल जरा।
अर्थ स्वयं समझ में आ जाएगा
अमृत यूँ ही मुफ्त में मिल जाएगा।।

आत्मन् तू पुल है देव और मनुष्य के बीच का,
न झूलता रहना इसमें रीझता
उस पार है रास्ता तकदीर का।
अनंत की यात्रा के अंत का,
पकड़ हाथ किसी संत का,
पा जाओगे शाश्वत पद अरिहंत का।।

दो बीज : समता-विषमता के

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. की निम्नोक्त धर्मदेशना में वर्तमान शिक्षा प्रणाली को इंगित करते हुए समझाया गया है कि यदि निर्मल भूमि पर सही समय पर सही बीज बोया जाए तो अवश्य ही वह उत्तम रूप से फलीभूत होगा। आचार्यश्री का यह गम्भीर चिंतन शब्दरूपी माला में आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसे पढ़ें, समझें कि क्या हम कोमल मस्तिष्क पर असमय शिक्षा का भार डाल रहे हैं!

मस्तिष्क शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग है। उसमें विषमता के विषवृक्ष का अंकुर भी है और समता का पौधा भी है। दोनों का स्थल एक ही है। जैसे एक ही भूमि में अफीम भी बोई जा सकती है और गन्ने का पौधा भी उगाया जा सकता है। यदि गन्ना उपजाना है तो अफीम की खेती को हटाना होगा और उस जमीन को साफ-सुथरी बनाकर सम अवस्था में लाना होगा। अफीम सम्बन्धी विषम तत्त्व को हटाकर यदि गन्ने का पौधा रोपित किया जाता है तो अमृत तुल्य गन्ने की मधुरता उपलब्ध हो सकती है।

मनुष्य के मस्तिष्क की इस उपजाऊ भूमि में अफीम के तुल्य मल, विक्षेप और आवरण की खेती लहलहा रही है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मा संत्रास पा रही है और उसे शांति के क्षण नहीं मिल रहे हैं। जिधर देखो उधर ही अशांति का जाल दृष्टिगत हो रहा है। ऐसी जगह पर यदि समतारूपी इक्षु-रस की खेती उपजाना है तो उस मल, विक्षेप, आवरण रूपी अफीम को साफ करना होगा और मस्तिष्क की तमाम विचारधाराओं को समता सिद्धान्त से ओतप्रोत बनाना होगा। मनुष्य का मस्तिष्क समता सिद्धान्त से परिमार्जित होना चाहिए। इस समता सिद्धान्त दर्शन में समस्त मानव जाति का समावेश है, सम्पूर्ण विश्व की शांति का बीज इसमें समाया हुआ है।

यदि मनुष्य का मस्तिष्क समता सिद्धांत दर्शन से शुद्ध बनाया जाए तो उसमें शांति का बीजारोपण हो सकता है।

यदि व्यक्ति के मस्तिष्क में समता जीवन-दर्शन का बीज अंकुरित हो गया है तो उसकी वाणी में समता का प्रवाह बहने लगेगा, उसके नेत्रों से

समता का झरना बहेगा, उसके कानों में समता का नाद गूंजेगा, उसके हाथ समता के कार्य में अग्रसर होंगे, उसके पैरों की गति समता जीवन की साधना में तत्पर होगी, उसके शरीर के अणु-अणु में समता जीवन दर्शन का प्रकाश फूट पड़ेगा और वह समता की परम पावन गंगा बहाता हुआ जन-जन के मन को पवित्र करता हुआ चलेगा।

कोमल मस्तिष्क पर शिक्षा का भार

प्राचीनकाल के सुज्ञ शिक्षक एवं संरक्षक बालक के हित की दृष्टि से शिक्षण-कार्य की व्यवस्था करते थे। बालक के मस्तिष्क के कोमल तन्तु जब तक अध्ययन करने में सक्षम न बन जाते तब तक वे बालक पर शिक्षा का भार नहीं डालते थे। योग्य वय में, योग्य समय पर किया गया कार्य फलीभूत हुआ करता है। अपरिपक्व स्थिति में डाला गया भार प्रतिभा को कुण्ठित कर देता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि जिसका प्रारम्भ सुधर जाता है उसका अगला जीवन

भी सुधर जाता है, जिसका प्रारम्भ बिगड़ जाता है उसकी सारी जिन्दगी बिगड़ जाती है। किसी मिठाई की चासनी प्रारम्भ में बिगड़ गई तो वह मिठाई बिगड़ जाएगी। वैसे ही जीवन की चासनी प्रारम्भ में बिगड़ गई तो पूरी जिन्दगी बिगड़ जाती है। अतएव प्रारम्भिक अवस्था में विशेष ध्यान देना चाहिए।

प्राचीनकाल में मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य जीवन को संस्कारी बनाना होता था, धनोपार्जन नहीं। आज के युग में धन की लालसा के कारण विचित्र दशा बन रही है। आज के बालक धन कमाने की मशीन जल्दी से जल्दी कैसे बनें, इसी भावना से उन्हें कोमल-वय में स्कूलों में प्रविष्ट कराया जाता है। वहाँ उन पर इतना भार लाद दिया जाता है कि उनका कोमल मस्तिष्क क्षत-विक्षत हो जाता है। कोमल वय में अधिक भार डालना उनके जीवन को दबाना है। माता-पिता को इस विषय में गम्भीरता से सोचना चाहिए।

साभार- अन्तर के प्रतिबिम्ब

भक्ति रस

श्रमणोपासक

-मोनिका मिन्नी, अहमदाबाद

सृजनात्मकता को हमेशा आगे रखा
करते हुए रचनात्मक तथ्यों का समावेश,
सकल संघ के मुखपत्र का
हो गया 60वें वर्ष में प्रवेश!।। 1 ।।

बड़ों के दिल को छुआ हमेशा
अब बच्चों को भी लुभाती,
धर्म को रोचक बनाने के तरीके
चहुँ दिशाओं में फैलाती।। 2 ।।

59 वर्षों का सुनहरा सफर
60वें वर्ष का बजा है मृदंग,
चुनौतियों व अपेक्षाओं को स्वीकारा
बनी साधुमार्गी परिवार का मुख्य अंग।। 3 ।।

ज्ञानवर्द्धक बातों का मिश्रण
भक्ति रस का अद्‌भुत संगम,
भेंट-स्मृतियों से लेकर ये
दीक्षा-विहार तक का सफर कराती।। 4 ।।

समय-समय पर संघ की
प्ररूपणा को दर्शाती,
समस्त साधुमार्गी संघ की
छवि को ये है दिखलाती।। 5 ।।

संघ के हित में हर जानकारी
हर घर तक है पहुँचाती,
संघ सामाचारी की करके उपासना
श्रमणोपासक है कहलाती।। 6 ।।

अहिंसा व धर्म

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

प्रस्तुत धर्मदेशना में युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. फरमाते हैं कि ''अहिंसा परमो धर्म'' कब बनेगा। आचार्य प्रवर के प्रमुख दृष्टांतों के माध्यम से अहिंसा को व्यापक रूप में ग्रहण करेंगे तब ही धर्म फलित होगा। हृदय को छू जाने वाले दृष्टांत पढ़ें व अहिंसा के मार्ग पर आगे बढ़ें और ग्रामधर्म, नगरधर्म, राष्ट्रधर्म के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करें।

भगवान महावीर ने धर्म के पालन में सामाजिकता को न केवल पूरा महत्त्व दिया बल्कि उनकी धर्म प्रभावना का उद्देश्य ही समाज का हित था। धर्म के माध्यम से उन्होंने समाज कल्याण का कार्य किया। प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उन्होंने धर्म का स्वरूप बताया ताकि लोग धर्म पर स्थिर बनें और उनमें धर्म के प्रति एक ललक जगे। आत्मवत् सर्वभूतेषु के प्रभाव से ही उन्होंने तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया। साधु बने और केवलज्ञान प्राप्त किया। यह निश्चित हो गया कि उनका मोक्ष नहीं रुकेगा। फिर उन्होंने प्रत्येक आत्मा के कल्याण के लिए उपदेश दिया, देश-विदेश में विचरे। वे जानते थे कि प्रत्येक आत्मा अपनी आत्मा के तुल्य है,

जो अपनी आत्मा का स्वभाव या धर्म है। इसलिए उन्होंने प्रत्येक आत्मा के कल्याण के लिए देशना दी और देश-विदेश में विचरण किया। यदि प्रभु एक स्थान में रहते तो संयम साधना अधिक सरल होती, लेकिन प्रभु इतने जागृत थे कि उनके पास चाहे हजारों-लाखों सो जाते, पर उन्हें झपकी भी नहीं आती थी। एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। वातावरण का प्रभाव भी

होता है। इसलिए यात्रा करते समय यदि आप ड्राईवर के पास की सीट पर बैठते हैं तो ड्राईवर टिल्ला लगाकर सचेत करता रहता है कि यदि मेरे पास सोये तो मुझे भी नींद आ जाएगी और ड्राईवर सो गया तो क्या हालत होगी? पर प्रभु ऐसे प्रभावों से अछूते थे। वे अपनी मुस्तैदी चाल से चल रहे थे। नींद तो आ ही नहीं सकती थी, दर्शनावरणीय कर्म ही नहीं रहे। अनंत शक्ति जागृत हो चुकी थी फिर नींद की क्या आवश्यकता थी? जब हममें भी वह शक्ति जागृत हो जाएगी तो हमें भी सोना नहीं पड़ेगा। अभी तो सोना पड़ता है, विश्राम लेना पड़ता है ताकि हम शक्ति अर्जित कर लें। नींद इसलिए नहीं है कि हम मखमली गद्दों पर मधुर स्वप्नों में खोए रहें। स्वप्न में डूबे रहे तो नींद पूरी नहीं होगी, थकान नहीं मिटेगी, शरीर भारी-भारी लगेगा। दिनभर शरीर को यदि काम में लेंगे तो फिर देखेंगे कि गद्दे-तकिए मिलें या नहीं, पर नींद ऐसी आएगी कि आप आश्चर्य करेंगे। साधु के पास कौन से गद्दे होते हैं, पर वे शांति से निंद्रा लेते हैं। यदि सोने की सही विधि को नहीं जाना तो गद्दे-तकिए क्या करेंगे? नींद को गादी-तकिए की आवश्यकता नहीं होती।

विहार में कई भाई साथ चल रहे थे। एक दिन जंगल में प्याऊ पर रुकने का प्रसंग आया, पर भाई गाँव में नहीं गए। कहने लगे- गाँव में नहीं छोड़ा तो अब जंगल में अकेले कैसे छोड़ें? वहाँ तो साधन थे नहीं, यहाँ तक कि बिछाने के लिए टॉवेल भी नहीं था, ऐसे ही सो गए। प्रात:काल हम तो समय पर उठे, प्रतिक्रमण आदि से निवृत्त हुए, पर वे अपनी मस्ती में सोये थे। अचानक नींद खुली या किसी ने जगाया। मैंने पूछा- नींद आई या नहीं? तो कहने लगे- ऐसी नींद आई जैसी घर पर कभी नहीं आई। नींद के लिए मखमली गद्दे जरूरी नहीं हैं। उन्हें तो हमने एक शौक बना रखा है। यदि अहिंसा का व्यापक रूप बन जाए और अपनी शक्ति को सही रूप में संयोजित रखें तो ही नींद की जरूरत ही नहीं रहे, विश्राम की जरूरत ही नहीं रहे। विभाव में शक्ति का ह्रास ज्यादा होता है। **जिसे क्रोध आता है उसे विश्राम की जरूरत महसूस होती है। उसे ज्यादा प्यास लगती है, क्योंकि जीवनी शक्ति से रस बनना मंद हो जाता है। परिणामस्वरूप उसका गला सूखने लगता है और दूसरी स्थितियाँ भी बिगड़ती है। विभाव के विस्तार में स्वभाव सिकुड़ता है। परिणामस्वरूप उसका दायरा सिमट जाता है।**

महाभारत का एक प्रसंग है- अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी कि जो भी मेरे गाण्डीव धनुष की निन्दा करेगा या उसका अपमान करेगा, मैं उसका वध कर दूँगा। एक बार युद्ध में धर्मराज युधिष्ठिर को कर्ण ने बाणों से बींध दिया। युधिष्ठिर का शरीर क्षत-विक्षत हो गया। उन्हें शिविर में लाया गया। अर्जुन साता पूछने पहुँचे। धर्मराज को क्रोध आ गया, कहने लगे क्या काम का तुम्हारा यह गाण्डीव, जिसके रहते कर्ण ने मेरे शरीर को क्षत-विक्षत कर दिया? युधिष्ठिर ने तो बात सहज भाव से कह दी, परन्तु अर्जुन की प्रतिज्ञा थी। अत: निज आवास पहुँचे, अपना गाण्डीव उठाया और चल पड़े युधिष्ठिर के वध हेतु। मार्ग में योगनिष्ठ त्रिखण्डाधिपति श्रीकृष्ण मिल गए। अर्जुन से प्रश्न किया- अरे, इस समय तो विराम के क्षण है, युद्ध बंद है, फिर धनुष उठाए किधर जा रहे हो? अर्जुन ने बात बता दी। कृष्ण ने सुना और कहने लगे- अर्जुन! तुमने तो धर्मराज का वध कर दिया। अर्जुन चौंक पड़े- मैं तो अभी गया ही नहीं हूँ फिर वध कैसे कर दिया? कृष्ण ने समाधान दिया- नीतिकारों ने कहा है कि अपने से बड़ों का अपमान या तिरस्कार करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा तो वह भी उनके वध के समान है। महावीर ने भी कहा है- मन से हिंसा, वचन से हिंसा और काया से हिंसा होती है। मन में हिंसा का संकल्प भी हिंसा है। अर्जुन तो आगे बढ़ चुके थे, वचन से भी कह दिया था। बड़ों का तिरस्कार भी वध के तुल्य है।

वध के कई तरीके हैं। इस संबंध में एक नीति कथा है। एक बार एक ही अपराध से संबंधित तीन अपराधी राजा के सामने लाए गए। राजा ने देखा और दण्ड दिया।

पहले की ओर दृष्टि उठाकर बस इतना कहा- अरे आप?

दूसरे को देश निकाला दिया और तीसरे को फाँसी का हुक्म सुना दिया। पहला व्यक्ति घर पहुँचा आत्महत्या कर ली। अरे, इतने व्यक्तियों के बीच अपमानित होकर जीना भारभूत है?

दूसरे ने देश सीमा से बाहर निकलकर यह सोचकर प्राण त्याग दिए कि इतनों ने मुझे देख लिया, अब क्या जीना। तीसरा निर्लज्ज था। फाँसी पर ले जा रहे थे तब भी हँस रहा था। लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि एक ही अपराध पर तीन दण्ड कैसे? राजा ने कहा- मैंने तीनों को एक समान दण्ड दिया है। तीनों को प्राणदण्ड दिया है और तीनों का जीवन समाप्त हो चुका है।

श्रीकृष्ण ने समझाया- अर्जुन! तुम मानसिक संकल्प से धर्मराज का वध कर चुके हो। अहिंसा का आदर्श तथा धर्म का यह स्वरूप संतों एवं पूज्य आचार्यों के कारण ही सुरक्षित रह पाया। युगदृष्टा जवाहराचार्य ने जब देखा कि अहिंसा को सीमित किया जा रहा है तब उन्होंने कहा- अहिंसा इतनी ही नहीं है। ग्राम में रहते हुए ग्राम के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करो। ग्रामधर्म, नगरधर्म, राष्ट्रधर्म के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करो। यदि नहीं कर सकते तो साधु बन जाओ। परिवार और समाज के दायित्व को वहाँ रहते हुए नहीं निभाया तो आपका जीवन भारभूत हो जाएगा। श्रुत और चारित्र धर्म में भी कपड़े पहनकर प्रवेश कर लिया, पर यदि अहिंसा नहीं आई तो 'स्व' स्वरूप फलित नहीं होगा।

प्रभु महावीर ने हिंसा के तीन रूप बताए हैं- मानसिक, वाचिक और कायिक। साधक के लिए तीन करण तीन योग का विधान है। वह हिंसा करे नहीं, करावे नहीं, अनुमोदन करे नहीं- मन से, वचन से और काया से। साधु के आगार नहीं हैं, उसके पूर्ण अहिंसा का लक्ष्य है। जब अहिंसा और संयम आ जाएँगे तब तप की परिधि से संयम सुरक्षित हो जाएगा।

हम नारे लगाते हैं- **'अहिंसा परमोधर्मः'**

अहिंसा परम धर्म कब बनेगा? यदि पालन ही नहीं किया तो नारे से क्या होगा? अहिंसा के लिए तप और संयम का भी जब वृत्तियों में समावेश होगा तब पूर्ण पुरुष का रूप बनेगा। आत्मा, शरीर और प्राण से ही जीवंत रूप निर्मित होगा और धर्म पल्लवित होगा। धर्म का रूप किस प्रकार उभरे उसके लिए अन्वेषण करें। **विचार करें कि जो कुछ निकल जाएगा वह पराया होगा और जो शेष बचेगा वह आपका होगा।** आत्मा जब भली-भाँति जागृत हो जाएगी और आप अहिंसा, संयम और तप के धर्म में प्रविष्ट होंगे तो प्रभु की श्रेणी में पहुँच जाएँगे। फिर तुझमें-मुझमें भेद नहीं रहेगा और अभेद, अमद अवस्था प्राप्त हो जाएगी। इस प्रकार अहिंसा के माध्यम से धर्म फलित होगा।

दिनांक 02.10.1996

साभार- रामउवाच-3

प्रमाद का कोई भी क्षण या झटका आयु की डोरी तोड़ सकता है, जीवन समाप्त हो सकता है। जब शरीर छूट जायेगा, आत्मा विदा हो जायेगी तब क्या कर पाओगे ? कैसा जीवन है ? कितना परिभ्रमण करने के बाद मनुष्य जीवन उपलब्ध हुआ है। इसलिए प्रमाद मत करो।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

हित वचन

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे...

''ऐसी वाणी बोलिए'' का धारावाहिक आपके समक्ष प्रतिमाह आ रहा है। प्रायः दैनिक व्यवहार के भाषाचार में हम कभी-कभी पीड़ाकारी वचनों का उपयोग कर लेते हैं। तीर्थंकर भगवन्तों ने इसका निषेध किया है। अतः हमें पीड़ाकारी सत्य के स्थान पर हित वचनों का उपयोग करना चाहिए। इस धारावाहिक के क्रम में 9 बिन्दु आप पूर्व में पढ़ चुके हैं, अब हित वचन पर कुछ ध्यातव्य बिन्दु इस प्रकार हैं-

ऐसे वचन जिनसे किसी का अहित न हो अथवा ऐसे वचन जो परपीड़ाकारी एवं हिंसाकारी (सावद्य) न हों उन वचनों को हित वचन कहा गया है।

✶ सत्य वचन का ही प्रयोग करना चाहिए ऐसा पूर्व में कहा गया था, परन्तु हर सत्य कहने लायक नहीं होता। जिस प्रकार ***'असत्य'*** का निषेध किया गया है उसी प्रकार तीर्थंकर भगवंतों द्वारा ***'पीड़ाकारी सत्य'*** का भी निषेध किया गया है। अतः हमें सत्यभाषी होने के साथ-साथ हितभाषी भी होना चाहिए।

✶ भासियव्वं हियं सच्चं।

सदा हितकारी सत्य वचन बोलना चाहिए। *(श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 19/27)*

आप Type X हैं या Type Y?

Type X

जो अपनी आत्मा के समान दूसरों की आत्मा को नहीं समझते, जो पक्षपाती होते हैं, जिन्हें दूसरों के नुकसान की कोई परवाह नहीं होती, 'दूसरों को पीड़ा पहुँचाने से भविष्य में मेरा क्या परिणाम होगा' जो इस पर विचार नहीं करते वे लोग बार-बार अहितकारी भाषा का प्रयोग करते हैं।

Type Y

जो सभी जीवों को एक समान समझते हैं, सबसे मैत्रीभाव रखते हैं, जो निष्पक्ष होते हैं, सबका भला चाहते हैं। 'जैसे मुझे सुख प्रिय है वैसे ही दूसरों को भी सुख प्रिय है', जो ऐसा विचार करते हैं वे सज्जन पुरुष अहितकारी भाषा के प्रयोग से स्वयं को बचाते हुए चलते हैं और कदाचित् भूल हो जाए तो छोटे से छोटे पाप की भी निंदा और गर्हा करते हैं।

सम्यक् देव-गुरु-धर्म से जुड़ने के पहले आप किस रूप में थे? **Type :**

सम्यक् देव-गुरु-धर्म से जुड़ने के बाद आप किस रूप में हैं? **Type :**

संसार में लोग अनेक प्रकार से अहितकारी वचनों का प्रयोग करते हैं। यहाँ उनके कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।

सत्यवादी की वाणी अमृतमयी (हितकारी) होनी चाहिए
विष वमन (अहित) करने वाली नहीं

1. एक-दूसरे को तोड़ने वाली सलाह देना
2. हिंसा का उपदेश देना अथवा अनुमोदन करना
3. कुव्यसनों व कुसंस्कारों का उपदेश देना
4. किसी का मर्म प्रकाशित करना
5. डराने वाली बातें कहना
6. दुराशीष देना अथवा चुभने वाले वचन कहना
7. किसी के अच्छे काम में विघ्न उत्पन्न करना
9. हँसी उड़ाना

अहितकारी वचन

आत्महितैषी श्रावक-श्राविकाओं को इनका वर्जन करके हितकारी वचनों का ही प्रयोग करना चाहिए अथवा मौन रहना चाहिए।

1 एक-दूसरे को तोड़ने वाली सलाह देना

✶ **'न य विग्गहियं कहं कहेज्जा'**

विग्रह बढ़ाने वाली बात नहीं करनी चाहिए *(श्री दशवैकालिक सूत्र 10/10)*

✶ हितकारी सलाह देने से शुभ कर्मों का बंध होता है।
अहितकारी सलाह देने से अशुभ कर्मों का बंध होता है।

✶ जो मंद कषायी होते हैं वे जोड़ने वाली बात कहते हैं और जो तीव्र कषायी होते हैं वे तोड़ने वाली बात कहते हैं।

गलत सलाह (Wrong Suggestion)	अच्छी (सही) सलाह (Right Suggestion)
(a) तुम उसका इतना ध्यान रखते हो पर उसे तो तुम्हारी परवाह ही नहीं है, तुम भी ध्यान मत दिया करो। **Note** - ऐसा सुनकर व्यक्ति स्वार्थी बन सकता है, उसकी संवेदनशीलता कम हो सकती है।	कोई अपना ध्यान रखे न रखे, पर अपने को तो दूसरों का ध्यान रखना चाहिए।
(b) हर काम पूछ-पूछकर मत किया करो, तुम्हारी मर्जी आए वो करो। आजकल माँ-बाप से कौन इतना पूछता है। **Note** - ऐसा सुनकर व्यक्ति स्वच्छंद बन सकता है, जिससे उसके परिवार में कलह	माता-पिता का सम्मान रखना अपना कर्त्तव्य है। पूछकर करने से उनका मन प्रसन्न रहता है।

हो सकती है।

(c) जहाँ काम करने वाले दो से अधिक लोग हों वहाँ किसी एक को कहना- सारा काम एक के भरोसे छोड़ देते हैं। सब चालाक हैं, तुम्हीं बुद्धू हो। एक्स्ट्रा काम मत किया करो, कोई बहाना बना लिया करो, तुम नहीं करोगे तो अपने आप अकल आ जाएगी।

Note - ऐसा सुनकर व्यक्ति के मन में अपने साथ वालों के प्रति द्वेष की भावना बनेगी फिर वो काम से बचने के लिए माया (कपट) करने लगेगा।

तुम्हें काम करने में तकलीफ होती हो तो प्रेम से एक-दूसरे को कह सकते हो और यदि सामर्थ्य हो तो उदारता रखनी चाहिए। थोड़ा बहुत एक्स्ट्रा कर भी देंगे तो क्या फर्क पड़ेगा? समुदाय में शांति बनी रहे ऐसा ही काम करना चाहिए।

(d) सास-ससुर से अलग हो जाओ, बंधन से मुक्ति मिल जाएगी, फिर तुम अपने और अपने बच्चों के ऊपर खर्च करना। माँ-बाप का ठेका तुम्हारा ही थोड़ी है, तुम्हारे भाई क्या करेंगे?

Note - परिवार टूटने पर माता-पिता कितना आर्त्तध्यान (दु:ख) करेंगे, उसका पाप सलाह देने वाले को लगेगा।

स्थान बदलने से कोई सुखी नहीं होता। साथ में समस्या है तो अकेले में भी समस्या है। हमें तो कोई भी निर्णय लेने से पहले ये सोच लेना चाहिए कि हमारी वजह से किसी की आँख में आँसू ना आए।

एक बेटे ने किसी की सलाह मानकर अपनी माँ को अलग करने का निर्णय ले लिया। वह एक दिन उसे अपने साथ ले गया और वृद्धाश्रम की सीढ़ियों पर बैठाकर बोला- 'मैं अभी आता हूँ, तू यहीं बैठी रहना' और छोड़कर चला गया। कहते हैं कि वह महिला मृत्यु के पूर्व तक लगभग उसी सीढ़ी पर बैठी रही। कुछ आवश्यक काम होता तो जाती और जल्दी से वहाँ आकर बैठ जाती। कोई कहता कि अन्दर बैठ जाओ तो कहती- 'नहीं-नहीं, मेरा बेटा आ गया तो मेरे को ढूंढ़ेगा।' इंतजार करते-करते उसने अपनी जिंदगी निकाल दी, पर अफसोस बेटा कभी आया ही नहीं।

गलत सलाह (Wrong Suggestion)

(e) तुम संघ की इतनी सेवा करते हो फिर भी संघ में तुम्हारी कोई Value नहीं है, तुम्हारी जगह मैं होता तो कब का छोड़ देता।

Note - ऐसा सुनकर व्यक्ति में धर्म भावना कम होगी, अहम् और द्वेष की भावना बढ़ेगी।

अच्छी (सही) सलाह (Right Suggestion)

हमें संघ की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए, कोई पूछे या नहीं पूछे उससे क्या मतलब? हम संघ के हैं, संघ हमारा है।

(f) किसी साधु-साध्वी से कहना- 'आपके गुरु आपको सिर्फ काम ही कराते हैं, पढ़ाई-लिखाई नहीं कराते, अन्य शिष्यों का तो वे पूरा ध्यान रखते हैं। आपको भी आवाज उठानी चाहिए, कुछ बोलना चाहिए।

Note - कुछ श्रावक साधु की मति भ्रष्ट करने का काम करते हैं और कुछ ढंक श्रावक के समान भ्रष्ट मति को स्थिर करने का काम करते हैं।

आप धन्य हैं गुरु सेवा में तल्लीन रहते हैं, आपकी सेवा प्रशंसनीय है, हमेशा ऐसे भाव रखने चाहिए।

Note - आपस में मन-मिलता हो (Understanding) हो और कोई सलाह लेना चाहता हो अथवा आवश्यक हो तो ही कुछ कहना उचित है, वरना मौन बेहतर है।

प्रेरक प्रसंग

एक बार की बात है। पूज्य आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. ने संवत्सरी आगे-पीछे कर ली तो श्री चौथमलजी म.सा. के मन में विचार आया कि 'आचार्यश्री ने परम्परा कैसे तोड़ी? मन में सोच लिया कि जब तक वे मिच्छा मि दुक्कडं नहीं देंगे, संबंध नहीं रखूंगा। वे विनयवान शिष्य थे, पर संघहित की दृष्टि से मन में एक बात आ गई। मामला जटिल हो गया। बड़ीसादड़ी के श्रावक डांगीजी ने देखा 'न तो उदयसागरजी म.सा. उन्हें बुला रहे हैं और न चौथमलजी म.सा. वहाँ जा रहे हैं। वे चौथमलजी म.सा. के पास गए और बोले आप आचार्यश्री के पास पहुँचे, वे मिच्छा मि दुक्कडं दे देंगे। सुनकर वे मिलने के लिए तैयार हो गए। विहार करके वे रतलाम के पास पहुँचे, माहौल देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। वे आचार्यश्री के पास जाकर खड़े हो गए, पर आचार्यश्री ने कुछ कहा ही नहीं। कुछ देर बाद श्री चौथमलजी म.सा. ने डांगीजी को इस आशय से देखा कि आचार्यश्री मिच्छा मि दुक्कडं क्यों नहीं दे रहे? डांगीजी उठे और चौथमलजी म.सा. की गर्दन पकड़ कर आचार्यश्री के चरणों में झुका दी और बोले- 'अब आप जानो और आपके गुरु जानें।' उनका मन पिघला, आँखों से पानी बहने लगा। बात हुई सारी शंका का समाधान हो गया। उस समय श्रावक ज्ञानवान, क्रियावान एवं अटूट श्रद्धावान थे, उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि मतभेद को मन-भेद में बदलने ही नहीं दिया।

क्रमशः

ज्ञान वृद्धि के 11 कारण

1. उद्यम करे तो ज्ञान बढ़े।
2. निद्रा तजे तो ज्ञान बढ़े।
3. ऊनोदरी (भूख से कम खाना) तप करे तो ज्ञान बढ़े।
4. अल्प बोले तो ज्ञान बढ़े।
5. पण्डित पुरुषों की संगति करे तो ज्ञान बढ़े।
6. विनय करे तो ज्ञान बढ़े।
7. माया-कपट रहित तप करे तो ज्ञान बढ़े।
8. संसार असार जाने तो ज्ञान बढ़े।
9. सीखे हुए ज्ञान को बारम्बार चितारे तो ज्ञान बढ़े।
10. ज्ञानवंत के पास ज्ञान सीखे तो ज्ञान बढ़े।
11. पाँचों इन्द्रियों के विषयों को त्यागे तो ज्ञान बढ़े।

श्रीमद् भगवतीसूत्र

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे... संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

आशीविष श. 8 उ. 2

पूर्वापर संबंध - प्रकारांतर से पुद्‌गल परिणाम को ही प्ररूपित करने के लिए आशीविष का वर्णन किया जा रहा है। इस प्रकार दोनों उद्देशकों का परस्पर संबंध है।

प्र. 2288 क्या कोई जीव भरतक्षेत्र जितना वैक्रिय शरीर बना सकता है?

उत्तर नहीं, क्योंकि भरतक्षेत्र का नाप प्रमाण-अंगुल से है, जबकि जीवों की अवगाहना उत्सेध-अंगुल से नापी जाती है। उत्सेध-अंगुल से प्रमाण-अंगुल 1000 गुणा बड़ा होता है अर्थात् प्रमाण-अंगुल का हजारवां भाग उत्सेध-अंगुल है। जैसे- उत्सेध-अंगुल से लाख योजन की अवगाहना हो तो प्रमाण-अंगुल से 100 योजन ही होता है। ($\frac{100000}{1000}$=100 योजन) जबकि भरतक्षेत्र प्रमाण-अंगुल से $526\frac{6}{19}$ योजन है। इसलिए जीव भरतक्षेत्र जितना वैक्रिय शरीर नहीं बना सकता है।

प्र. 2289 अंगुल कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर अंगुल तीन प्रकार के होते हैं। यथा- 1. प्रमाण-अंगुल 2. आत्म-अंगुल और 3. उत्सेध-अंगुल। अंगुल संबंधी वर्णन श्रीमद् अनुयोगद्वारसूत्र से है।

प्र. 2290 प्रमाण-अंगुल किसे कहते हैं?

उत्तर भरत चक्रवर्ती आदि और 7वीं पृथ्वी के नैरयिकों की अवगाहना 500 धनुष है। 500 धनुष की अवगाहना वाले प्राणियों के नाप को प्रमाण-अंगुल कहते हैं। इससे शाश्वत वस्तुओं का नाप किया जाता है। जैसे- द्वीप, समुद्र, मेरु आदि पर्वत, गंगादि शाश्वत नदियाँ, देवलोक, पृथ्वियाँ आदि।

प्र. 2291 आत्म-अंगुल किसे कहते हैं?

उत्तर स्वयं के अंगुल के नाप को आत्म-अंगुल कहते हैं। यह प्रत्येक आरे में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। आत्म-अंगुल से शिल्प संबंधी माप किया जाता है। जैसे- कुंआ, तालाब, घर, किलोमीटर आदि आत्म-अंगुल से है। भरत चक्रवर्ती का आत्म-अंगुल, प्रमाण-अंगुल के तुल्य था।

प्र. 2292 उत्सेध-अंगुल किसे कहते हैं?

उत्तर अवसर्पिणी काल के 5वें आरे के $10\frac{1}{2}$ हजार वर्ष बीतने पर जो मनुष्य होते हैं, उनके अंगुल के नाप को उत्सेध-अंगुल कहते हैं। शास्त्रों में चारों गति के जीवों की अवगाहना उत्सेध-अंगुल से कही गई है।

प्र. 2293 कर्म-आशीविष किसे कहते हैं?

उत्तर कर्म शब्द 'कृ' धातु से बना है। 'कृ' धातु का अर्थ है करना अर्थात् जो किया जाता है, वह कर्म है। जो कर्म द्वारा अर्थात् श्राप (अपकार) आदि द्वारा प्राणियों का नाश करते हैं, उनको कर्म-आशीविष कहते हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमश:

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

नमिपव्वज्जा

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बैंगानी, कोलकाता

विवेचन- अभी तक आपने पढ़ा कि मिथिला राज्य के राजा नमिकुमार को भयंकर पीड़ाकारी दाहज्वर उत्पन्न होने से वैद्य ने चन्दन का लेप शरीर पर लगाने के लिए कहा। रानियों द्वारा चन्दन घिसते समय हाथों के कंगनों के टकराने के निमित्त से राजा नमि को नया प्रकाश मिला। उन्होंने सोचा कि जहाँ अनेक हैं वहाँ संघर्ष, दु:ख, पीड़ा है; जहाँ एक है वहीं सच्ची सुख-शान्ति है। राज्य, परिवार आदि को छोड़कर दीक्षा ग्रहण करने की भावना से नमिराजा का दाहज्वर शान्त हो गया। उन्हें गाढ़ निद्रा आ गई और उन्होंने मेरुपर्वत पर चढ़ने का विशिष्ट स्वप्न देखा। जब जागे तो सोचने लगे- "मैंने ऐसा पर्वत पहले भी देखा है"। ऐसा विचार करते-करते नमिराजा का मोहनीय कर्म उपशान्त हुआ। जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ, जिससे उन्होंने अपने पूर्वभव के शुद्ध संयम पालन को देखा। अब उससे आगे...

विशिष्ट ज्ञानवान, सर्वोत्कृष्ट श्रुत चारित्र रूप धर्म से प्रतिबुद्ध होने के पश्चात् अपने पुत्र को राज्य सौंपकर दीक्षित होने के लिए नगर के बाहर चले गए। इसके सम्बन्ध में भगवान ने जो फरमाया है सो सुधर्मास्वामी ने इस प्रकार कहा-

सो देवलोगसरिसे, अंतेउर-वरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ॥3॥

भावार्थ- उत्तम अन्त:पुर में रहकर देवलोक जैसे उत्तम शब्द, गंध, रस, स्पर्श वाले विषयों को भोगकर प्रबुद्ध हुए नमिराजा ने उन सभी भोगों का परित्याग कर दिया।

भोए/भोगे- गाथा में 'भोगे' शब्द को पुन: ग्रहण किया गया है।

(i) इसका अभिप्राय है कि भोग दृष्टि विष वाले सर्प की तरह है। ऐसा समझकर निर्ग्रन्थ मुनि भोगों को सर्वथा छोड़ देता है।

(ii) भोग अनेक भोगों में आसक्ति का कारण होता है। जैसे- अनन्त राग-द्वेष को बढ़ाने वाला है, जिससे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि कर्मों का गाढ़ बंध होता है। अत: मुक्ति हेतु भोगों को छोड़ना ही योग्य है।

बुद्धो भोगे परिच्चयई अर्थात् नमिराजा ने जिन भोगों का परित्याग किया वह जीव-अजीव, पुण्य-पाप आदि (वास्तविक स्वरूप को जानकर) तत्त्वज्ञानपूर्वक सम्यक् बोधि से किया।

मिहिलं सपुर-जणवयं, बल-मोरोहं च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगंत-महिट्ठिओ भयवं॥4॥

भावार्थ- मिथिला नगरी को पुर एवं जनपद सहित सैनिक जनों को, अन्त:पुर (रानीवास) को तथा समस्त परिवार वर्ग को छोड़कर अभिनिष्क्रमण किया और एकान्त का आश्रय लिया।

एगंत-महिट्ठिओ- (i) एकान्त भाव अर्थात् 'मैं एक ही हूँ'। (ii) मैं किसी का नहीं, कोई मेरा नहीं है।

(iii) ऐसा कोई नहीं है कि जिसका मेरे साथ सम्बन्ध नहीं हुआ हो और मेरा उसके साथ सम्बन्ध नहीं हुआ हो।

(iv) जिस पदार्थ को मैं अपना देखता हूँ, वह मेरा नहीं दिखाई देता, इस भावना से मैं अकेला ही हूँ। ऐसी उत्तम एकान्त/एकत्व भावना नमिराजा ने भाई थी।

चिच्चा अभिनिक्खंतो- भागवती दीक्षा सहित घर से निकले।

भयवं- अनेक अर्थ हैं यथा- सौभाग्य, सूर्य, तप, पुण्य, धर्म, श्री, यश, ऐश्वर्य, लक्ष्मी, धैर्य आदि। यहाँ भयवं का आशय सम्यग्ज्ञानशील है।

नमिराजा के दीक्षा लेने पर पूरी मिथिला नगरी के सर्वस्थानों पर विलाप-कोलाहल होने लगा। उस समय पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र ने अपने अवधिज्ञान से जानकर विचार किया 'अहो! यह आश्चर्य है कि नमिराजा अपनी विशाल राजऋद्धि को छोड़कर अकस्मात् प्रव्रज्या क्यों ग्रहण कर रहे हैं? यह प्रव्रज्या वास्तविक है अथवा अन्यथा, इस बात की परीक्षा के लिए इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण कर नमिराजर्षि के पास जाकर अनेक प्रश्न किए। उन दोनों के बीच में 10 प्रश्नोत्तर रूप में जो संवाद हुआ उसे प्रदर्शित करने के लिए सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी से कहते हैं-

1. मिथिला में कोलाहल का कारण

किण्णु भो! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलग-संकुला।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य?।।7।।

भावार्थ- हे राजर्षि! मिथिला नगरी में, प्रासादों और घरों में कोलाहल (विलाप) से व्याप्त दारुण (हृदय विदारक) शब्द क्यों सुने जा रहे हैं?

पासाएसु गिहेसु- प्रासाद और गृह में अन्तर बताया गया है। सात या इससे अधिक मंजिल वाला मकान प्रासाद या महल कहलाता है, जबकि साधारण मकान को गृह-घर कहते हैं।

राजर्षि- राज्य अवस्था में भी ऋषि के समान क्रोध आदि कषायों को जीत लेने वाले को राजर्षि कहा जाता है।

इन्द्र के प्रश्न का हेतु और कारण-

उपर्युक्त सातवीं गाथा में देवेन्द्र नमिराजर्षि को उलाहना देकर परीक्षा लेने का प्रयास करते हैं कि- धर्मार्थी पुरुष को अपनी प्रजा एवं परिवार को ऐसे विलाप में छोड़कर जाना उचित नहीं है। इसलिए राजर्षि को अपनी प्रजा एवं परिवार को विलाप रहित करके प्रव्रज्या ग्रहण नहीं करनी चाहिए। तब नमिराजर्षि ने इसका उत्तर एक विशाल वृक्ष के रूपक से देते हुए कहा-

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहु-गुणे सया।।9।।

वाएण हीर-माणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो! खगा।।10।।

भावार्थ- मिथिला नगरी में एक उद्यान (चैत्य) था। वहाँ शीतल छाया वाला, मनोरम पत्तों, फूलों और फलों से युक्त एक वृक्ष था। बहुत से पक्षियों का सदैव उपकारी अर्थात् बहुगुणसम्पन्न था।

प्रचण्ड आँधी से मनोहर वृक्ष के गिर जाने पर दुःखित, व्याकुल, अशरण से ये पक्षी आक्रान्त करते हैं।

नमिराजर्षि के उत्तर का आशय यह है-

(i) राजा/जीव वृक्ष के समान हैं।

(ii) स्वजन, कुटुम्बी आदि पक्षी के समान हैं।

(iii) प्रासादों और घरों में कोलाहल पक्षियों के आक्रान्त होने के समान है।

अत: पक्षी अपने आश्रय एवं भोग के लिए विलाप कर रहे हैं उसी तरह स्वजन, परिजन आदि अपने लाभ के लिए पत्नी अपनी विषयभोग, गृहस्थ वैभव के सुख और धन के लिए, मित्र अपने कार्य रूप स्वार्थ के लिए अर्थात् सभी लाभ या उपकार के स्वार्थ के अभाव में रोते हैं, विलाप करते हैं। संयमी तो सभी सुखों को त्यागने वाला होता है। वस्तुत: अभिनिष्क्रमण (संयम) षट्काय के जीवों के जीवों की रक्षा के हेतु होता है। यह किसी के लिए पीड़ाजनक नहीं हो सकता है।

-क्रमश:

प्रकृति कहे सो जैन दर्शन

विषय	प्रकृति के अनुसार	जैन धर्मानुसार
कैसे खाना	खाने को मिलाकर नहीं खाना चाहिए। मिलाकर खाने से पाचन शक्ति कमजोर होती है, क्योंकि खाना पूरी तरह से चबाया नहीं जाता है। उदाहरण के लिए रोटी अलग खाईए, सब्जी अलग।	जैन धर्म कहता है- राग और द्वेष अगर इन्द्रियों के प्रति कम करना है तो खाना अलग-अलग खाईए।
कितना खाना	प्राकृतिक औषधि, विश्वकोष के अनुसार ज्यादा खाने से बीमारियाँ पैदा होती है।	जैन धर्म कहता है कम खाने से व्यक्ति की सोच निर्मल रहती है, वह हमेशा सतर्क रहता है और आलसी नहीं बनता।
तपस्या	तपस्या करने से शरीर का गरल साफ होता है, जिससे बीमारियाँ नहीं पैदा होती।	तपस्या से हम शरीर से और दिमाग से शक्तिशाली बनते हैं।
कुव्यसन	कोई भी कुव्यसन शरीर के लिए हानिकारक होता है। वह चाय हो शराब, अगर उसे आदत बना लेते हैं तो वह शरीर की तन्दुरुस्ती के रास्ते के लिए बाधक बन जाता है।	कुव्यसन हमें गलत मार्ग पर ले जाता है और जिन्दगी को सरलता और अनुशासन में नहीं रहने देता है।
सामाजिक फायदा	अगर व्यक्ति चाह से थोड़ा कम खाते हैं तो वो गरीबी को हटा पाएँगे। हर व्यक्ति अपनी आधी रोटी एक गरीब को खिला दे तो गरीबी हट जाएगी।	जैन धर्म उनोदरी तप का पक्षधर है, जिसका अर्थ है चाह से थोड़ा कम खाना। इससे हमारी संकल्प शक्ति बढ़ जाती है।

महामाता कौशल्या

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे...

जो कष्ट आने पर भी अपने धर्म को नहीं छोड़ती है, अपने पतिदेव के सिवाय अन्य पुरुषों को पिता अथवा भाई के समान समझती है, उसे सती कहते हैं। इन सोलह सतियों में ब्राह्मीजी, सुन्दरीजी, चन्दनबालाजी और राजीमतिजी बालब्रह्मचारिणी थी और बाकी सब विवाहिता थी। इन सब सतियों का जीवन चरित्र पढ़ने से मालूम होगा कि इन्होंने घोर कष्ट सहकर भी अपने धर्म की रक्षा की। इसलिए ये जग में पूजनीय बन गईं। सुबह उठकर जो इनका नाम लेते हैं, उनका मन पवित्र होता है और उनका चरित्र बल बढ़ता है।

संसार की महान् माताओं के नाम गिने जाएँ तो सबसे पहला नाम जो गिना जाएगा वह है- महामाता कौशल्या! उन्होंने अपने समस्त सत्व, शील और संयम को अपनी एकमात्र संतान 'राम' के भीतर उड़ेल दिया था। राम महानचरित्र महामाता कौशल्या के अन्तर हृदय का एक सजीव चित्र कहा जा सकता है।

कुशस्थल नगरी में एक महान् न्यायी और प्रजावत्सल राजा था सुकौशल। उसकी रानी का नाम था अमृतप्रभा। रानी ने ढलती उम्र में एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया जिसका नाम रखा गया 'अपराजिता'। अपराजिता रूप-लावण्य से जितनी प्यारी लगती थी, गुणों और सुन्दर स्वभाव के कारण उससे भी ज्यादा चहेती थी। अत्यन्त लाड़-प्यार के कारण सब लोग उसे 'कौशल्या' कहकर पुकारते थे।

अयोध्या में उन दिनों राजा दशरथ का राज्य था। दशरथ बड़े पराक्रमी और तेजस्वी थे। वे बड़े सत्यनिष्ठ और वचन के पक्के थे। दशरथ ने पास-पड़ोस के कई राज्यों को जीतकर अपने अधीन कर लिया था। राजा सुकौशल को भी अपने अधीन करने के लिए दशरथ ने प्रस्ताव भेजा। पर इतनी आसानी से कौन किसका सेवक बने? सुकौशल ने मजाक के साथ दशरथ का प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब दशरथ ने विशाल सेना के साथ कुशस्थल नगर पर चढ़ाई कर दी।

युद्ध का परिणाम बर्बादी होता है। राजा सुकौशल ने अपनी सेना को कटते देखा, जन-धन की बर्बादी होती देखी तो उसका दिल काँप गया, उसने दशरथ के साथ मैत्री प्रस्ताव किया और इस मित्रता के उपहार स्वरूप अपनी रूप-लावण्यवती कन्या 'कौशल्या' का विवाह दशरथ के साथ कर दिया।

विजयलक्ष्मी के साथ 'रूपलक्ष्मी' को पाकर दशरथ अत्यन्त प्रसन्न हुए, पर वह 'रूपलक्ष्मी' केवल रूपलक्ष्मी ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण अयोध्या की 'राजलक्ष्मी' बन गई। कौशल्या के आगमन के साथ ही अयोध्या की श्री, समृद्धि और सुख-शांति भी बढ़ने लगी। 'दशरथ' ने भी अनेक नगर विजय किए और तीन अन्य राजकन्याओं के साथ उनके विवाह हुए। अब दशरथ की चार रानियाँ हो गईं- कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी और सुप्रभा।

कहावत है- **"सौ पुरुष साथ में रह सकते हैं, पर दो स्त्रियाँ साथ नहीं रह सकती।"** स्त्री-स्वभाव में ईर्ष्या अधिक होती है। किन्तु रानी कौशल्या ने इस कहावत को भी असत्य कर दिखाया। वह तीनों अन्य रानियों को अपनी छोटी बहन के समान समझती। उनका बहुत ही सम्मान करती और परस्पर अत्यन्त प्रेम के साथ रहती। कुछ समय बाद कौशल्या ने एक महान् पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम रखा गया- रामचंद्र। उसके बाद तीनों रानियों के भी एक-एक पुत्र उत्पन्न हुए। सुमित्रा से लक्ष्मण, कैकेयी से भरत और सुप्रभा से शत्रुघ्न।

कौशल्या सबसे बड़ी थी, राजा दशरथ की प्रेमपात्र भी थी। उसका विश्वास था कि

नारी अच्छी पत्नी तभी बन सकती है, जब वह पति को अपने शील, स्नेह एवं सेवा के द्वारा प्रसन्न रखे। रूप का बनाव, शृंगार, प्रदर्शन, हास्य आदि उसे बिल्कुल पसंद नहीं थे। राजा दशरथ भी इसी कारण कौशल्या को सबसे अधिक प्यार करते, सम्मान देते। कौशल्या पति का प्यार और सम्मान पाकर भी इतराती नहीं। वह इतनी विनम्र और सरल थी कि जब अपनी छोटी बहन रानियों से बोलती तो सहज ही उसके हाथ जुड़ जाते और प्रेमपूर्ण मधुर शब्द बरसने लगते। राजा के द्वारा कोई भी उपहार मिलता तो कौशल्या सब रानियों को बराबर बाँट देती। वह कहती हम सब बहनें हैं और राजा का प्रेम, उपहार एवं सम्मान का सबको बराबर अधिकार है।

कौशल्या के ये ऊँचे संस्कार राम के हृदय में भी प्रतिबिम्बित हुए। राम ने सदा अपनी माता को प्रसन्न देखा, वे भी सदा हँसमुख रहते। माता को मीठा बोलते देखा, विनय एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार करते देखा। कभी किसी पर क्रोध और रोष करते नहीं देखा। पति की आज्ञा को परमेश्वर की आज्ञा की तरह शिरोधार्य करते देखा और अपनी सौत बहिनों के साथ हिल-मिलकर प्रेम से रहते देखा। दर्पण में जैसे आदमी का प्रतिबिम्ब उतर आता है, वैसे ही माता के ये सद्‌गुण राम के हृदय में उतर गए। राम सबसे बड़े राजकुमार थे। राज्य के अधिकारी थे। विद्या, बुद्धि, रूप और वीरता में किसी से कम नहीं थे, फिर भी इतने सरल थे कि वे अपने सेवकों और चाकरों के साथ भी प्रेमपूर्ण व्यवहार करते। चारों भाई तो दूध-पानी की तरह इतने हिलमिल रहते कि यह पता ही नहीं चलता कि ये एक ही माता के पुत्र हैं या भिन्न-भिन्न माताओं के।

चारों राजकुमार अपनी शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न कर योग्य बने तथा यौवन में धनुर्विद्या आदि में निपुणता प्राप्त की। विवाह योग्य देखकर राजा दशरथ ने उनके योग्य कन्याओं की खोज प्रारम्भ की। उन्हीं दिनों राजा जनक ने सीता का स्वयंवर रचा। सीता के अद्वितीय सौन्दर्य की कहानी हर देश में फैल गई थी। इसलिए बड़े-बड़े राजा और राजकुमार उस स्वयंवर में सीता को पाने की आशा लिए पहुँचे। किन्तु उस युग के हजारों राजाओं में राम ही एक ऐसे धनुर्धर निकले जिन्होंने वज्रावर्त धनुष हाथ में उठाकर प्रत्यंचा चढ़ा दी। 'सीता' ने 'राम' को वरमाला पहनाई। 'राम' पिता की तरह ही विजयसुन्दरी के साथ परमसुन्दरी सीता को लेकर अयोध्या में आए। अयोध्यावासियों का सीना हर्ष गौरव से फूल उठा।

राजा दशरथ एक दिन आदमकद शीशे के सामने खड़े थे। अपने आपको देखते-देखते सिर पर निकले एक सफेद बाल पर राजा की नजर गई। राजा चौंक उठे- "अरे! यह यमराज का दूत! बुढ़ापे की सूचना! और मृत्यु का संकेत! सिर पर सफेद केश आ चुके हैं और मैं अभी तक संसार के विषय-भोगों में फँसा हूँ? हमारे रघुवंशी राजाओं का तो आदर्श है- "यौवन में गृहस्थ! बुढ़ापे में वानप्रस्थ!" बुढ़ापा आने पर भी मैं कैसे राज्यभार से मुक्त नहीं हो रहा हूँ? मेरा ज्येष्ठ पुत्र राम तो सब बातों से योग्य है, बाप से बेटा सवाया है फिर चिन्ता किस बात की?" विचार करते-करते दशरथ का हृदय संसार से विरक्त हो संयम लेने के लिए उतावला हो उठा! वे झट महलों से राजसभा में आए। राजपुरोहित और महामंत्री से परामर्श किया और राम के राज्याभिषेक की घोषणा हो गई।

'राम' के राज्याभिषेक की घोषणा से अयोध्यावासियों का मन मयूर नाच उठा। घर-घर में खुशियाँ छा गई। राजमहल हर्षध्वनियों से गूँज उठा। तभी रानी कैकेयी के दिल में एक विष-काँटा फूट पड़ा। यदि राम राजा बनेगा, तो राजमाता का गौरव कौशल्या को ही मिलेगा। मेरा पुत्र भरत तो सीधी गाय है, फिर उसे कौन पूछेगा? और मैं भी राजमहल के किसी कोने में पड़ी रहूंगी। अपमान और अनादर से भरी जिन्दगी का भार ढोते-ढोते कमर टूट जाएगी। कैकेयी सिर खुजलाकर सोचने लगी कि "क्या करना चाहिए कि पासा पलट जाए और राम की जगह भरत का राज्याभिषेक हो सके तथा राजमाता का गौरव मुझे मिले।" सोचते-सोचते कैकेयी को याद आया- "एक युद्ध के अवसर पर जब रथ संचालन में उसने दशरथ की सहायता की थी तो राजा ने प्रसन्न होकर मुँह माँगे वर देने का वचन दिया था। वे वचन आज तक भण्डार

में पड़े हैं। अब अवसर आया है, वचन माँगकर भरत को राजसिंहासन पर बिठा दूँ।''

कैकेयी के मन पर स्वार्थ और ईर्ष्या का गहरा विष चढ़ चुका था। उसने अपने इस परम्परा विरुद्ध दुष्कृत्य का कोई परिणाम नहीं सोचा। रघुकुल के गौरव और अमनचैन को मिट्टी में मिलाने पर तुल गई। वह शीघ्र ही महाराज दशरथ के सामने पहुँची। राजा ने प्रसन्नता के वातावरण में रानी को चिन्तित और हड़बड़ाए हुए देखा तो एक बार सहम गए। यों राजसभा में आने का कारण पूछा। कैकेयी ने कहा- ''महाराज! आपने मुझे दो वचन दे रखे थे, याद हैं?''

दशरथ- ''हाँ! हाँ, कहो रानी! आज की खुशी में कुछ माँगना चाहती हो? माँगो! प्रसन्नतापूर्वक माँगो।''

कैकेयी- ''महाराज! मैं अपना प्रथम वर माँगती हूँ कि ''अयोध्या के राजसिंहासन पर आज 'राम' नहीं बल्कि 'भरत' का राजतिलक होना चाहिए'' और दूसरा वर यह कि ''राम को 14 वर्ष का वनवास दिया जाए।''

राजा दशरथ ने जैसे ही सुना, मूर्च्छित होकर गिर पड़े। राजसभा में हाहाकार मच गया। सर्वत्र शोक और उदासी छा गई। खुशियाँ हवा हो गई और सब के चेहरे शोक से व्याकुल हो उठे। रानी कौशल्या, राम, लक्ष्मण आदि सब दौड़कर आए। उपचार करने से दशरथ की मूर्च्छा दूर हटी। उदास, निस्तेज आँखों से दशरथ ने कैकेयी की ओर देखा और फिर सामने खड़े शोकाकुल राजपरिवार पर एक दृष्टि टिकी। दशरथ के मुँह से सहसा निकल पड़ा- **''अगर इस संसार में स्वार्थ और ईर्ष्या नामक दो दोष नहीं होते तो संसार के इन स्वर्गीय सुखों को देवता भी नष्ट नहीं कर सकते। इन्हीं दो दोषों के कारण संसार के सब सुख नष्ट हो गए, शांति की लता छिन्न-भिन्न हो गई, प्रेम और स्नेह की सरिताएँ सूख गईं। काश! मेरा परिवार इन दोषों से बचकर अपने कुलधर्म का पालन कर पाता। अपने कुलगौरव और पारिवारिक शांति को अक्षुण्ण रख पाता।''** कहते-कहते दशरथ की आँखें डबडबा गईं। गला रुंध गया और फिर मूर्च्छा खाकर लुढ़क पड़े।

तब तक कौशल्या, राम और लक्ष्मण को सब स्थिति का ज्ञान हो गया था। दशरथ पुनः सचेत हुए। राम ने आगे बढ़कर कहा- ''पिताजी! इतनी-सी तुच्छ बात के लिए आप इतने चिन्तित क्यों हो रहे हैं? क्या राम और भरत में कुछ फर्क है? आपके लिए दोनों दो आँखों के समान हैं, दायाँ-बायाँ हाथ हैं। फिर राम को राजतिलक मिले तो क्या और भरत को मिले तो क्या? माँ कैकेयी ने वर माँगा है और आपने वचन दे रखा है तो आप अपने वचन का पालन कीजिए। पुत्र का गौरव इसी में है कि पिता को वह ऋणमुक्त कर सके।''

दशरथ दीन आँखों से राम के गौरव-मुख को एकटक देख रहे थे। उनसे कुछ बोला नहीं गया। भरत गिडगिड़ाते हुए आगे आए। माँ को कोसते हुए बोले- ''माँ, तुमने तुच्छ स्वार्थ के कारण रघुकुल के गौरव को धूल-धूसरित कर डाला। मुझे यह राजसिंहासन नहीं चाहिए। भाई राम के होते हुए मैं राजसिंहासन पर बैठूँ यह बिल्कुल असंभव है।''

''अच्छा, तो लो मैं वनवास को चला जाता हूँ, तुम फिर तो राजसिंहासन स्वीकार करोगे?'' राम ने भरत की बात पकड़कर कहा- ''भरत बचपना मत करो! पिताजी का वचन पूरा करना हम पुत्रों का कर्तव्य है। इसके लिए तुम्हें यह सब स्वीकार करना ही होगा।''

अब तक मूकदर्शक-सी खड़ी कौशल्या ने राम को वनगमन की तैयारी करते देखा तो वह मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी। उसे होश आया, आँसुओं की धार उसकी आँखों से थम नहीं रही थी। राम ने कहा- ''माताजी! आप इतना दुःख क्यों कर रही हो? राम राजा बने, चाहे भरत। आपके लिए तो दोनों समान हैं, आपके दोनों ही पुत्र हैं, फिर आप इतनी चिन्तित और शोकाकुल क्यों हो रही हैं? भरत को समझाइए कि वह राज्य को स्वीकार कर पिताजी को ऋणमुक्त करे और मुझे वनवास जाने की आज्ञा दीजिए।''

कौशल्या ने आँसू बहाते हुए कहा- ''बेटा! इस बात का मुझे कोई दुःख नहीं कि तुम राज्य के अधिकारी नहीं बन सके। भरत भी मुझे उतना ही प्यारा है जितना राम! पर मुझे दुःख इस बात का है कि तुम वनवास जाने की बात कर रहे हो। वन के कष्टों की कल्पना तुम्हें नहीं है। वहाँ के भयंकर कष्ट तुम कैसे सहन कर सकोगे?''

''माताजी राम जितना सुकुमार है, उतना ही कठोर भी है, वह आपका पुत्र है। आपके संस्कार ही उसके जीवन की नींव हैं। उसके लिए वन, उपवन और राजभवन सब समान हैं। आप कुछ भी चिन्ता न करिए। बस, एक आशीर्वाद का हाथ मेरे मस्तक पर रख दीजिए, मैं चला वन को। भाई भरत का राजतिलक कीजिए।'' कहते-कहते राम ने माता के चरणों में सिर नवाया और वनवास की तैयारी करने चल पड़े। सब लोग दिग्भ्रांत से थे, अब क्या करें? क्या हो रहा है, कुछ समझ नहीं पा रहे थे। माता-पिता के अत्यन्त आग्रह और प्रेम के बावजूद राम वन की ओर चल पड़े। उनके पीछे सीता और लक्ष्मण भी चल दिए। सारी अयोध्या में कोहराम मच गया। राम, लक्ष्मण, सीता वनवास को जा रहे हैं। दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा का कलेजा मुँह को आ रहा था, फिर भी कौशल्या ने कलेजे पर पत्थर रखकर राम, सीता, लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया। उसने भरत को राम की तरह ही प्यार किया और सारे राज-परिवार के शोक को अपने साहस एवं धैर्य से दूर किया।

भरत का राजतिलक किया गया। राजा दशरथ ने अपना वचन पूरा किया, किन्तु इस घटना से उनके दिल को गहरी चोट पहुँची। रानी कैकेयी के स्वार्थपूर्ण व्यवहार से उन्हें संसार के समस्त भोगों के प्रति विरक्ति हो गई। इस विरक्ति का चरम रूप आया दशरथ ने संसार त्यागकर विरक्त होकर प्रव्रज्या ग्रहण की और आत्म-साधना में लग गए।

राम, लक्ष्मण, सीता वनवासी बनकर घूमते रहे, सिर्फ पिता के वचन की रक्षा के लिए। आखिर एक दिन लंकापति रावण ने सीता के रूप पर मुग्ध होकर उसका अपहरण किया। इस कारण राम-लक्ष्मण का रावण से भयंकर युद्ध हुआ। यह युद्ध सत्य और न्याय पर आधारित था। रावण केवल अपने बाहुबल के घमण्ड में चूर था। इस युद्ध में न्याय की विजय और अन्याय की करारी हार हुई। सीता को प्राप्त कर राम अयोध्या लौटे। अयोध्या के घर-घर में खुशियाँ छा गईं। राम का राजतिलक हुआ। राजमाता कौशल्या आज भी उतनी ही प्रसन्न थी, जितनी भरत के राजतिलक के अवसर पर। उसने परमसुख भी जीवन में देखा और पुत्र-वियोग, पति-वियोग का महान् दु:ख भी देखा। इस उथल-पुथल ने हर स्थिति में 'सम' रहकर सहने की क्षमता दी थी। एक महायोगिनी की तरह वह आज के उल्लासमय वातावरण में प्रसन्न होकर भी विचारमग्न थी। जीवन की उथल-पुथल का चित्र उसके सामने था। 'राम' जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम की माता का गौरव पाकर भी वह अपने को अपूर्ण अनुभव कर रही थी। अत: एक दिन उसने महाराज राम से अपने मन की बात कही- ''बेटा! आज मुझे सब सुख, सम्मान और गौरव प्राप्त है, फिर भी मेरा मन संसार के इन सारहीन सुखों में, इस तथ्यहीन गौरव में लग नहीं रहा है। तुम्हारे जैसे पुत्र को देखकर मैं अपने मातृत्व को कृतार्थ समझती हूँ, पर, अब इस मानव जीवन को कृतार्थ करने के लिए संयम और साधना के मार्ग पर बढ़ना चाहती हूँ। रघुकुल के राजाओं और रानियों का यही आदर्श रहा है- **''वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां''** अर्थात् जब बुढ़ापा आए तब संसार के मायाजाल से मुक्त हो, शान्त, सुखमय मुनि-जीवन स्वीकार करें।

महाराज राम के आग्रह पर भी राजमाता ने अपना विचार-प्रवाह नहीं बदला और एक दिन राजकीय समारोह के साथ 'राजमाता कौशल्या' ने भागवती दीक्षा स्वीकार की। हजारों-हजार नर-नारियों ने महामाता कौशल्या के आदर्श से प्रेरणा ली और वे समता एवं संयम की साधना के पथ पर अग्रगामी बने।

वंदन है, उस 'महामाता कौशल्या' को जिसने अपने उच्च संस्कारों और दिव्य मातृत्व से मानव संस्कृति को त्याग, तितिक्षा एवं संयम का संस्कार दिया।

-आधार ग्रंथ : त्रिषष्टिशालाका पुरुषचरित, पर्व-7
साभार- जैन कथामाला-1
-क्रमश:

नोट :- जैन रामायण के अनुसार राम-बलदेव, लक्ष्मण-वासुदेव एवं रावण-प्रतिवासुदेव थे। प्रतिवासुदेव का वध वासुदेव के द्वारा होता है।

समकित के 67 बोल

गतांक 15-16 अप्रैल 2022 से आगे...

-शकुन्तला लोढ़ा, ब्यावर

ज्ञानोपार्जन व पठन की दृष्टि से समकित के 67 बोल आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए जा रहे हैं। पिछले दो अंकों में आपने श्रद्धान् की विस्तृत विवेचना पढ़ी, आगे दूसरा बोल- लिंग तीन आप सभी के समक्ष उपस्थित है। निश्चय ही आप इसे पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे और आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होंगे।

दूसरा बोल- लिंग तीन

लिंग- व्यक्ति के जिन गुणों को देखकर ऐसा कहा जा सके कि उसके भीतर में सम्यक्त्व है, उसे लिंग कहते हैं। लिंग भीतर में रहे सम्यक्त्व का बोध कराने वाला चिन्ह है।

1. शक्कर से युक्त मीठा दूध पीने से भी अधिक राग सम्यग्दृष्टि को जिनवाणी सुनने से होता है।
2. जिस प्रकार निर्धन व्यक्ति को रत्नों की प्राप्ति में अत्यधिक प्रसन्नता होती है, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि को धर्म प्रवृत्ति में अधिक प्रसन्नता होती है।
3. जिनेश्वर भगवंतों का ध्यान, गुरु-भगवन्तों की समाधि, कर्त्तव्य परायणता सम्यग्दृष्टि की वैयावृत्य के रूप हैं।

1. शुश्रूषा :- धर्म श्रवण करने की अभिलाषा को शुश्रूषा कहते हैं। जैसे कोई तरुण, सुखी, प्रज्ञावान, संगीतशास्त्र का ज्ञाता, मधुर स्वर में गाए जाने वाले गीतों को रुचिपूर्वक सुनता है और सुनकर बड़ा हर्षित व आनन्दित होता है, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि जीव भी वीतराग वाणी को सुनने के लिए तत्पर रहता है और तल्लीनता के साथ सुनता है तथा सुनकर हर्षित व आनन्दित होता है।

अभी कोरोना काल में जब सभी धर्मस्थलों पर प्रवचन बंद थे, धार्मिक पाठशालाएँ बंद थी, लेकिन जिनकी धर्म श्रवण करने की, धार्मिक अध्ययन करने की रुचि थी, उन्होंने अपना समय निकालकर किसी भी माध्यम से जिनवाणी व सूत्र सिद्धान्तों को सुनने व समझने का प्रयास किया। अत: हम यह कह सकते हैं कि जिस व्यक्ति के भीतर सम्यक्त्व होता है वही व्यक्ति शास्त्रों को सुनने के लिए तत्पर रहता है और सुनकर अपने भीतर रहे हुए क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों को दूर करने का प्रयास भी करता है।

कथा- राजगृह नगर में सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक रहता था। वह धर्म का परम अनुरागी, आगमों को सुनने में रुचि रखने वाला तथा दस प्रकार के मिथ्यात्व को छोड़ने वाला था। जब भगवान महावीर के आने की सूचना उसने सुनी तो माता-पिता से कहने लगा- ''मुझे प्रभु के दर्शन-वंदन के लिए जाना है।'' माता-पिता ने कहा- ''हे पुत्र! अर्जुनमाली राजगृह नगर के बाहर प्रतिदिन छ: पुरुष और एक स्त्री को मारता हुआ घूम रहा है। इसलिए तुम बाहर मत जाओ। तुम्हारे शरीर पर कोई भी विपत्ति आ सकती है। तुम यहीं से भगवान को वन्दन-नमस्कार कर लो।'' 'सुदर्शन' माता-पिता के अनेक प्रकार के प्रश्नों का समीचीन उत्तर देते हैं तब माता-पिता अनिच्छापूर्वक कहते हैं- ''हे पुत्र! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो।'' सुदर्शन अपने सभी आवश्यक कार्य पूर्ण करके मारणांतिक उपसर्ग की भी परवाह न करते हुए भगवान के दर्शन व जिनवाणी श्रवण करने के लिए घर से निकल गए। मार्ग के मध्य में अर्जुनमाली के उपसर्ग को जानकर विधिवत् सागारी अनशन करके महासमाधिवंत् होकर कायोत्सर्ग में खड़े हो गए। अर्जुनमाली के शरीर में प्रविष्ट मुद्गरपाणि यक्ष एक हजार पल के बने हुए लोहे के मुद्गर को घुमाता हुआ सुदर्शन श्रमणोपासक के निकट आया किन्तु सुदर्शन

श्रमणोपासक के ऊपर अपना बल नहीं चला सका और अर्जुनमाली का शरीर छोड़कर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में चला गया। तब सुदर्शन ने अपने आपको उपसर्ग रहित जानकर अपनी प्रतिज्ञा पाली और फिर दोनों भगवान के पास आए, वन्दन-नमस्कार करके धर्मदेशना सुनी।

जिस व्यक्ति के भीतर सम्यक्त्व होता है, उस व्यक्ति की जिनवाणी सुनने की अभिलाषा इतनी तीव्र होती है कि वह मारणांतिक उपसर्गों से भी भयभीत नहीं होता है। जैसे- सुदर्शन श्रमणोपासक।

2. धर्म राग :- श्रेष्ठ धर्म क्रियाओं में परम प्रीति होना। तीन दिन का भूखा व्यक्ति हो और उसे यदि सुगंधित व मन के अनुकूल उत्तम भोजन मिल जाए तो जिस तीव्र प्रीति से खाने की उसकी रुचि होती है उससे भी अधिक रुचि सम्यग्दृष्टि की आगमोक्त क्रियाओं को करने में होती है। उसे ऐसा लगता है कि मैं अनादिकाल से धर्म रूपी भोजन का भूखा हूँ। मैंने अभी तक आत्म-तत्त्व नहीं पाया है। उसे प्रतिक्रमण, पौषध, सामायिक, संवर, तप, प्रत्याख्यान, साधर्मिक भक्ति आदि क्रियाओं में अनुराग होता है। अन्त:करण से प्रीति होती है उसे धर्म राग कहते हैं और वह यह भावना अवश्य रखता है कि वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन मैं आरंभ-परिग्रह का त्याग कर चारित्र धर्म को अंगीकार करूँगा।

भगवान फरमाते हैं- **''हजारों गायों के दान का लाभ भी संयम, संवर, तप, प्रत्याख्यान के सामने कुछ नहीं है।''**

जहाँ एक व्यक्ति अस्पताल में गरीब रोगियों को महंगी व वांछित दवाइयों का वितरण करके उनका तात्कालिक दु:ख दूर करता है, वहीं दूसरी तरफ एक व्यक्ति किसी व्यक्ति को आत्मकल्याण, त्याग, तप, संयम आदि की बातें बताकर अलौकिक पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है और वह व्यक्ति उस मार्ग पर सम्यक् तरीके से और दृढ़ आस्था के साथ चल पड़ता है तो उसके सभी दुर्गुण हमेशा के लिए समाप्त हो जाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि पहला व्यक्ति गलत है, लेकिन पहले व्यक्ति ने कुछ समय के लिए ही दु:ख से मुक्ति दिलाई, जबकि दूसरे व्यक्ति ने तो उसे भव-भव के अनन्त दु:खों से मुक्त करा दिया।

कथा- देवगुप्त नाम के ब्राह्मण के नंदा नाम की पत्नी थी। विषय-सुख भोगने से उनके पुत्र हुआ, जो पूर्वकृत अशुभ योगों के उदय से रोगी हुआ। नगर में संत-महात्मा पधारे तो ब्राह्मण अपने रोगी पुत्र को लेकर दर्शन-वन्दन के लिए गया। ब्राह्मण ने संत से रोग का उपचार पूछा तो संत ने कहा- इसने पिछले भव में प्राणियों का वध किया उसका फल इसे प्राप्त हुआ है। इसलिए अब धर्म आराधना करो, जिसके प्रभाव से रोग का नाश होगा। संत ने साधु धर्म व श्रावक धर्म का महत्त्व समझाया। पिता और पुत्र ने श्रावक धर्म अंगीकार किया और वन्दन करके घर आ गए। फिर वे दोनों चिंतामणि रत्न के समान व्रतों का आदर करते हुए पालन करने लगे। एक दिन देवलोक में इन्द्र दोनों के धर्म की प्रशंसा करने लगे कि कोई भी इनको धर्म के पथ से नहीं डिगा सकता है। ये दृढ़धर्मी हैं। ऐसा सुनकर दो देवता परीक्षा लेने निकल गए। दोनों वैद्य का रूप बनाकर ब्राह्मण के घर पहुँचे और कहने लगे कि हमारी औषधि लेने से तुम्हारा रोगी पुत्र स्वस्थ हो जाएगा। ब्राह्मण ने औषधि के लिए पूछा तो देवों ने कहा- प्रथम प्रहर में माँस, दूसरे प्रहर में मद्यपान और रात्रि में मिश्री-मिश्रित मक्खन और उसके ऊपर माँस खाना। रोगी पुत्र सोचने लगा कि मैं ऐसी सावद्य औषधि नहीं लूंगा। रोग तो एक ही भव में दु:ख देने वाला है, लेकिन व्रतों को भंग करने वाला तो जन्मों-जन्मों तक दु:ख पाता है और वेदना सहन करने से तो पूर्वकृत् कर्म क्षय होते हैं। मैं ऐसा कोई सावद्य कार्य नहीं करूँगा। देवों ने बहुत समझाया, लेकिन वह रोगी पुत्र डिगा नहीं। तब देव प्रकट हुए और वन्दन करके कहने लगे- धन्य है तुम्हारी धर्म के प्रति दृढ़ श्रद्धा। इन्द्र महाराज ने जैसी प्रशंसा की तुम बिल्कुल वैसे ही दृढ़धर्मी हो और देवों ने उसका रोग शान्त करके रत्नों

की वृष्टि की और अदृश्य हो गए।

इस प्रकार श्रेष्ठ धर्म क्रियाओं में परम प्रीति होना (जैसे रोगी ब्राह्मण पुत्र) 'धर्म राग' नामक दूसरा लिंग है।

3. वैयावृत्य (सेवा) :- जैसे विद्या सिद्ध करने का अभिलाषी व्यक्ति योग्य साधक का योग मिलने पर हर्ष का अनुभव करता है और एकाग्रचित्त होकर विद्या साधने में तल्लीन हो जाता है, वैसे ही सम्यग्दृष्टि जीव भी अपने परम उपकारी गुरु की यथोचित् सेवा-भक्ति करने में तत्पर और तल्लीन रहता है। ग्रन्थों में कहा जाता है कि भरतजी और बाहुबलीजी ने पूर्वजन्म में पाँच सौ मुनियों की सेवा की थी, जिसके फलस्वरूप बाहुबलीजी को शारीरिक बल की प्राप्ति हुई और भरतजी को ऋद्धि-सम्पदा का बल प्राप्त हुआ। सेवाभावी नंदीषेणमुनि ने भी सेवा के द्वारा देव के मन को जीत लिया था। वास्तव में ऐसी सेवा एक सम्यग्दृष्टि जीव ही कर सकता है। जो व्यक्ति गुरुजनों की विविध प्रकार की सेवा में यथाशक्ति प्रवृत्त होता है, गुरुजनों के समीप ज्ञान आदि सुनने की इच्छा से बैठता है, साधुओं को चौदह प्रकार की निर्दोष वस्तुओं को बहराकर उनके शुद्ध संयम के पालन में सहयोगी बनता है, वही व्यक्ति सम्यक्त्वी कहा जा सकता है।

कथा- बलभद्रमुनि रूप-लावण्य में अति सुन्दर थे। भिक्षा के लिए मार्ग से जा रहे थे। एक बहिन अपने बच्चों को स्नान करा रही थी। वह मुनि के रूप में आसक्त होकर एकटक मुनि को देखने लगी। पानी भरना था इसलिए बाल्टी पानी में उतार दी, लेकिन वास्तव में वह बाल्टी नहीं बच्चा था। बाल्टी के स्थान पर बच्चे के गले में रस्सी बाँधकर उसे कुएँ में उतार दिया। अत: बच्चा मर गया। यह दृश्य देखकर मुनि को संताप हुआ, तब से उन्होंने जंगल में रहने का संकल्प कर लिया। मुनि आहार-पानी का काम राहगीरों से चला लेते थे। जीवन चलता रहा, कभी आहार मिला कभी नहीं। एक दिन एक वृक्ष के नीचे मृग बैठा था। उसने जब जंगल में मुनि को देखा तो उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। मृग मार्ग में राहगीरों को देखता तो मुनि को निर्दोष आहार-पानी बहराने के लिए अनुरोध करता। जब राहगीर मुनि को बहराते तो मृग अति प्रसन्न होता। इस प्रकार उसने महान धर्मदलाली का लाभ प्राप्त किया और वहाँ से मरकर पाँचवें देवलोक में गया। इस प्रकार मृग इस सेवा के कारण उपकृत हुआ।

-क्रमश:

श्रमणोपासक का करते अभिनन्दन

-ऋषभकुमार मुरड़िया, कानोड़

ज्ञानप्रदायक ''श्रमणोपासक'' का
करते हम अभिनव अभिनन्दन।

उनसठ वर्ष की चिर स्वर्णिम यात्रा को
समर्पित रोली-कुमकुम-चन्दन।
साठवें वर्ष के शुभ पावन प्रवेश पर
करते हम शत्-शत् वन्दन।।

सुसंस्कारों की यह परिचायक
गल जाए सब कलुषित बन्धन।
श्रमणोपासक की अविरल धारा में
मिट जाए जीवन के क्रन्दन।।

ज्ञानप्रदायनी की विसरित रश्मि से
ज्ञान पूँज को नित करें नमन।
लोकप्रियता की अद्भुत मिसाल बन
चहुँओर नित विसरित स्पदंन।।

युगों-युगों तक फैलाएँ कीर्ति
धर्मध्वजा के सच्चे नन्दन।
विश्व जगत् में फैले सुरभि
चाहे पेरिस हो या लन्दन।।

शुभ्र भावनाओं से आप्लावित बन,
श्रमणोपासक का करते अभिनन्दन।

शाकाहार में शंका कैसी

-संकलित

वर्तमान की भयावह स्थिति को देखते हुए तथा जिस तरह विभिन्न दलीलों से मांसाहार को सही व पौष्टिक बताने की दिशा में कुछ बुद्धिहीन प्राणियों द्वारा विभिन्न तर्क दिए जा रहे हैं। प्रस्तुत लेख 'शाकाहार में शंका कैसी' में इन सभी तर्कों पर सच्चाई का पर्दा डालते हुए यह लेख आप सभी के समक्ष प्रस्तुत हैं।

शाकाहार के प्रचार-प्रसार के समय जो आशा की किरण देखने को मिल रही है, उससे यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि अहिंसा, पर्यावरण, जीवदया और उत्तम स्वास्थ्य में रुचि रखने वाले व्यक्तियों में शाकाहार के प्रति लगाव बढ़ रहा है। वह भी सिर्फ भारत में ही नहीं, विश्वभर में। समय-समय पर कुछ भ्रांतियों एवं शंकाओं के वशीभूत कुछ व्यक्ति मांसाहार से शाकाहार की ओर आने में हिचक जाते हैं। तब यह आवश्यक हो जाता है कि उनकी भ्रांतियों या शंकाओं या प्रश्नों का उचित निराकरण किया जाए। इसी भावना के साथ प्रस्तुत लेख में शाकाहार संबंधी आम शंकाओं के निराकरण हेतु हमने कुछ प्रश्न और उत्तर दिए हैं, जिनसे एक ओर शाकाहार संबंधी भ्रांतियाँ और शंकाएँ दूर होंगी तो दूसरी ओर शाकाहार से उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने की प्रेरणा उत्पन्न होगी।

शंका- यह सर्वविदित है कि भारत के प्रख्यात वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र वसु ने वैज्ञानिक प्रयासों द्वारा वृक्षों में जीव की सत्ता सर्वप्रथम सिद्ध की। संसार के आधुनिक विद्वान् अब पेड़ों में जीव मानने लगे हैं। ऐसे में क्या वनस्पति फल या तरकारी खाने में जीवहत्या नहीं होती?

समाधान- शास्त्रों के अनुसार जीव दो प्रकार के होते हैं- स्थावर तथा त्रस। स्थावर एकेन्द्रिय जीवों को कहते हैं। उनके शरीर में रक्त नहीं होता। अत: रक्त से बनने वाला मांस भी एकेन्द्रिय जीवों में नहीं होता। उनके शरीर में हड्डी भी नहीं होती।

त्रस जीव 2, 3, 4 अथवा 5 इन्द्रियधारी जीवों को कहते हैं। ऐसे त्रस जीवों के शरीर में रक्त बनता रहता है। अत: उनके शरीर में मांस और हड्डी भी होती है। त्रस जीवों के शरीर के अंश का नाम ही मांस है। फल या वनस्पति आदि एकेन्द्रिय जीव होते हैं। इनमें चेतना सूक्ष्मतम होती है। ये स्थावर जीव कहे जाते हैं। उनमें रक्त या मांस नहीं होता। इसलिए इनके सेवन से जीवहत्या नहीं होती और इन्हें मांसाहार में नहीं गिना जाता, बल्कि शाकाहार में ही गिना जाता है।

शंका- दूध शाकाहार है या मांसाहार? दूध भी तो गाय, बकरी या भैंस का ही अंश है। दूध पीना या अंडा खाना क्या समान नहीं है? इसलिए दूध को शाकाहार में गिना जाए या मांसाहार में? क्या दूध पीना मांसाहार के अंतर्गत नहीं आता? क्या दूध पीने से बछड़े के साथ अन्याय नहीं

होता?

समाधान- दूध और अंडे में जमीन और आसमान का अंतर है। दूध के निकलने से गाय, भैंस या बकरी के शरीर या जीवन को कोई हानि नहीं पहुँचती। इसके विपरीत, अंडे के सेवन से अंडे में विद्यमान जीव का सर्वनाश हो जाता है। यदि दूध देने वाली गाय या बकरी का दूध समय पर न निकले तो उसे तकलीफ होती है। दूध देने वाले जानवरों को अन्य उपयुक्त खाद्य सामग्री खिलाई जाती है और उन्हें पौष्टिक आहार देकर अतिरिक्त दूध उत्पादन किया जाता है, जिसका उपयोग उचित है। इसी प्रकार बछड़े का लालन-पालन भी अतिरिक्त दूध से प्राप्त आय से किया जाता है। दूध के बदले में गाय को चारा-पानी देते हैं। यह आदान-प्रदान मनुष्य जाति में तो परस्पर होता ही है। यह हिंसा के अंतर्गत नहीं आता। अंडा तो मुर्गी की संतान है, परन्तु दूध को गाय की संतान नहीं कहा जा सकता। इसलिए सभी धर्मशास्त्रों में दूध को पवित्र माना गया है। क्योंकि गाय के दूध को निकालने में किसी प्रकार का मांस या रक्त नहीं निकाला जाता।

शंका- क्या शाकाहारी अंडा भी होता है? आजकल कृत्रिम तरीकों से अनिषेचित अंडों का उत्पादन बड़े-बड़े मुर्गीखानों में हजारों-लाखों की तादाद में होने लगा है। इसलिए ऐसे अनिषेचित अंडे को, जिससे मुर्गी पैदा नहीं हो सकती, क्या शाकाहारी कहा जा सकता है? क्या अनिषेचित या निषेचित अंडा शाकाहारी है?

समाधान- अनिषेचित अंडे को 'शाकाहारी' कहना एक विसंगतिपूर्ण बात है। **भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप मुख्य निदेशक (पोषण) ने जुलाई 93 के अपने पत्र में यह स्पष्ट लिखा है कि अंडे को कभी भी शाकाहारी नहीं कहा जा सकता।** पोषक एवं आहार विज्ञान नामक पुस्तक में ऊषा टंडन ने स्पष्ट किया है कि अंडा पक्षी का अंश ही है। वह अर्द्ध-विकसित पक्षी ही है, जिसका निषेचन पक्षी अपने शरीर के बाहर करता है। जैसे स्तनधारी प्राणी गर्भ में भ्रूण पालते हैं और समय पूरा होने पर बच्चे को जन्म देते हैं, ऐसे ही अंडज प्राणी उस भ्रूण को अंडे के रूप में बाहर निकालकर उसका निषेचन करते हैं। अंडा निर्जीव नहीं है। अंडे में जीव है। अनिषेचित अंडे में भी धड़कन है। सन् 1971 में अमेरिका के मिशिगन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि संसार का कोई भी अंडा निर्जीव नहीं है, चाहे वह निषेचित (सेया गया) हो या अनिषेचित हो। जैसे- टेस्टट्यूब बेबी।

इसी प्रकार सन् 1988 में श्री फिलिप जे. स्केम्बल ने अपनी पुस्तक "पोल्ट्री सीड्स एण्ड न्यूट्रिशन" में यह स्पष्ट विवेचन किया है कि अनिषेचित अंडे भी जीवयुक्त होते हैं। ऐसे अंडे के ऊपर लगभग 15,000 सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जिनके द्वारा यह देखा जाता है कि अंडा भी साँस लेता है और धीरे-धीरे वह सड़ भी सकता है। इससे यह प्रमाणित हुआ कि अनिषेचित अंडे में भी जीव है। वस्तुत: अंडे की उत्पत्ति बच्चे के सृजन के लिए होती है, मनुष्य की खुराक के लिए नहीं। अंडे में हवा आने-जाने के लिए नैसर्गिक व्यवस्था है। डॉ. ताराचंद गंगवाल ने प्रयोग कर यह पाया है कि जब ऐसे अंडों को उत्तेजित किया गया तो उनमें भी साधारण अंडे जैसी ही संभावनाएँ पाई गई। इस प्रकार वैज्ञानिकों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अंडा चाहे निषेचित हो या अनिषेचित, उसमें जीव होता है और वह रक्त-मांस का पिण्ड है। किसी भी प्रकार से वह शाकाहार में शामिल नहीं किया जा सकता।

शंका- क्या शाकाहार में पर्याप्त प्रोटीन है? कई बार विद्यार्थियों और बीमार व्यक्तियों को प्रोटीन अधिक उपलब्ध कराने की दृष्टि से कुछ डॉक्टर उन्हें अंडा या मांस खाने की सलाह देते हैं, ताकि उन्हें पर्याप्त प्रोटीन मिले। क्या मांसाहार में अधिक प्रोटीन या कैलोरी या ऊर्जा है?

समाधान- प्रोटीन सम्बन्धी यह शंका निराधार है। भारत सरकार की स्वास्थ्य बुलेटिन संख्या 23 के द्वारा कुछ खाद्यान्नों में तुलनात्मक अध्ययन प्रोटीन, ऊर्जा और कैलोरी की दृष्टि से किया गया, जिसे आगे दिया जा रहा है। उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि

प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट व कैलोरी की दृष्टि से हमें शाकाहार से पर्याप्त कैलोरी, ऊर्जा व प्रोटीन प्राप्त होते हैं।

तुलनात्मक चार्ट (प्रति 100 ग्राम)

शाकाहारी खाद्य	प्रोटीन	कार्बोहाईड्रेट	कैलोरी
मूंग	24.0	56.6	334
सोयाबीन	42.2	20.9	432
मूंगफली	31.5	19.3	549
सेपरेटा दूध पाऊडर	38.3	51.0	357
मांसाहारी खाद्य			
अण्डा	13.3	0	173
मछली	22.6	0	91
बकरे का मांस	18.5	0	194

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट प्रतीत हो जाता है कि प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाईड्रेट की दृष्टि से शाकाहार उत्तम है। **अण्डे, मछली तथा मांस में कार्बोहाईड्रेट अर्थात् ऊर्जा जो शरीर के लिए अत्यन्त आवश्यक है, अत: मांसाहार में अधिक प्रोटीन, कैलोरी या ऊर्जा है, ऐसा कहना बिल्कुल गलत, मिथ्या, भ्रामक व तथ्यहीन है।**

शंका- रोगों की रोकथाम कैसे संभव है? क्या भयानक रोगों से लड़ने की क्षमता में मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार बेहतर है?

समाधान- शारीरिक पोषण के विश्वविख्यात अमेरिकन डॉ. क्लेपर का कथन है कि दिल और श्वास की बीमारियों का एक प्रमुख कारण मांसाहार है। इसी प्रकार हार्वर्ड विश्वविद्यालय वाशिंगटन (अमेरिका) के अनुसार मांसाहार में ऐसी चिकनाई है, जिससे खून में कॉलस्ट्रोल की मात्रा बहुत अधिक बढ़ जाती है, फलस्वरूप हृदय रोगों की आशंका 3 से 4 गुना अधिक हो जाती है। कई प्रकार के कैंसर आदि होने का भय शाकाहारियों की तुलना में मांसाहारियों में 3 से 4 गुना अधिक रहता है।

शंका- जानवरों की आबादी बढ़ने का भय- यदि सभी व्यक्ति शाकाहारी हो गए तो इतने पशु-पक्षियों का क्या होगा? फिर तो शायद मानव के लिए अन्न मिलना कठिन हो जाएगा।

समाधान- यह कथन पूर्ण रूप से निराधार है। सही बात तो यह है कि अधिक मांस उत्पादन के लिए जानवरों हेतु अधिक चरागाह बनाए जाते हैं। इससे मांसाहारियों के लिए पेड़ों की कटाई अधिक होती है। अकेले अमेरिका में 26 करोड़ एकड़ जंगल को मांसाहार के उत्पादन के लिए नष्ट किया गया है। इससे प्राकृतिक संसाधनों का विनाश बहुत तेजी से हो रहा है। यदि विश्व के सभी व्यक्ति शाकाहारी हो गए तो अन्न की कमी नहीं होगी और प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय रुकेगा। वैज्ञानिकों ने यह अनुमान लगाया है कि यदि अमेरिका में 10 प्रतिशत व्यक्ति मांसाहार कम कर लें तो सारे विश्व को पर्याप्त खाना मिल सकता है और कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा।

शंका- केक, पेस्ट्री, रशियन सलाद क्या शाकाहार हैं? अक्सर यह देखने में आता है कि शाकाहारी दावतों और पार्टियों में भी केक, पेस्ट्री और रशियन सलाद आदि यह कहकर रखे जाते हैं कि ये शाकाहार हैं। यह कहाँ तक सही है?

समाधान- 99 प्रतिशत पेस्ट्री और रशियन सलाद में अंडे का एक भाग मिश्रित होता है, जिससे यह शाकाहार के अन्तर्गत नहीं गिने जा सकते। होटलों, रेस्तराँ या अन्य स्थानों में केक, पेस्ट्री और रशियन सलाद परोसे जाएँ तो शाकाहारियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि ये शाकाहार नहीं हैं और उनका सेवन नहीं करना चाहिए। हाँ, कुछ दुकानें अंडे रहित केक या पेस्ट्री कहने पर तैयार कर सकती हैं, जिनको खाने में कोई दोष नहीं है।

शंका- क्या मांसाहार ही पौष्टिक है? कई बार मांसाहार के पक्ष में यह तर्क दिया जाता है कि पौष्टिकता की दृष्टि से और बच्चों में अधिक ताकत दिलाने की दृष्टि से उन्हें मांसाहार कराया जाए, क्या यह सही है?

समाधान- उपरोक्त तालिका से यह बात सिद्ध

हो जाती है कि प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट की दृष्टि से शाकाहार उत्तम है। इसके अतिरिक्त हम ऐसे शाकाहारी जानवरों के उदाहरण देखें तो पाएँगे कि ये विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं। जैसे- घोड़ा, गैंडा व हाथी।

शंका- कई बार यह देखा जाता है कि अपने आपको धार्मिक और आध्यात्मिक कहने वाले व्यक्ति भी मांसाहार से नहीं चूकते। क्या मांसाहार का आध्यात्मिकता और धर्म से कोई सम्बन्ध है?

समाधान- विश्व के सभी धर्मों में जीवहत्या रोकने और अहिंसा के पालन पर बल दिया गया है। निरपराध व्यक्तियों और जीवों की हत्या को पाप गिना गया है और अहिंसा को परमधर्म माना गया है। मांसाहार से शरीर व मन में कई तरह की विकृतियाँ पनपने लगती हैं जिससे व्यक्ति मानसिक व आत्मिक शांति के साथ आध्यात्मिकता छिन्न-भिन्न हो जाती है। कई ग्रन्थों व प्रेक्टिकल सर्वे से भी स्पष्ट होता है कि मांसाहार तामसिक आहार की श्रेणी में है, शाकाहार ही सात्विक आहार की श्रेणी में है। **''जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन।''** कई धर्मों में भक्ति आराधना करने वाले आध्यात्मिक व्यक्ति के आहार में प्याज, लहसुन का प्रयोग भी निषेध है तो मांसाहार की बात तो दूर-दूर तक संगत नहीं बैठती। मानव शान्ति तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह परम आवश्यक है कि हम अन्य जीवों में उसी आत्मा का बोध करें जो हमारे शरीर में विद्यमान है। इस आध्यात्मिक दृष्टि से भी मांसाहार अनुचित है और शाकाहार ही उचित है।

रोगोत्पत्ति के कारण

शरीर में किसी प्रकार के विकार का उत्पन्न होना 'रोग' कहलाता है। रोग की उत्पत्ति के नौ कारण स्थानांग सूत्र स्थान 9 में इस प्रकार लिखे हैं-

1. अत्यासन- अधिक बैठने से, बवासीर एवं अति अशन-अधिक खाने से अजीर्ण आदि रोग उत्पन्न होते हैं।
2. अहितासन- आरोग्य के प्रतिकूल आसन से बैठने से अथवा अपथ्यकारी आहार करने से।
3. अति निद्रा- आवश्यकता से अधिक नींद लेने से।
4. अति जागरण- अधिक जागते रहने से।
5. उच्चार निरोध- बड़ी नीति (मल) रोकने से।
6. प्रस्रवण निरोध- लघु नीति (मूत्र) रोकने से नेत्र सम्बन्धी रोग।
7. मार्ग गमन- अधिक चलने से या निरन्तर चलते रहने से।
8. भोजन प्रतिकूलता- अपनी प्रवृत्ति के प्रतिकूल भोजन से।
9. इन्द्रियार्थ विकोपन- इन्द्रियों के विकार से। विषयों में अति गृद्ध रहने से। तपेदिक राजयक्ष्मा (टी.बी) आदि रोग।

नोट- पहले के आठ कारण साध्य रोगों के हैं, किन्तु नौवां कारण असाध्य कोटि का माना जाता है, क्योंकि काम विकार में गृद्ध होने से शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

समता दर्शन : एक वैज्ञानिक व्याख्या

-संकलित

समता दर्शन का सिद्धांत जैन दर्शन में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सिद्धांत को आचार्य व साधु-साध्वियों ने विस्तार से कई माध्यमों द्वारा भिन्न-भिन्न रूपों में समझाने का प्रयास किया है। इस आधुनिक विज्ञान के युग में एक स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है कि ''क्या समता दर्शन का सिद्धांत विज्ञान की भाषा में भी समझा जा सकता है?'' इस प्रश्न का उत्तर जानना इलिए जरूरी है ताकि इसका संभावित रूप व लक्ष्य आज के तर्कप्रधान मानव को ज्यादा आसानी से समझाया जा सके। प्रस्तुत लेख में एक प्रयास इसी दिशा में किया गया है।

समता दर्शन का अर्थ होता है- आत्मा की सभी शक्तियों का पूर्ण रूप से विकास करना व उसका अलग-अलग स्तर पर प्रयोग व उपयोग करना ताकि व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर सुख व शांति का वातावरण रहे तथा हर व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण व इच्छा के अनुरूप अपना जीवन व्यतीत कर पूर्णता को प्राप्त करने का प्रयास करे।

आज जब व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर विषमताएँ बढ़ती जा रही हैं तथा समानताओं पर ध्यान कम होता जा रहा है तो समता दर्शन का महत्त्व और बढ़ जाता है।

समता दर्शन का अर्थ है- किसी भी चीज के एक पक्ष को ही सत्य न मानकर उसके दूसरे पक्षों को भी समझने का प्रयास करना ताकि उस वस्तु के सभी पहलुओं को बिना भेदभाव के समझा जा सकें।

उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति एक दृष्टि से पिता है तो दूसरी दृष्टि से बालक। किसी और दृष्टि से पति है तो अन्य दृष्टि से मामा भी है। इस तथ्य को समझाने के लिए चित्र-1 में हमने एक काल्पनिक व्यक्ति माना है, जिसके परिवार के सदस्यों के साथ उसके सम्बन्धों को कमानियों (Springs) से दर्शाया गया है। इस व्यक्ति 'ए' को हमने उसके परिवार के 8 सदस्यों के साथ 8 कमानियों से जोड़कर दिखाया है। अब उस व्यक्ति के अपने परिवार के सदस्यों से सम्बन्धों को कमानियों के तनावों के साथ जोड़ते हैं यानी अगर व्यक्ति का सम्बन्ध पत्नी के साथ ज्यादा है तथा माता से कम है तो कमानी 1 सिकुड़ने से छोटी हो जाएगी तथा कमानी 3 खिंचकर लम्बी हो जाएगी। इसी तरह अगर बच्चे के साथ सम्बन्ध अच्छा है तथा बच्ची के साथ कम है तो कमानी नम्बर 5 सिकुड़कर छोटी हो जाएगी तथा कमानी 6 खिंचकर लम्बी हो जाएगी। कहने का अर्थ है कि सभी से अगर सम्बन्ध सामान्य है तो आठों कमानियों की लम्बाई बराबर होगी। वही समभाव की स्थिति होगी।

अगर किसी कारणवश, स्वार्थवश या मोहवश या ईर्ष्यावश किसी सम्बन्ध में कमी या किसी सम्बन्ध में बढ़ोतरी हो जाए तो भी परिवार के स्थायित्व के लिए समभाव की स्थिति रखना ही बेहतर होगा।

उपर्युक्त उदाहरण में यह भी ध्यान रखना होगा कि ऐसी ही कमानियाँ (9-16) दूसरी भी हैं जो कि व्यक्ति 'ए' के पत्नी व व्यक्ति 'ए' के भाई के बीच तथा उसके अन्य सम्बन्धियों के आपस के सम्बन्धों को दर्शाती हैं। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि अगर एक भी कमानी में गड़बड़ हुई तो सभी कमानियों (सम्बन्धों) पर उसका प्रभाव पड़ेगा। कहना होगा कि ऐसी स्थिति बनाए रखना सरल नहीं है। यह अत्यन्त मुश्किल कार्य है। इसलिए महापुरुषों ने ऐसी स्थिति में रहने को सुई की नोक पर स्थिर रहने या तलवार की धार पर चलने के समान कठिन माना है। इस उदाहरण के हिसाब से हम कह सकते हैं कि समभाव वह स्थिति है जब सब कमानियों में तनाव जीरो हो।

अभी तक हमने एक स्थिर अवस्था की कल्पना की है, पर मानव-मस्तिष्क में विचारों के समुद्र लहराते रहते हैं जिनमें राग, द्वेष, मोह, माया, धन, काम, शक्ति, सुख-दुःख इत्यादि कई विचारों की तरंगें न केवल व्यक्ति 'ए' के मस्तिष्क में आती हैं अपितु 8 सम्बन्धियों के मस्तिष्कों में भी आती रहती हैं। इतने सारे विचारों की तरंगें जो इतने सारे व्यक्तियों के मस्तिष्कों में न केवल एक क्षण के लिए हैं अपितु हर क्षण आती रहती हैं, जो कभी-कभी समान तो कभी विरोधी भी हो सकती हैं। ऐसी चंचल अवस्था में यह मानना बेकार होगा कि सम्बन्ध एकदम सामान्य रहेंगे यानी कमानियों में तनाव एकदम जीरो होगा। वास्तविक समभाव ऐसी स्थिति होगी जिसमें सभी कमानियों का कुल तनाव कम से कम हो तथा आदर्श स्थिति में जीरो हो। यह इस बात पर भी निर्भर करेगा कि समभाव की स्थिति न केवल एक व्यक्ति बनाए रखने का प्रयास करे बल्कि सभी 8 व्यक्ति भी इसे बनाए रखने का संकल्प करें। जितने ज्यादा व्यक्ति परिवार में समभाव बनाए रखने का प्रयास करेंगे उतनी ही आदर्श स्थिति प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। (इस चित्र में कमानी 9-16 तक एक चक्र रूप में दिखाई गई है, क्योंकि यह व्यक्ति 'ए' से सीधी जुड़ी हुई नहीं है।)

उपर्युक्त उदाहरण में व्यक्ति 'ए' के सम्बन्ध सिर्फ परिवार के अन्य सदस्यों के साथ ही नहीं होते हैं, उसे घर से बाहर निकलकर व्यवसाय भी करना पड़ता है आजीविका के लिए कई कार्य भी करने पड़ते हैं। इन स्थितियों में उसे कई अलग-अलग विचारों के लोगों में उठना-बैठना पड़ता है। फिर हम उसी चित्र एक की सहायता से पूरी स्थिति समझा सकते हैं। यदि अब घर के सदस्यों के बजाय कमानियाँ व्यक्ति 'ए' के मालिक से, दूसरे कार्यकर्ताओं से, बैंक ऑफिसरों से, अन्य व्यवसायियों से, माल देने वालों से, ग्राहकों से इत्यादि-इत्यादि के साथ सम्बन्धों को प्रदर्शित करती हैं तो कमानियों की संख्या भी अब काफी ज्यादा हो जाएगी। समभाव की स्थिति बनाए रखना और ज्यादा कठिन हो जाएगा, क्योंकि अब उसे ज्यादा सम्बन्धों तथा ज्यादा विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

हम भी इसलिए एक दूसरे मॉडल की कल्पना करते हैं ताकि स्थिति को और स्पष्ट किया जा सके। हम अब चित्र 2 के अनुसार एक साधारण शंकु (Cone) की कल्पना करते हैं, जिसकी नीचे की सतह गोल है। हम व्यक्ति 'ए' को वास्तव में अब सुई की नोक की तरह शंकु की नोक पर स्थिर रखने की कल्पना करते हैं तथा उसे चार पतली कमानियों द्वारा परिवार के चार सदस्यों से जुड़ा हुआ मानते हैं। ये कमानियाँ 1, 2, 3, 4 चित्र में दिखाई गई हैं। बाकी कमानियाँ (5, 6, 7,8) शंकु के पीछे वाले हिस्से में हैं इसलिए दिखती नहीं हैं। इस उदाहरण में सरलता का ध्यान रखते हुए कमानी 9-16 को जान-बूझकर नहीं दिखाया गया है। इस उदाहरण से समता दर्शन का सिद्धांत ज्यादा अच्छी तरह से समझाया जा सकता है।

जिस तरह शंकु की नोक (कोन के सबसे ऊपर के बिन्दु) पर स्थिरता से खड़ा रहना अत्यधिक कठिन है उसी तरह समभाव की स्थिति में हर समय रहना बहुत ही मुश्किल है। इसलिए इसमें एक सरलीकरण किया जा सकता है कि व्यक्ति जहाँ तक हो सके इस आदर्श अवस्था में रहने का प्रयास करे। कोई कमानी उसे ज्यादा खींचे या वह स्वयं उस तरफ किसी कारणवश अधिक खिंच जाए तो भी पुन: वापस उस बिन्दु की तरफ आने की कामना रखे। व्यावहारिक दृष्टि से होता यह है कि वह अपने संस्कार व पूर्व कर्मबन्धन के कारण तथा बाहरी दुनिया के सम्बन्धों के कारण हमेशा इस समभाव की स्थिति से अलग-अलग दिशाओं (कमानियों) की तरफ खिंचा चला जाता है। इसीलिए समभाव की स्थिति में रहना अत्यधिक कठिन हो जाता है, लेकिन अपने आदर्शों को उसे भूलना नहीं चाहिए।

यहाँ यह बताना अत्यधिक जरूरी है कि यह सभी एक मानसिक स्थिति से जुड़ा हुआ है अर्थात् यह मानव-मन की एक ऐसी स्थिति है जो सभी सम्बन्धों को जानते हुए एक सन्तुलन की अवस्था हर क्षण बनाए रखती है। वास्तव में यह मानव-मस्तिष्क के सन्तुलन की कहानी है। इसलिए और ज्यादा अच्छी तरह समझने के लिए कुछ और गहराई में जाने की जरूरत है। इसके लिए हमें विद्युत इन्जीनियरिंग, न्यूरोबायोलॉजी व साईबरनेटिक्स इत्यादि विषयों को समझना पड़ेगा। साथ-साथ में आप्टीमल कन्ट्रोल व सूचना तकनीकी (Optimal control & Information Technology) को भी समझना होगा ताकि हम हमारे पूर्वज व महान् आचार्यों व साधु-साध्वियों द्वारा बनाए गए इन सिद्धांतों को आज के परिप्रेक्ष्य में अच्छी तरह से समझ सकें।

विद्युत इन्जीनियरिंग में किसी भी नेटवर्क (Network) में कितनी विद्युत बहेगी, यह उसमें उपस्थित विद्युत इकाइयों पर निर्भर करता है यानी उसमें कितने प्रतिरोध (Resistances), प्रेरक कुंडली (Inductor), धारिता (Capacity) इत्यादि मौजूद हैं या कितने ट्रांजिस्टर लगे हुए हैं। इन सबमें से एक या एक से ज्यादा की कीमत (माप) को बदलने से उसमें बहने वाली विद्युत धारा का नाम बदला जा सकता है। चित्र 3 में एक ऐसा काल्पनिक नेटवर्क दिया गया है। जो बड़ी-बड़ी मशीनों को चलाने व कन्ट्रोल करने में काम आता है। चाहे वह टेलीविजन हो या कम्प्यूटर, पंखा हो या रेडियो।

एक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिसंभरण (Feedback) का है, जिसे चित्र 4 के माध्यम से समझाया गया है। इसमें एक रेगुलेटेड मशीन (नियंत्रण करने वाली मशीन) दिखाई गई है। इसमें एक इनपुट तथा दूसरा आउटपुट दिखाया गया है। दोनों को एक अन्य इकाई द्वारा जोड़ा गया है, जो आउटपुट के हिसाब से इनपुट को बदलती है। अगर आउटपुट एक नियंत्रित माप से ज्यादा हो जाता है तो नियंत्रक इनपुट को एक निश्चित अनुपात में कम कर देता है, जिससे आउटपुट पुन: पहले वाली स्थिति में आ जाता है। कन्ट्रोल इन्जिनियरिंग इसी सिद्धांत पर आधारित है। ऐसे उदाहरण हमारे शरीर के क्रियाकलापों से भी दिए जा सकते हैं। जैसे- अगर कोई तिनका चुभता है तो हमारे शरीर का अंग तुरन्त तिनके से दूर हो जाता है।

आटिक्ट में मस्तिष्क की संरचना पर आते हैं तो पाते हैं कि उसमें भी ऐसे ही नेटवर्क बने हुए हैं, जिनकी दो प्रमुख इकाईयाँ हैं-न्यूरोन्स (Newrons) तथा साइनेप्सेस (Synapses)। एक साधारण-सा उदाहरण चित्र में दिया गया है। इसमें विद्युत रासायनिक स्पंदन बहते रहते हैं तथा कुछ विशेष स्थितियों में इन स्पंदनों को कन्ट्रोल किया जा सकता है। इन स्पंदनों द्वारा सूचनाएँ भी इधर-उधर पहुँचाई जाती हैं तथा निर्देश भी दिए जाते हैं कि फलाँ-फलाँ कार्य करना है। जैसे- सर्दी में ठण्ड लगती है तो हमारी चमड़ी पर लगे रिसेप्टर्स मस्तिष्क को सर्दी की सूचना देते हैं तो मस्तिष्क सूचना का विश्लेषण कर पुन: निर्देश देता है

कि व्यक्ति सर्दी से बचने का उपाय करे।

इन सब उदाहरणों से स्पष्ट है कि कन्ट्रोल की क्रिया पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है तथा समभाव की स्थिति में रहना एक नहीं बल्कि अनेक कन्ट्रोल एक साथ करने से उत्पन्न होने वाली स्थिति है। किस स्थिति में क्या कन्ट्रोल करना है वह समय व स्थान पर निर्भर करता है। जैन दर्शन इन वैज्ञानिक उदाहरणों से काफी आगे जाकर मानसिक नियंत्रण की बात करता है। क्योंकि उसके नियंत्रण से ही पारिवारिक, व्यक्तिगत, आर्थिक व सामाजिक नियंत्रण संभव है। **समभाव रखने का अर्थ है- विरोधी अवस्थाओं में नियंत्रण बनाए रखना तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में सबसे बढ़िया कार्य करके दिखाना।** समभाव एक स्थिर (Static) स्थिति की बात न करके एक गतिशील या सक्रिय (Dynamic) क्रिया की बात करता है वरना समभाव रखना इतना कठिन व जटिल कार्य न होता। यही ऑप्टिमल कन्ट्रोल (Optimal Control) का सिद्धांत है यानी काफी ज्यादा विरोधी स्थितियों में सबसे अच्छा कार्य (विरोधी परिस्थितियों के बावजूद) कन्ट्रोल स्थिति में रहकर करना।

यह समभाव का एक भाग है। दूसरा हिस्सा यह है कि विरोधों, विचारों व स्थितियों में भी समानता ढूँढ़ निकालना व अपने कार्यकलापों से समानताओं पर ज्यादा ध्यान देना ताकि विरोध कम हो और समानताएँ बढ़ें। -क्रमशः

चित्र-1- कमानी मॉडल (Spring Model) जो समता दर्शन का एक रूप उजागर कर सकता है।

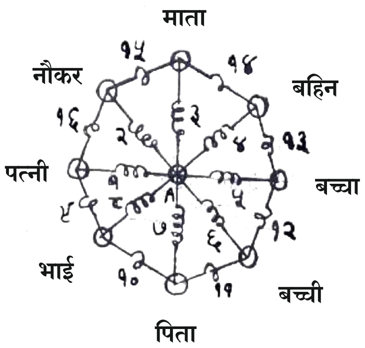

चित्र 1

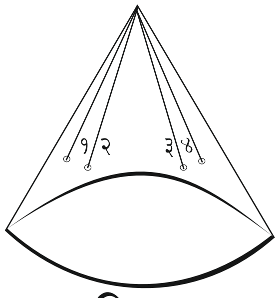

चित्र 2

चित्र-2-
समता दर्शन को समझाने के लिए शंकु का उदाहरण।

चित्र-3- एक काल्पनिक विद्युत नेटवर्क।

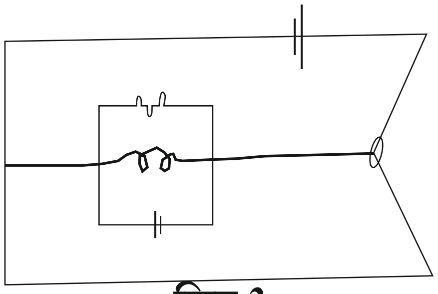

चित्र 3

चित्र-4- प्रतिसंभरण (Feedback) का उदाहरण।

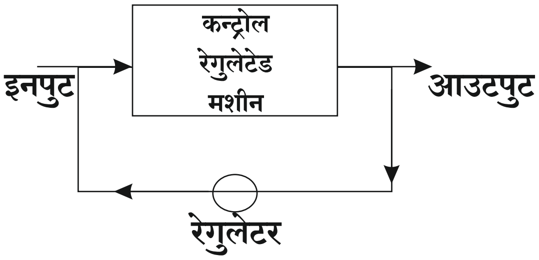

चित्र 4

चित्र-5- मस्तिष्क में न्यूरोन्स व साइनेप्सेस का एक जाल।

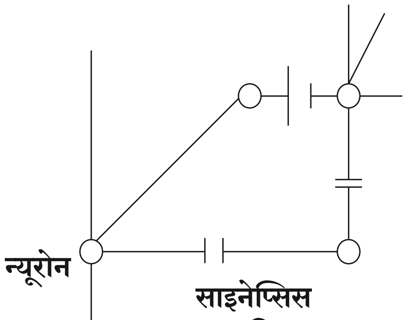

चित्र 5

श्रमणोपासक 10 जून, 1992

वर्तमान शिक्षा प्रणाली
विश्व गुरुत्व से वर्तमान तक का सफर : एक समीक्षा

-पदमचंद गांधी, जयपुर

शिक्षा एवं संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है।
भूखण्ड राष्ट्र का देह है,
साहित्य उसकी दृष्टि है,
भाषा उसकी वाणी है,
सभ्यता उसका शृंगार है,
कलाएँ उसका सौन्दर्य हैं,
विज्ञान उसका वैश्विक शोध है,
अर्थ उसका भण्डार है,
संस्कृति उसका प्राण है।

संस्कृति के स्वर्णिम सत्र ने ही भारत को जगद्गुरु के सिंहासन पर बिठाया है। इसी के कारण भारतीय शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति विश्व की सर्वोच्च संस्कृति रही है तथा विश्व गुरु का स्थान भी इसी न्यायोचित शिक्षा पद्धति के द्वारा ही प्राप्त हुआ है। संस्कृति मानव जीवन को संस्कारित करने की वह दिव्य परम्परा है जिसमें मानव मन को परिष्कृत कर उसके अन्दर छिपे हुए दिव्य गुणों को उसके मूल-वास्तविक परिपूर्ण स्वरूप को प्रगाढ़ करने की चेष्टा की जाती है। इस क्रम में नर से नरत्व, नरत्व से देवत्व तथा देवत्व से ब्रह्मत्व तथा उसमें जो मूल परिपूर्ण स्वरूप है उस तक उठने का प्रयास किया जाता है। प्रभु महावीर ने 'आचारांग' में कहा है- मनुष्य के भीतर अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त बलवीर्य, अनन्त क्षमता, अनन्त तप भरा हुआ है। उसके भीतर अनन्त आनन्द की क्षमता है लेकिन वह इसे पहचान नहीं पाता। इसके प्रकटीकरण के लिए साधना स्वाध्याय, शिक्षा, संस्कार, तप एवं श्रेष्ठ गुरु की आवश्यकता होती है। इन्हीं से वह आत्मा से परमात्मा बन सकता है तथा परमत्व एवं परम आनन्द क ा प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन सकता है।

शिक्षा की पौराणिकता- भारतीय शिक्षा, दीक्षा एवं चिकित्सा का महत्त्व सदियों से रहा है। भारतीय शिक्षा को **'गुरुकुल'** एवं ऋषि परम्परा तथा गुरु शिष्य परम्परा के नाम से जानते हैं। ये ऐसी सकारात्मक व्यवस्थाएँ थी जिनमें प्रवेश लेने के बाद सम्पूर्ण जीवन की सच्चाई को समझते हुए गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम का पूर्ण अध्ययन करते हुए जीवन के परम तत्त्व को आचरित एवं ग्रहण करके ही गुरुकुल के आश्रम में परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जीवन के वास्तविक प्लेटफॉर्म पर शिष्य कदम रखता था। गुरु एवं शिष्य परम्परा अद्भुत थी। ऐसी परम्परा जहाँ नैतिकता एवं नरत्व, देवत्व तथा ब्रह्मत्व को प्राप्त करने का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा की ऐसी पद्धति जहाँ पर चौसठ विद्याओं, बहत्तर कलाओं तथा सोलह

संस्कारों का व्यावहारिक अध्ययन करवाकर निपुण किया जाता था। विद्यार्थियों को सिखाया जाता था कि मनुष्य अनेक भवों को पार करता हुआ शुभ-अशुभ कर्मों के साथ आता है और अनेक नीच प्रवृत्तियों में बँधा रहता है। यथा- आहार, निद्रा, भय, मैथुन, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ आदि ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं जो मनुष्य और पशु में समान हैं। अतः शिक्षा, संस्कार, तप, सत्संग, साधना के द्वारा मनुष्य को पाप व पशु प्रवृत्तियों से ऊपर उठाकर उसे मनुष्यत्व में, मनुष्यत्व से देवत्व में तथा देवत्व से ब्रह्मत्व यानी विकास के सर्वोच्च शिखर तक, पूर्णता तक, पहुँचाने का प्रयास किया जाता था। विद्यार्थियों को स्पष्ट सिखाया जाता था कि मनुष्य अनन्त पथ का यात्री है। इसी का परिणाम है कि महावीर और बुद्ध मोक्षमार्गी बने, राम मर्यादा पुरुषोत्तम, कृष्ण कर्मयोगी बने। नचिकेता ने साक्षात् यमराज से अमरता का रहस्य पूछा। पाँच वर्ष का बालक ध्रुव तप के लिए वन में चला गया। छोटा सा बालक प्रहलाद हिरण्यकश्यप के सामने निडर हो गया। नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) भर सर्दी में गुरु (रामकृष्ण परमहंस) की खोज में तैर कर नदी पार कर गया तथा दयानन्द सरस्वती सत्य की खोज में निकल गए। आठ वर्ष के बालक शंकर ने संन्यास ले लिया।

प्राचीनकाल में गुरुकुलों में, मंदिरों में, ऋषियों के आश्रमों में तथा बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में शिक्षा का अध्ययन कराया जाता था। ब्रह्मचर्य आश्रम-जीवन का पहला पड़ाव होता था। घर से दूर विद्यार्थी ऋषियों द्वारा संचालित गुरुकुलों में रहते थे। तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, उज्जैनी प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में गिने जाते थे, जहाँ पर विदेशी छात्र भी अध्ययन हेतु आते थे। जैसे आज हॉर्वर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय हैं वैसे ही हमारे देश के ये विश्वविद्यालय थे। चीन, कोरिया, इण्डोनेशिया, जापान के छात्र भारत में आकर अध्ययन एवं शोध करते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग, फाह्यान तथा अन्य यात्रियों ने इन विश्वविद्यालयों के गुणों को विश्व स्तर तक पहुँचाया। तक्षशिला के अन्तर्गत चाणक्य ने अर्थशास्त्र दिया। चरक ने आयुर्वेद दिया तथा पाणिनी ने संस्कृत को सुधारकर व्याकरण से अवगत कराया। नालन्दा तो बुद्ध का ऐपीसेन्टर (केन्द्र बिन्दु) रहा। इन संस्थानों में प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। केवल 20 प्रतिशत को ही प्रवेश दिया जाता था। इन विद्यालयों में 100 विषयों पर लेक्चर होते थे। इनमें साइंस, मेडिटेशन, मिलिट्री, आर्किटेक्ट, लॉ, चिकित्सा, योग, न्यास, शब्द विद्या, संस्कृत विद्या आदि सिखाई जाती थी। शस्त्र एवं शास्त्र भी सिखाए जाते थे। जीवन के सम्पूर्ण विकास की शिक्षा इनमें दी जाती थी। कश्मीर के शारदा पीठ में पढ़े आदि शंकराचार्य से पूछे गए सभी प्रश्नों के सही उत्तर से ही उन्हें जगत्गुरु का दर्जा दिया गया। इन विश्वविद्यालयों में रहना, खाना तथा पढ़ना फ्री में रहता था। नालन्दा विश्वविद्यालय को 100 गाँव मदद करते थे। राजा महाराजा भी मदद करते थे। छात्र जब सभी कलाओं में निपुण हो गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था तब वह हुनर के साथ अपना पुरुषार्थ करता। उसे बेरोजगार नहीं रहना पड़ता था। वह संस्कारयुक्त जीवन यापन करने लगता था। शिक्षा प्रणाली यथार्थ में न्यायोचित, मूल्यवान तथा संस्कृति से उच्च कोटि की थी।

विदेशी आक्रान्ताओं का प्रभाव-

भारतीय शिक्षा प्रणाली जब चरम स्तर पर थी तथा विश्वगुरु बन चुकी तब नालन्दा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि मोहम्मद बख्तर खिलजी को रास नहीं आई तो उसने नालन्दा पर आक्रमण कर उसे जलाकर तबाह कर दिया। कहा जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय में इतनी किताबें थी कि छः महीने तक जलती रही। इस प्रकार धीरे-धीरे शिक्षा एवं संस्कृति का ह्रास होता गया तथा इसके विकास हेतु विशेष ध्यान नहीं दिया गया। विश्वविद्यालय अब छोटे गुरुकुल एवं मंदिरों में परिवर्तित कर दिए गए। शिक्षा का पूरा सिस्टम गुरुकुलों पर ही टिका हुआ था। मध्यकाल के बाद अंग्रेजों का भारत आने का उद्देश्य वाणिज्य एवं सत्ता स्थापित करना था। यहाँ की सम्पन्नता, भाषा एवं संस्कृति नष्ट करना उनका उद्देश्य था लेकिन

स्थानीय भाषा, शिक्षा का उच्च स्तर उनके लिए बड़ी बाधा थी इसलिए उन्होंने भारतीय संस्कृति को नष्ट करके अंग्रेजी की स्थापना करने जैसी गतिविधियों को अपनाया। इतिहासकार 'धर्मपालजी' (1922-2006) ने वर्ष 1960 में लन्दन में जाकर भारतीय शिक्षा पद्धति का अध्ययन किया। वहाँ पर शिक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार के लार्ड मैकाले द्वारा 1835 में कराए गए सर्वे के तथ्यों को देखा तो आश्चर्यचकित करने वाले तथ्य सामने आए। सर्वे रिपोर्ट में लिखा था कि भारत की शिक्षा प्रणाली बहुत ही उच्च स्तर की है, हर गाँव में पाठशालाएँ हैं, लिटरेसी दर बहुत ऊँची है, शिक्षा पद्धति काफी एडवांस है तथा महाभारत एवं रामायण के साथ संस्कृत, गणित, विज्ञान, संगीत, नृत्य, कॉमेडी इत्यादि विषय भी पढ़ाए जाते हैं। छात्रों की हाजरी उच्च स्तर पर है। शिक्षा एवं शिक्षक दोनों अच्छे हैं। शिक्षक मन लगाकर पढ़ाते हैं, लड़के एवं लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ती हैं। क्षेत्रीय भाषा में अध्ययन कराया जाता है। इसलिए इसे अंग्रेजों ने 'द ब्यूटिफुल ट्री' का नाम दिया। इससे उनको खतरा होने की सम्भावना थी। स्थानीय एवं क्षेत्रीय भाषा भी उनके लिए बाधा थी। पूरे भारत के गाँव-गाँव में पाठशालाएँ थीं। सर्वे में ज्ञात हुआ कि अकेले तमिलनाडु में 1.5 लाख कॉलेज थे और 1.57 लाख गाँव थे, इसलिए अंग्रेजों ने इसे 'हायर लेवल इन्स्टीट्यूट' का दर्जा दिया। इसमें 1500 सर्जरी के कॉलेज थे। सभी सर्जन नाई जाति के थे। यहाँ के विद्यार्थियों में 70 प्रतिशत शूद्र तथा 30 प्रतिशत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थे। शूद्रों के हाथों में सबसे बड़ी तकनीक थी। आर्किटेक्ट सबसे नीची जाति पेरियार के हाथों में थी। वे ही यह कार्य करते थे तथा प्रोफेसर थे, जो स्थापत्य कला में निपुण थे तथा दक्षिण भारत में प्रमुख एवं प्रसिद्ध मंदिर उन्होंने ही डिजाइन किए थे।

मैकाले की शिक्षा नीति न्यायोचित नहीं

भारत में शिक्षा के उच्च स्तर को जानकर लॉर्ड थॉमस बेबिंगटन मैकाले ने सर्वे (1835) द्वारा जानकारी हासिल करने के बाद 'द ब्यूटीफल ट्री' को कैसे काटा जाए इसके लिए दो बातों पर चिन्तन किया- भारतीय संस्कृति को तोड़ने एवं बर्बाद करने के लिए न्याय व्यवस्था एवं शिक्षा व्यवस्था को तोड़ दो। इससे संस्कृति बर्बाद हो जाएगी तथा भारत में अंग्रेजी को थोप दिया जाएगा। मैकाले की षड्यन्त्रकारी शिक्षा नीति के कारण 1835 में 'इंग्लिश एज्युकेशन एक्ट' पारित कर दिया गया, जिसके अनुसार-

1. अंग्रेजी भाषा, अरबी और संस्कृत से अधिक परिष्कृत एवं सभ्य भाषा है।
2. अंग्रेजी पश्चिमी भाषाओं में सबसे अधिक प्रभावशाली है। भारत अंग्रेजों के अधीन है, इसलिए भारत में इसका प्रचार-प्रसार हो, जिससे व्यापार एवं वाणिज्य अधिक सुगम हो सके।
3. अंग्रेजी पढ़कर भारत विश्व से जुड़ जाएगा और उन्हीं की भाँति सभ्य और सुसंस्कृत बन जाएगा।
4. हर भारतवासी अंग्रेजी पढ़े तथा अंग्रेजी सीखे। उन्हें संस्कृत, अरबी, अंग्रेजी की तुलना में निम्न कोटि की प्रतीत होती है।
5. अंग्रेज अगर चाहें तो भारत में भी अंग्रेजी भाषा के बुद्धिजीवियों का प्रार्दुभाव हो सकता है।
6. केवल अंग्रेजी भाषा द्वारा ही यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि भारत में ऐसे व्यक्ति पैदा हों जो रंग और रक्त से भारतीय हों, लेकिन विचारधारा में अंग्रेजी।

उपरोक्त प्रावधानों से भारतीय शिक्षा पद्धति पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनका उद्देश्य केवल अंग्रेजी को मान्यता देना, क्षेत्रीय एवं स्थानीय भाषा को गौण करना, अंग्रेजी भाषा सर्वोच्च है, अन्तरराष्ट्रीय भाषा है ऐसी भ्रांतियाँ उत्पन्न करना था। इस एक्ट के पारित होते ही गुरुकुल प्रणाली से हटकर स्कूलों का प्रादुर्भाव हुआ तथा भारत के मौलिक विद्यालय बंद होने लगे तथा कानून बना दिया गया कि जो स्कूल चलाएंगे उन्हें 59 प्रतिशत टैक्स देना पड़ेगा। कर की मार तथा अकाल आदि से भुखमरी बढ़ने लगी। अकेले हुगली नगर में

1400 हिन्दू बालकों पर प्रभाव हुआ। दक्षिण भारत में एक विशेष हुनरयुक्त समुदाय जो निम्न जाति के पेरियार थे, उनका मंदिर में प्रवेश करना कानून बनाकर बन्द करवा दिया गया। जो पाठशालाएँ चल रही थी वे बन्द हो गईं, सहायता बन्द हो गई। गाँवों पर अधिक लगान लगने से सहायता नहीं मिलती। इस प्रकार शिक्षा की 'बेक बोन' को तोड़कर रख दिया। इनका उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में 'हेल्पर' एवं 'क्लर्क' बनाना मात्र रह गया। इस एक्ट के बाद जगह-जगह मिशनरी स्कूल खोले गए। भारत के मंदिरों में फण्ड देना तथा मंदिरों पर पण्डितों की शिक्षा को बन्द कर दिया। जो इन नियमों को नहीं मानते उन्हें दण्डित किया जाने लगा।

मैकाले की शिक्षा नीति के परिणाम- जो हुनर शिक्षा के माध्यम से सिखाए गए वे समाप्त हो गए, उनकी उपयोगिता खत्म कर दी गई। अंग्रेजी को उच्च भाषा तथा अरबी, संस्कृत को निम्न भाषा माना जाने लगा। इससे भारतीयों में निम्न मानसिकता का जन्म हुआ और वे अंग्रेजी को बड़ी इज्जत की भाषा मानने लगे, जबकि सच्चाई यह थी कि 200 देशों में से केवल 12 देशों में ही अंग्रेजी का वर्चस्व था, अन्य देशों में स्वयं की भाषाएँ प्रचलित थी। ऐसी मानसिकता के कारण हमारी संस्कृति दबी हुई लगने लगी। अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय केवल गुलामी करें और घरों में भी स्थानीय भाषा का उपयोग नहीं करें। परिणाम यह भी आया कि फिल्म भी अंग्रेजी देखे, कपड़े परिधान भी उन्हीं की तरह पहने। इन कारणों से भारतीयों में हीनता की भावना पैदा होने लगी। भारत के पास कोई विकल्प नहीं बचा। इस शिक्षा नीति के कारण भारत की रोजगारयुक्त तथा हुनरयुक्त शिक्षा प्रणाली एवं संस्कृत के शास्त्र, वेद, पुराण, रामायण, महाभारत का शैक्षणिक स्तर पर अध्ययन बन्द करने से संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा। गुरुकुलों को अवैधानिक घोषित कर दिया गया।

ए.एस.ई.आर. की रिपोर्ट के अनुसार 83 प्रतिशत भारतीय जो पढ़े-लिखे थे वे रोजगार से वंचित हो गए या रोजगार पाने योग्य नहीं रहे। इतना ही नहीं अंग्रेजी नीति के कारण भारतीय जो पहले नॉबेल पुरस्कार प्राप्त करते थे (जिनमें रविन्द्रनाथ टैगोर एवं जगदीश चन्द्र वसु दोनों बंगाली भाषा में नॉबेल पुरस्कार विजेता) उनके बाद आज तक ऐसा पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ। जबकि छोटे-छोटे देश जैसे जर्मनी, फ्रांस यूएसए को कई नॉबल पुरस्कार प्राप्त हुए।

आधुनिक शिक्षा डिग्री देती है रोजगार नहीं- वर्तमान शिक्षा प्रणाली का आधार भी लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली ही है। इसमें आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। यह शिक्षा विषय का ज्ञान तो कराती है, लेकिन उसका व्यावहारिक दृष्टिकोण गौण हो जाता है तथा व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन के कार्य-कलापों में ये विषय काम नहीं आते। जैसे साइन्स पढ़ा-लिखा, बैंक में वाणिज्य का काम करता है, तकनीकी ज्ञानयुक्त व्यक्ति प्रशासनिक कार्य करता है अर्थात् जो व्यक्ति जिसके लिए उपयुक्त है उसे वह उपयुक्त कार्य नहीं मिलता अर्थात् प्लेसमेन्ट सही नहीं होता। इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय तो बना दिया, लेकिन जितना विस्तार एवं बारीकी से उपयोग लेना था नहीं लिया जा रहा है। जो गुरुकुल सफलता की कसौटी पर खरे उतरते थे, रोजगार के व्यावहारिक शिक्षण पर आधारित थे, वे नहीं रहे। जो अभी चल रहे हैं, पर्याप्त नहीं हैं, परिपूर्ण नहीं हैं तथा यथार्थ नहीं है। केवल डिग्री ओरियण्टेड है। डिग्री केवल विद्यार्थी को नौकरी/प्रवेश परीक्षा में इलिजीबिलीटी तक सीमित है अर्थात् इसके कारण वह प्रवेश परीक्षा दे सकता है। नौकरी के लिए उसे प्रवेश परीक्षा पास करने, मैन परीक्षा, इन्टरव्यू इत्यादि प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, तब जाकर उसे नौकरी की उम्मीद लगती है।

कोचिंग संस्थाओं ने तो शिक्षा को व्यापार बनाकर रख दिया गया है। विशिष्ट कोचिंग, कोर कोचिंग विभिन्न रूपों में, स्तरों में बाजार में उपलब्ध हैं। इनकी फीस आम आदमी देने में सक्षम नहीं है। इसके लिए

ऋण लेकर पढ़ाते हैं। छोटी से छोटी पोस्ट के लिए तथा प्रवेश परीक्षा के लिए भी कोचिंग लेनी पड़ती है। आज बाजार में राजकीय शिक्षण संस्थाओं के समानान्तर ही नहीं इनसे आगे कोचिंग संस्थाएँ बढ़ गई हैं। प्रवेश परीक्षाओं के पेपर लीक हो रहे हैं। किसी भी क्षेत्र में नौकरी प्राप्ति हेतु परीक्षा पास करना भर्ती प्रक्रिया का अंग बन गया है। परिणाम यह है इसमें धनबल, बाहुबल, राजनैतिक प्रभाव, प्रशासनिक प्रभाव आदि के कारण पारदर्शिता पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। पहले पढ़ना कठिन, पढ़ने के बाद नौकरी के लिए प्रवेश लेना कठिन। नौकरी लगने के बाद 'स्वरुचि के पद' का मिलना कठिन है। यहाँ कहावत चरितार्थ हो रही है- **'भण्यां पर गुणया नहीं'** अर्थात् पढ़ा लेकिन व्यवहार में आचरित नहीं किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि आज की शिक्षा प्रणाली व्यावहारिक जीवन तथा जीवन के उच्च मूल्यों की दृष्टि से न्यायोचित नहीं है। अध्ययनकर्ता स्वयं अपने अध्ययन से सन्तुष्ट नहीं है। अपनी जॉब से सन्तुष्ट नहीं है। हर वक्त उनके मन में टीस रहती है। इतना ही नहीं पीएच.डी. होल्डर्स का उच्च रिसर्च मैटर भी केवल लाइब्रेरी की शोभा बढ़ाने तक सीमित हो गया है। अत: आवश्यकता है **शिक्षा को व्यावहारिक बनाया जाए एवं शिक्षा कम खर्चीली हो** ताकि आम आदमी इसका भार उठा सके। प्रवेश परीक्षाओं के नाम पर कोचिंग संस्थानों में जो लूट हो रही है उसे बन्द किया जाए। **प्रेक्टिकल एप्रोच पर जोर दिया जाए। संख्यात्मकता के स्थान पर गुणात्मकता को आधार बनाया जाए।** पुन: गुरुकुल व्यवस्था को लागू किया जाए, जिससे गुरु शिष्य-परम्परा को पुन: स्थापित किया जा सके। शिक्षक भी पुन: गुरु बनने का प्रयास करें। सरकार इस विषय पर चिन्तन करे कि शिक्षा को उद्योग एवं व्यापार की परिभाषा के स्थान पर प्राथमिक आवश्यकता के रूप में अपनाया जाए। इस प्रकार के आमूलचूल परिवर्तन द्वारा ही हम शिक्षा को न्यायोचित कर पाएँगे। **शिक्षा जीवन्त हो, संस्कारयुक्त हो तथा अध्यात्म के साथ संस्कृति की रक्षा करने वाली हो, तभी हम विश्वगुरु बन पाएँगे।**

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपृष्ठ के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 जून 2022** का धार्मिक अंक **''चातुर्मास : विभिन्न परिप्रेक्ष्य (धार्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं सैद्धांतिक) में''** विषय पर प्रकाशित किया जाएगा। रचनाओं की शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

-श्रमणोपासक टीम

जैन धर्म में वर्णित 18 पाप और भारतीय आपराधिक कानून का तुलनात्मक अध्ययन

-एडवोकेट अरिहन्त चौपड़ा, पाली (राज.)

पाप किसे कहते हैं?

इस पर भगवान महावीर फरमाते हैं- ''जो आत्मा को मलिन करें तथा जो बांधते सुखकारी, भोगते दु:खकारी, अशुभ योग से बंधे, सुखपूर्वक बांधा जाए, दु:खपूर्वक भोगा जाए। पाप अशुभ प्रकृति रूप है। जिसका फल कड़वा और जो प्राणी को मैला करे उसे पाप कहते हैं।''

जैन धर्मानुसार पाप 18 प्रकार से बांधा जाता है और 82 प्रकार से भोगा जाता है। देश और दुनिया में जितने भी अपराध होते हैं, सभी आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान महावीर की देशना में बताए गए 18 पापों में समाहित हैं। हम 18 पाप से बचकर न सिर्फ कानूनन अपराधी होने से बच सकते हैं बल्कि पुण्य कर्मों का बंध कर सकते हैं।

भगवती सूत्र प्रथम शतक के नौवें उद्देशक में भगवान ने फरमाया है कि ''इन 18 पाप स्थानों का सेवन करने से जीव भारी होता है और नीच गति में जाता है। इनका त्याग करने से जीव हल्का होता है और ऊर्ध्व गति प्राप्त करता है। 82 प्रकार से पाप के अशुभ फल भोगे जाते हैं, इन पापों को जानकर पाप के कारणों को छोड़ने से जीव इस भव और परभव में निराबाध परम सुख प्राप्त करता है।''

जैन धर्म में पाप का वर्णन क्यों किया गया?

इसलिए क्योंकि जीव इन पापों की पहचान कर इनसे मुक्ति का प्रयास करे।

जैन धर्म में वर्णित 18 पाप न सिर्फ धार्मिक दृष्टि से त्याज्य है बल्कि भारतीय कानून में अपराध की श्रेणी में आने से त्याज्य है अन्यथा अपराधी को अपराध की गम्भीरता के हिसाब से कठोर से कठोरतम सजा भुगतनी पड़ सकती है।

जैन धर्म में 18 पाप के प्रकार व भारतीय कानून में उनका विवेचन निम्नलिखित है-

1. प्राणातिपात- किसी भी जीव की हिंसा करना, उसका वध कर देना, उसे जान से मार देना सबसे बड़ा पाप है। भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 302 में इसे हत्या का अपराध मानते हुए मृत्युदंड अथवा आजीवन कारावास का प्रावधान है।

2. मृषावाद- असत्य वचन बोलना, हमेशा झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है।

व्यक्ति झूठ बोलकर पुलिस थाना, कोर्ट में प्रतिदिन मिथ्या साक्ष्य देते हैं और निर्दोष लोगों को झूठे आरोपों में

फँसाकर उनकी जिंदगी बर्बाद कर देते हैं। भारतीय दंड संहिता 1860 के अध्याय 11 की धारा 191 से धारा 229क में मिथ्या साक्ष्य और लोक न्याय के विरुद्ध अपराधों के विषय मे विभिन्न अपराधों को परिभाषित करते हुए अपराध की प्रकृति के आधार पर कठोर से कठोर दंड व अजमानती अपराध की श्रेणी में माना है।

3. अदत्तादान- किसी से पूछे बिना उसकी वस्तु लेना, चोरी करना पाप है।

भारतीय दंड संहिता 1860 के अध्याय 17 की धारा 378 से 382 व धारा 410 से 414 में चोरी के लिए 3 से 10 वर्ष तक के कठोर/साधारण कारावास का प्रावधान है। भगवान महावीर के उपदेश के दो शब्द सुनने से रोहिणेय चोर की काया पलट सकती है तो हमारे जीवन में बदलाव क्यों नहीं आ सकता?

4. मैथुन- असंयमित होकर कुशील का सेवन करना पाप है।

इसे ही वर्तमान में यौन अपराध/बलात्कार जैसे गम्भीर अपराध की श्रेणी में मानते हुए भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 375 से 376डी में तथा पोस्को एक्ट कानून में आजीवन कारावास व मृत्युदण्ड का प्रावधान है।

5. परिग्रह- किसी वस्तु को संचित करना, द्रव्य आदि रखना, ममता रखना पाप है।

आप कहेंगे- क्यों?

क्योंकि जो वस्तु हमारी आत्मा में क्लेश उत्पन्न करे और उसके मूल स्वरूप में परिवर्तन लाए, जिससे आत्मा अपनी पहचान खोती है, वह पाप है।

अनावश्यक परिग्रह करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कभी इनकम टैक्स, कभी जीएसटी विभाग, कभी ईडी, कभी सीबीआइ द्वारा आय से अधिक सम्पत्ति को लेकर, आयकर चोरी, जीएसटी चोरी व बेनामी सम्पत्ति आदि को लेकर कार्यवाही की जाती है। लाखों-करोड़ों का जुर्माना अधिरोपित किया जाता है व आरोपी को लंबे समय तक जेल भी जाना पड़ता है।

6. क्रोध- खुद तपना, दूसरों को तड़पाना, अत्यधिक क्रोध करना पाप है। क्रोध सभी प्रकार की हानियों की जड़ है और यह पाप का मूल है।

प्राय: सभी अपराध व्यक्ति क्षणिक आवेश में आकर करता है, फिर अपराध की प्रकृति व सजा के प्रावधान को जानकर प्रायश्चित्त करता है, तब तक विलंब हो जाता है।

7. मान- अहंकार (घमण्ड करना) पाप है।

अहंकार में व्यक्ति एक-दूसरे को नीचे दिखाने की कोशिश करता है। उनमें रंजिशें बढ़ती हैं और एक-दूसरे के विरुद्ध अपराधिक कृत्य बढ़ते जाते हैं।

8. माया- ठगाई करना, कपटपूर्वक आचरण करना।

भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 415 से 424 तक में छल, धोखाधड़ी, कपटपूर्वक विलेखों और सम्पत्ति आदि के अपराधों की व्याख्या कर 7 वर्ष तक के कारावास का प्रावधान है।

9. लोभ- तृष्णा बढ़ना, अत्यधिक पाने की लालसा करना।

लोभ और लालच को बुरी बला कहा जाता है। लोभ में आकर व्यक्ति विभिन्न आपराधिक घटनाओं को अंजाम देता है। चोरी, लूट, डकैती, धोखाधड़ी जैसे अपराध व्यक्ति लोभवश ही करता है।

10. राग- मनोज्ञ वस्तु पर स्नेह रखना, प्रीति करना।

11. द्वेष- अमनोज्ञ वस्तु पर द्वेष करना।

राग-द्वेष से वशीभूत होकर व्यक्ति पथ से भ्रमित होकर अनैतिक गतिविधियों में लिप्त हो जाता है व अपनी अनैतिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कानून हाथ में ले लेता है।

12. कलह- क्लेश करना।

कोई व्यक्ति घर में अपनी पत्नी से क्लेश करे तो घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 के तहत यह अपराध है। अन्य से क्लेश करे और शान्ति भंग करे तो यह धारा 107, 151 दण्ड प्रक्रिया संहिता के तहत अपराध है। जिसके लिए क्लेश कर

शान्ति भंग करने वाले को गिरफ्तार कर कार्यपालक मजिस्ट्रेट द्वारा पाबन्द किया जा सकता है।

13. अभ्याख्यान- किसी पर झूठा कलंक लगाना।

भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 182 व अध्याय 11 में धारा 191 से 211 में मिथ्या साक्ष्य और लोक न्याय के विरुद्ध अपराधों के विषय में वर्णन है तथा अलग-अलग समय के कारावास के प्रावधान हैं।

14. पैशून्य- दूसरों की चुगली करना।

15. परपरिवाद- दूसरों का अवर्णवाद (निन्दा) बोलना।

कई बार दूसरों की चुगली व परपरिवाद उनकी मानहानि कारक होती है, जिसे भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 499 में परिभाषित किया गया है तथा धारा 500 के अनुसार जो कोई किसी अन्य व्यक्ति की मानहानि करेगा वह व्यक्ति 2 वर्ष तक के साधारण कारावास व जुर्माने से दंडित होगा।

16. रति-अरति- पाँच इंद्रियों के 23 विषयों में से मनोज्ञ वस्तु पर प्रसन्न होना, अमनोज्ञ वस्तु पर नाराज होना।

रति-अरति की भावना रखने वाला सदैव अपनी रुचि के अनुसार काम होने पर प्रसन्न रहता है व अहिंसक रहता है तथा अपने विपरीत काम होने पर नाराज होकर हिंसा व अपराध का सहारा लेता है।

17. माया- मृषावाद- कपट सहित झूठ बोलना। कपट सहित झूठ यानी किसी के साथ धोखा करना, भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 420 व अध्याय 11 में कपट करने वालों के लिए सजा का प्रावधान है।

18. मिथ्यादर्शनशल्य- कुसाधु को सुसाधु समझना, कुदेव, कुगुरु कुधर्म पर श्रद्धा रखना।

कुदेव, कुगुरु व कुधर्म सदैव व्यक्ति को अन्याय, कुमार्ग व कदाचार का व्यवहार सिखाते हैं, जो ऐसी बातें सीखता है वो अपने जीवन में कभी न कभी अन्याय, कुमार्ग व कदाचरण के कारण आपराधिक कृत्यों को करता ही है और उसे जेल जाना पड़ता है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित 18 पापों को छोड़ देने से ही जीव की मुक्ति संभव होती है और कानूनन अपराधी होने से बच सकता है। इसलिए प्रत्येक जैन मुनि यतना, विवेक का ध्यान रखते हुए यथासंभव छोटे से छोटे जीव की भी हिंसा नहीं करते हैं तथा सच्चा जैन श्रावक भी जीवों की हिंसा व विराधना से बचने का लक्ष्य रखता है।

एक व्यक्ति जो प्यासा है उसे केवल प्यास ही दिखाई देगी और यही कहेगा - ''पानी दो, पानी दो'' वह धन या पद की याचना नहीं करेगा। उसके सामने जीवन मरण का प्रश्न होता है। बच जायेगा तो आगे की सारी स्थिति व्यवस्थित हो जायेगी। इस प्रकार प्यासे को जैसे एक मात्र पानी की चाह रहती है वैसे ही शुद्ध चेतना की एक मात्र अभिप्सा होती है कि वह चन्द्रप्रभु के मुखचन्द्र को देख ले। यदि असंस्कार या अशुद्ध चेतना जीवन में है तो उसका स्वभाव ही है प्रमाद में लिप्त करने का।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलालजी म.सा.

गुरुमुख वचन सदा सुखदाई

(आचार्य श्री नानेश के जन्मदिवस पर इतिहास की झलकियाँ)

-संकलित

धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. के जन्म दिवस का अवसर सदैव मन को प्रफुल्लित कर देने वाला होता है। ज्येष्ठ सुदी 2 (1 जून 2022) को आप सभी के समक्ष आचार्य प्रवर का 102वां जन्म दिवस उपस्थित हो रहा है। इस अवसर पर युवाचार्य अवस्था में आचार्य श्री रामेश द्वारा आचार्य श्री नानेश के जन्म दिवस पर किए गए गुणगान व गुणगान पर उद्‌बोधन स्वरूप आचार्य श्री नानेश के शब्द सुमन इतिहास की झलकियों से आपके सामने प्रस्तुत हैं-

धर्मप्रेमी बंधुओ! आचार्यश्री के जन्मदिवस का यह प्रसंग सुविदित है। आपश्री का जन्म दाँता ग्राम में ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया के दिन हुआ, अत: आज हम जन्म-जयंती मना रहे हैं।

प्रश्न होता है- जन्म-दिवस मनाते हैं इसके पीछे क्या कुछ आशय रहा हुआ है? इस प्रश्न की मीमांसा करने जाएँ तो स्पष्टत: दृष्टिगत होगा कि महापुरुषों की आत्मिक शक्तियों, विशुद्ध ज्ञान पर दृष्टिपात करते हुए शाश्वत सत्य की खोज करना व अस्तित्त्व का बोध करना जयंती मनाने का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। इस लक्ष्य को विस्मृत कर मात्र बाहर ही बाहर दृष्टि दौड़ाते रहे तो हमें जो उपलब्धि होनी चाहिए वह नहीं हो पाएगी। इसी तथ्य को दृष्टांत द्वारा समझा जा सकता है। सिनेमा हॉल में एक व्यक्ति पहुँचा। सिनेमा स्टार्ट हुआ। उसने देखा कि सामने बहुत सारे चित्र आ रहे हैं। चित्रों में कोई दौड़ रहा है, कोई बोल रहा है। उसने चिन्तन किया इन चित्रों का मूल उद्‌भव स्थान कौनसा है? इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई और पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि एक खिड़की में से प्रकाश की किरणें निरन्तर प्रसारित हो रही हैं और सामने वाले पर्दे तक वे किरणें पहुँच रही हैं। उन्हीं किरणों से पर्दे पर चित्रों का उद्‌भव हो रहा है। चित्रों के उद्‌भव का मूल कारण है प्रकाश और पर्दा। लेकिन आज प्रकाश और पर्दे को भूलकर हम केवल चित्रों में ही अटके हैं। उन्हीं में उलझते रहते हैं और जनमानस में उसी की प्रतिक्रिया करते रहते हैं।

जन्म दिवस मनाने वाले भी ऐसा ही कुछ तो नहीं कर रहे हैं? वैभाविक परिस्थितियों के कारण उभरने वाले चित्रों पर ही हमारा मानस तो नहीं उलझ रहा है? इस जिनशासन रूपी पर्दे पर महापुरुषों के सिद्धान्तों के विशुद्ध ज्ञान का गहरा प्रकाश पड़ रहा है। उस प्रकाश से अनेक चित्र इस पर्दे पर उभर रहे हैं। हम केवल इन चित्रों को ही देखते हुए चले जाएंगे और उन्हीं में अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर देंगे तो अस्तित्त्व का बोध हमें नहीं होगा। अस्तित्त्व का बोध होगा चित्रों के उद्‌भव स्थान को जानने से। सैद्धान्तिक धरातल पर चलने वाले महापुरुष विशुद्ध सिद्धान्तों को आधार बनाकर अपने गरिमामय ज्ञान का प्रकाश इस जिनशासन रूपी भव्य पर्दे पर डाल रहे हैं। उसी प्रकाश को आधार बनाकर अस्तित्त्व की खोज करना जन्म-जयंती मनाने का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

गीता में भी कहा गया है- 'आत्मा को अग्नि जला नहीं सकती, पानी गीला नहीं कर सकती, हवा सुखा नहीं सकती, शस्त्रों से छेदन नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह शाश्वत है।'

इस जन्म दिवस के माध्यम से निश्चय और व्यवहार को समझें। परिस्थितियों से पैदा होने वाली विचित्र स्थितियों में उलझ कर न रहें किन्तु महापुरुषों के विशुद्ध ज्ञान से सम्पृक्त जीवन को देखें। इन आचार्य प्रवर ने कितना जहर पीया है यह तो इनकी जीवन रूपी किताब को खोलकर देखने से ही ज्ञात हो सकता है? कहाँ फुर्सत है इनके जीवन की किताब को देखने की? ज्यादा से ज्यादा आचार्यदेव का जीवन चरित्र उठाकर देख लेते हैं। उससे जीवन की वास्तविक गहराइयों को परिपूर्ण रूप से जानना मुश्किल है। इनके सामीप्य को प्राप्त करने वाला, इनके जीवन को गहराई से देखने

वाला ही जान सकता है कि इनका जीवन कितना पवित्र, निर्मल, करुणाशील है। छोटे से छोटे साधक के प्रति अपूर्व समता भाव, वात्सल्य भाव भी इनका है। किसी के भी शरीर में जरा-सी व्याधि आ जाए तो उन्हें सम्हाले बिना आचार्यदेव को संतोष नहीं आता है। वे स्वयं फरमाते हैं कि सन्तों को देख लेता हूँ तो संतोष की अनुभूति हो जाती है। उनका वरदहस्त सब साधकों पर रहा है, क्योंकि उनकी क्षमता बेजोड़ है। आचार्य प्रवर में चेतना का अजस्र प्रवाह बह रहा है। हम भी उसमें से अंजली भरें और प्रवाह के साथ आगे बढ़ें।

आप जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों की परवाह किए बिना सदैव समभाव में स्थिर रहें। मालव क्षेत्र के सैकड़ों गाँवों में फैली बलाई जाति आपके उपदेशों से धर्मपाल बनी। धर्मपाल क्षेत्र की प्रथम पदयात्रा में पश्चिम बंगाल के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री विजयसिंहजी नाहर ने धर्मपाल समाज को लक्ष्य करके कहा था कि भारत के धार्मिक इतिहास में यह एक महान क्रांति है। जब समाज ने नैतिक-धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की तो गुरुदेव की कृपा से तत्काल श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्थापना हुई। जब हमने गुरुदेव से समाज को सत्साहित्य प्रदान करने की विनती की तो आपश्री ने तुरन्त श्रेष्ठ साहित्य संघ को प्रदान किया और आज संघ की साहित्य समिति के प्रकाशनों पर देश को गर्व है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और तदनुसार हमारा साहित्य हमारे विचारों का साकार रूप है।

युवाचार्य श्री रामलालजी म.सा.

गुणगान किए जाने पर आचार्यश्री नानेश का उद्बोधन

आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. ने अपनी मधुर, अमोघ एवं ओजस्वी वाणी से धर्मनाथ प्रभु की प्रार्थनापूर्वक धर्म का स्वरूप बतलाते हुए फरमाया कि यह सभा आप लोगों की है। आप जिसे चाहें बोलने का अवसर दें और जिसे चाहें अवसर नहीं दें। मैं तो प्राय: रोजाना के समयानुसार यहाँ उपस्थित हुआ और जब आपने मेरे लिए समय छोड़ा तो मैं भी बोलने लगा। आप लोग गुणगान करते हैं, यह तो ठीक है, पर इसमें थोड़ा संशोधन करने की आवश्यकता है। वह यह है कि उसमें मेरा नाम नहीं जोड़ते हुए तीर्थंकर आदि महापुरुषों का गुणगान करें तो विशेष योग्य रहता है। मैं आपकी बातें सुनकर संकोच का अनुभव करते हुए सोचता हूँ कि हे आत्मन्! यह गुणगान एक दृष्टि से मीठा विष है। तू इसमें मत लुभा जाना। इसमें तेरे शिक्षा योग्य कोई बात हो तो उसे ग्रहण कर लेना। आप लोग जब बोलते हैं तो मुझे चुपचाप सुनना ही पड़ता है। आप लोगों ने जो मेरे गुणगान किए हैं वे सारे भगवान महावीर को समर्पित हैं।

सभी आचार्यों के रहते हुए व उनके देवलोकगमन के पश्चात् भी सभी अवसरों पर यथा जन्म दिवस, दीक्षा दिवस, युवाचार्य व आचार्य पद दिवस आदि पर महापुरुषों की गुणगान सभा रखी जाती है, जिसमें सभी चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं द्वारा गुणगान किया जाता है, परन्तु महापुरुष इन गुणगानों को आत्मा का विष मानते हैं व समस्त गुणगान तीर्थंकरों को समर्पित कर समभाव का परिचय देते हैं।

महापुरुषों के गुणगानों को एक कवि ने इतना वृहद रूप बताया कि –

सात समुद्र स्याही करूं, लेखनी करूं वनराय।
समस्त पृथ्वी कागज करूं, गुरु गुण लिखा न जाय।।

कुछ इन्टरेस्टिंग

श्रमणोपासक किड्स कॉर्नर आपके लिए लाया है कुछ इन्टरेस्टिंग। आइए देखें... आप सभी बच्चों के नाम आपके माता-पिता ने बहुत सोच-समझकर रखे होंगे। वैसे ही हमारे 24 तीर्थंकर भगवान के नाम भी उनके माता-पिता ने बहुत सोचकर रखे हैं। अरे! पर क्या आप सभी को 24 तीर्थंकर भगवान के नाम याद हैं? अगर नहीं तो अभी जाइए और बैठिए अपनों से बड़ों के पास और जानिए तीर्थंकर भगवान की रोचक जानकारी। हमारी तरफ से आपके लिए प्रस्तुत है तीर्थंकरों के नाम किस आधार पर रखे गए।

1. भगवान ऋषभदेवजी जब गर्भ में आए तो उनकी माता ने ऋषभ का स्वप्न पहले देखा। उनके शरीर पर ऋषभ का चिन्ह देखा। इसलिए उनका नाम ऋषभ रखा गया। इनका दूसरा नाम आदिनाथजी है। **(ऋषभ का अर्थ है बैल)**
2. भगवान अजितनाथजी के माता-पिता इनके जन्म के पहले जब भी खेल आदि खेलते तो इनकी जीत की निश्चितता नही होती थी, लेकिन जब अजितनाथजी गर्भ में आए तो इनसे कोई जीत नहीं पाता था। इसलिए इनका नाम अजितनाथ रखा गया। जब भगवान अजितनाथजी का जन्म हुआ, उसी दिन सगर चक्रवर्ती का भी जन्म हुआ। **(अजित का अर्थ है जिसे कोई जीत नहीं सकता)**
3. भगवान संभवनाथजी जब गर्भ में आए तब धन, धान्य की पैदावार में बहुत बढ़ोतरी होने लग गई। **(संभव का अर्थ है उत्पादन)**
4. भगवान अभिनन्दनजी जब गर्भ में आए तब इन्द्र देवता अक्सर गर्भस्थ शिशु को बधाई देने आया करते थे। **(अभिनन्दन का अर्थ है स्वागत)**
5. भगवान सुमतिनाथजी जब गर्भ में आए, तब से उनकी माता की बुद्धि में वृद्धि होती गई और सारे बड़े विवाद सुलझाने लगी। **(सुमति का अर्थ है अच्छी बुद्धि)**
6. भगवान पद्मप्रभजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता को कमल के फूलों की सेज पर लेटने की इच्छा हुई और उनका शरीर भी फूलों जैसा कोमल था। **(पद्म का अर्थ कमल)**
7. भगवान सुपार्श्वनाथजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता को जो रोग था, वह ठीक हो गया और उनका शरीर सोने के समान चमकने लगा। **(सुपार्श्व का अर्थ है पसलियाँ)**
8. भगवान चन्द्रप्रभजी जब गर्भ में आए तो उनकी माता ने चन्द्रदेव के दर्शन की इच्छा पूरी की और उनके रंग में निखार आ गया। उनका चेहरा खुशी से चमक गया तथा चन्द्रमा जैसा खूबसूरत दिखने लगा। **(चन्द्र का अर्थ है चन्द्रमा)**
9. भगवान सुविधिनाथजी जब गर्भ में आए तो उनकी माता को हर कार्य में सफलता तथा समृद्धि प्राप्त हुई। **(सुविधि का अर्थ है अच्छा सृष्टिकर्ता)**
10. भगवान शीतलनाथजी जब गर्भ में आए तब उनके पिता का दाहज्वर ठीक हो

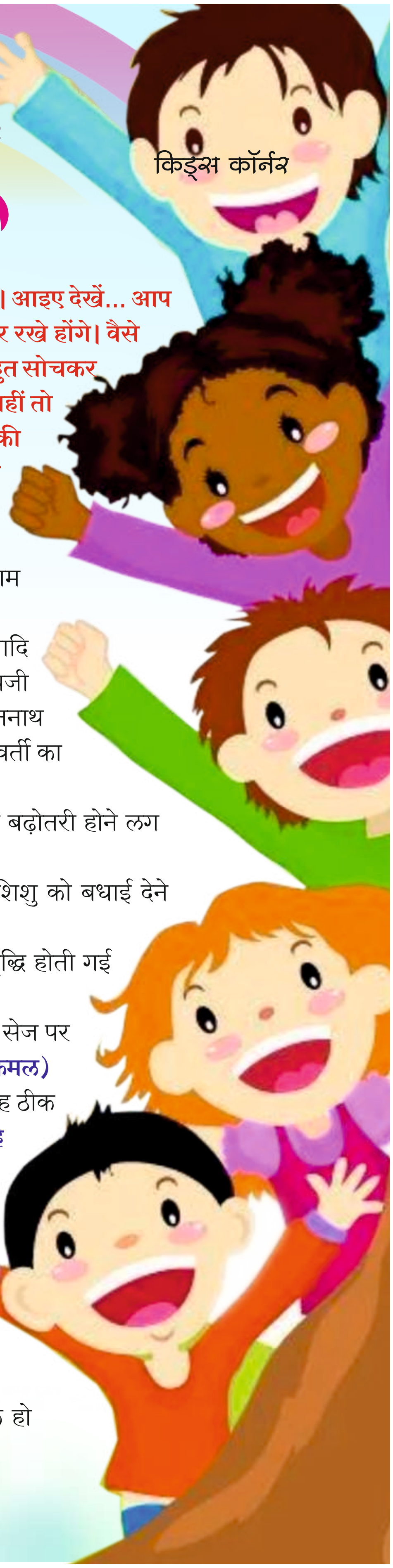

गया। **(शीतल का अर्थ है ठण्डा)**

11. भगवान श्रेयांसनाथजी जब गर्भ में आए तब पूरे प्रान्त की उन्नति और प्रगति हो गई। **(श्रेयांस का अर्थ मसीहा)**
12. भगवान वासुपूज्यजी जब गर्भ में आए तब इन्द्रदेव ने राजमहल में रत्नों की वृद्धि की। **(वासु का अर्थ है धन)**
13. भगवान विमलनाथजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता की बुद्धि बहुत विमल (निर्मल) हो गई थी। **(विमल का अर्थ है मल रहित)**
14. भगवान अनंतनाथजी जब गर्भ में आए तब उनके पिता ने शत्रु की अनंत सेना पर विजय प्राप्त की। **(अनन्त का अर्थ है अन्तहीन)**
15. भगवान धर्मनाथजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता बहुत धर्मध्यान करने लगी। **(धर्म का अर्थ है ईश्वर की भक्ति)**
16. भगवान शान्तिनाथजी जब गर्भ में आए तब राज्य में चल रहे शीतयुद्ध का शान्तिपूर्वक समाधान हो गया। **(शान्ति का अर्थ है अमन)**
17. भगवान कुंथुनाथजी की माता ने एक सुन्दर उपजाऊ भूमि पर रत्नों का विशाल ढेर देखा। **(कुंथु का अर्थ है खजाना)**
18. भगवान अरनाथजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता ने एक सुन्दर और खजाने से भरा विशाल चक्र देखा। **(अर का अर्थ है चक्र के ऑटो)**
19. भगवान मल्लिनाथजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता को सभी ऋतुओं के सुगंधित फूलों की सेज पर सोने की अतीव इच्छा हुई। **(मल्लि का अर्थ है फूल)**
20. भगवान मुनिसुव्रतजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता अच्छे-अच्छे व्रत धारण करने लगी। **(सुव्रत का अर्थ है अच्छे व्रत)**
21. भगवान नमिनाथजी के गर्भ में आने के समय राज्य को शक्तिशाली शत्रु ने घेर रखा था। रानी अचानक छत पर चली गई। गर्भवती रानी की दृष्टि जब शत्रु सेना पर पड़ी तब शत्रु सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। **(नमि का अर्थ सौम्य दृष्टि)**
22. भगवान अरिष्टनेमिजी जब गर्भ में आए तब उनकी माता ने अरिष्ट नाम का चक्र देखा। **(अरिष्ट का अर्थ है काला रत्न)**
23. भगवान पार्श्वनाथजी जब गर्भ में आए तब एक दिन रानी ने रात्रि के समय घोर अन्धकार में बगल में भयंकर सातमुख विषधर सर्प को जाते हुए देखा **(पार्श्व का अर्थ 'के बगल में')**
24. भगवान महावीर स्वामीजी जब गर्भ में आए तब राजकोष में धन, दौलत आदि में वृद्धि होने लगी उनका जन्म का नाम 'वर्द्धमान' था। **(वर्द्धमान का अर्थ है वृद्धि)**

तीर्थंकर देवों के नाम	तीर्थंकर देवों का चिन्ह	तीर्थंकर देवों के नाम	तीर्थंकर देवों का चिन्ह	तीर्थंकर देवों के नाम	तीर्थंकर देवों का चिन्ह
ऋषभदेवजी	बैल	सुविधिनाथजी	मगरमच्छ	कुंथुनाथजी	बकरा
अजितनाथजी	हाथी	शीतलनाथजी	कल्पवृक्ष	अरनाथजी	मछली
संभवनाथजी	घोड़ा	श्रेयांसनाथजी	गैंडा	मल्लिनाथजी	कलश
अभिनन्दनजी	बन्दर	वासुपूज्यजी	भैंस (स्त्री जाति)	मुनिसुव्रतजी	कछुआ
सुमतिनाथजी	लाल बत्तख	विमलनाथजी	शूकर	नमिनाथजी	नीला पद्म
पद्मप्रभजी	पद्म	अनन्तनाथजी	बाज	अरिष्टनेमिजी	शंख
सुपार्श्वनाथजी	स्वस्तिक	धर्मनाथजी	वज्र	पार्श्वनाथजी	सर्प
चन्द्रप्रभजी	चन्द्र	शान्तिनाथजी	हिरण	महावीर स्वामीजी	सिंह

माता-पिता बच्चों के सहयोगी बनें, अवरोधक नहीं

-सजग, नीमच

पिछले अनेक वर्षों से समाज की तथा माता पिता की धारणा में बड़ा परिवर्तन आया है। जहाँ पूर्व में उनकी धारणा विस्तृत थी वहीं अब उनकी धारणा संकीर्ण होती जा रही है। उन्होंने अपने बच्चों को एक विशेष साँचे में ढालने पर अपना जोर लगा दिया है। अपने बच्चों पर उपकार करने के नाम पर, उनके हित के नाम पर उनका अहित किया जा रहा है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बच्चों को माध्यम बनाकर उनके मूल स्वभाव से छेड़छाड़ की जा रही है।

कुशलसिंह सेना में मेजर बनने के बाद पहली बार सेना के बगीचे का निरीक्षण करने पहुँचे। इस दौरान उन्होंने देखा की बगीचे में बैठने के लिए लगी कुर्सी के आस-पास दो सिपाही खड़े थे। उन्हें देखकर वे चौंक गए और सैनिकों से प्रश्न किया कि "यहाँ पर क्यों खड़े हो?" सैनिकों ने उत्तर दिया कि "आपसे पहले जो मेजर थे उन्होंने इसका ध्यान रखने के लिए कहा था।"

यह सुनकर वर्तमान मेजर ने पूर्व मेजर को फोन लगाकर उस कुर्सी की रखवाली का कारण पूछा तो पूर्व मेजर ने उत्तर दिया कि "कारण तो मैं नहीं जानता, लेकिन मुझसे पहले जो मेजर थे उन्होंने ऐसा ही आदेश दे रखा था। अत: मैंने भी बिना कारण जाने इसे जारी रखा।"

यह सुनकर वर्तमान मेजर ने पूर्व मेजर से पूर्व में जो मेजर थे उनको फोन लगाया और कुर्सी की रखवाली का कारण पूछा इस पर उन्होंने चौंकते हुए प्रति प्रश्न किया कि "कुर्सी का पेंट अभी तक सूखा नहीं क्या?" यह सुनते ही कुशलसिंह को हँसी आ गई और वह सोचने लगे कि किसी कार्य को बिना सोचे-समझे किसी की नकल करके करने से कितना बड़ा नुकसान हो सकता है। ठीक इस कहानी के अनुसार ही अधिकांश लोग वर्तमान में भी पुरानी मान्यताएँ बिना कारण जाने ज्यों की त्यों अपनाए हुए हैं। उनको मान्यता शुरू होने का कारण नहीं पता होता और वे इसे बिना सोचे-समझे अपनाते हुए चले जाते हैं।

दीर्घकाल में किसी भी समाज में कुछ ना कुछ विकृतियाँ अथवा शिथिलता आ जाती है। इसका कारण है समय के साथ-साथ पुरानी अवधारणाओं को वैज्ञानिक रूप से समझकर उसका पालन नहीं किया जाता है, जिसके कारण पुरानी मान्यताएँ अंधविश्वास का रूप ले लेती हैं। पुरानी मान्यताओं का निर्माण तत्कालिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाता था, लेकिन उन मान्यताओं की वर्तमान समय में कितनी आवश्यकता है अथवा नहीं यह ध्यान देना आवश्यक है।

इसी प्रकार की एक मान्यता समाज में प्रचलित है कि माता-पिता की हर बात सही होती है। इस मान्यता का गहराई से मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट हो जाएगा कि कुछ परिस्थितियों में माता-पिता गलत भी होते हैं। वे अपनी संकीर्ण मानसिकता अथवा स्वार्थ के कारण अपने बच्चों को स्वयं से दूर कर देते हैं तथा स्वयं एवं

बच्चों का भविष्य खराब कर लेते हैं।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं-

(1) 'विराज' के स्कूल में पैरेंट्स-टीचर मीटिंग में उसकी क्लास टीचर ने बताया कि 'विराज' में झूठ बोलने की आदत बढ़ रही है, इस पर ध्यान दीजिए। यह सुनकर 'विराज' की माता ने कहा- ''हम तो इसका ध्यान रखते हैं। जरूर इसने झूठ बोलने की आदत स्कूल से सीखी होगी''। असल में विराज ने अपने घर पर अपने पिता को फोन पर कई बार यह कहते सुना था कि मैं अभी घर पर नहीं हूँ। इसका प्रभाव यह हुआ कि 'विराज' ने खुद को बचाने के लिए झूठ का सहारा लेना शुरू कर दिया।

(2) 'रोहन' को नौ वर्ष की उम्र में ही चश्मा लग गया था, क्योंकि 'रोहन' को मोबाइल गेम्स खेलने का शौक था। धीरे-धीरे यह शौक लत में बदल गया और परिणामस्वरूप उसकी आँखें कमजोर हो गई और चश्मा लग गया। इस घटना में बच्चे को मोबाइल गेम्स की लत लगवाने में माता-पिता का सबसे बड़ा हाथ था, क्योंकि जब कभी 'रोहन' रोता था तो उसे बहलाने के लिए मोबाइल गेम्स में उलझा दिया जाता था। इसका परिणाम यह आया कि रोहन अल्पकाल के लिए तो बहल गया और इससे माता-पिता भी खुश हो गए, लेकिन दीर्घकाल में 'रोहन' को अत्यंत कम उम्र में ही चश्मा लग गया।

(3) 'अजेय' को बचपन से ही किसी भी बात को गहराई से जानने का शौक था। वह अपने जीवन में सामान्य से कुछ अलग करना चाहता था। वह पढ़ने में भी होशियार था अर्थात् उसकी याददाश्त काफी अच्छी थी। उसे उसकी प्रतिभा को पहचाने बिना ऐसे क्षेत्र में अध्ययन के लिए आगे बढ़ा दिया गया जिसमें उसकी रुचि नहीं थी। वह कुछ बोल नहीं पाया, क्योंकि बच्चों को बचपन से यही सिखाया जाता है कि माता-पिता की बात माननी चाहिए। आगे चलकर अरुचि के कारण वह उस क्षेत्र की पढ़ाई में पिछड़ गया। उसके पिता तथा अन्य परिवारजन उसे असफल कहकर हतोत्साहित करने लगे और उसकी अरुचि का अन्य कार्य करने के लिए दबाव बनाने लगे, जबकि वह अपनी अरुचि के क्षेत्र में असफल हुआ था। यह घटना उसका जीवन असफल बनाने वाली नहीं थी, लेकिन संकीर्ण मानसिकता के चलते माता-पिता ने पहले गलत निर्णय लेकर बच्चे को तनावग्रस्त किया, उसके बाद उसे ही दोषी ठहराकर स्वयं को दोषमुक्त करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने बच्चे को समझकर उससे एक बार भी यह नहीं पूछा कि ''उसकी रुचि किस क्षेत्र में है।''

अपने पिता के इस व्यवहार के कारण 'अजेय' को बड़ा आघात लगा। वह बड़े तनाव में आ गया तथा उसे अपने जीवन के प्रति अरुचि होने लगी। वह कोई कठोर कदम उठाता उसके पहले भगवान की कृपा से उसका विवेक जागृत हुआ और उसने सोचा की अरुचि के क्षेत्र में असफलता उसके सम्पूर्ण जीवन की असफलता नहीं है। इसके बाद 'अजेय' ने अपनी रुचि के क्षेत्र में कार्य करना शुरू किया और उसे सफलता भी मिलने लगी। लेकिन अपने पुराने अनुभव के कारण उसने अपने निकटतम परिवारजनों को अपने कार्य के बारे में नहीं बताया, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसे फिर से कोई नकारात्मक बात कहे और वह फिर से तनावग्रस्त हो जाए। इस घटना में पिता तथा परिवारजनों की संकीर्ण मानसिकता के चलते एक प्रतिभा संपन्न बालक उनसे दूर हो गया।

इन घटनाओं से स्पष्ट है कि अधिकांश माता-पिता जाने-अनजाने में अपने बच्चों को बुरी आदत से जोड़ देते हैं तथा उसके मूल स्वभाव को विकृत कर देते हैं। वर्तमान समय में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान नहीं दिया जाता। माता-पिता समझते हैं कि अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में प्रवेश दिलाकर उन्होंने अपने सभी कर्तव्यों का निर्वहन कर दिया है। वर्तमान परिस्थिति के दबाव में आप अपने बच्चों को ऐसे विद्यालय में डाल देते हैं जहाँ पर उन्हें एक मशीन की भाँति बनाने पर जोर दिया जाता है, जबकि उनका मूल

स्वभाव समझकर उन्हें परिष्कृत करने पर किसी का ध्यान नहीं रहता है।

आजकल बेरोजगारी की समस्या बढ़ रही है। इसके लिए केवल बच्चे को गलत ठहरा कर अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री कर ली जाती है, लेकिन कभी भी आपने अपने बच्चे को समझने का प्रयास नहीं किया। उसे समाज के बनाए साँचे में ढालने के प्रयास में उसका मूल स्वभाव ही विकृत कर दिया। उसकी प्रतिभा को अनदेखा करके आपने उसे कमजोर कर दिया।

जितनी भी गलतियाँ आप बच्चों में देखते हैं वे सभी किसी ना किसी रूप में उसने आपसे ही सीखी हैं। अगर आपने स्वयं को सुधार कर रखा होता तो वह ऐसा नहीं होता। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार एक बच्चा वह सीखता है जो वह देखता है। अब अगर बच्चा आपको मोबाइल का ज्यादा उपयोग करते हुए देखेगा तो यह निश्चित है कि वह भी मोबाइल का उपयोग ज्यादा समय तक करेगा।

यह बात तो हुई व्यावहारिक जीवन की। इसके अलावा धार्मिक पक्ष को भी देखा जाए तो आचार्यश्री द्वारा भी अपने शिष्यों को उनकी प्रतिभा के अनुरूप क्षेत्र विशेष में आगे बढ़ाया जाता है। प्राचीनकाल में जब गुरुकुल का दौर था तब बच्चे को गुरुकुल में उसकी प्रतिभा के अनुरूप क्षेत्र विशेष में ही आगे बढ़ाया जाता था। आजकल की शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को कक्षा 10 तक तो एक समान शिक्षा प्रदान की जाती है, उसके बाद किसी अन्य विषय के चयन का विकल्प मिलता है। जिसमें भी वह अपने परिवारजनों अथवा मित्रों की नकल में ही कोई क्षेत्र चुन लेता है तथा उसकी वास्तविक प्रतिभा दबी हुई रह जाती है।

माता-पिता जितनी ऊर्जा बच्चों को समझाने में लगाते हैं उसकी आधी ऊर्जा भी अगर बच्चों को समझने में लगा दें तो उन्हें यह ज्ञात हो जाएगा कि उनके बच्चे की रुचि और प्रतिभा किस क्षेत्र में है। फिर उसको बढ़ाने पर जोर दिया जाए ताकि बच्चा अपनी प्रतिभा और रुचि के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सके।

पहले अपने बच्चों को समझो,
फिर उनको समझाओ।
यह मूल मंत्र है इसको अपनाओ।

जिसके भीतर पवित्र निधि भरी हुई है और जिसके लिए बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं है, उस पर तो व्यक्ति दृष्टि नहीं डाल रहा है और जहाँ निधि नहीं है तथा निधि का सिर्फ भ्रम हो रहा है, उसके पीछे वह मृग की तरह भटकता है। जैसे कस्तूरी मृग को अपनी नाभि में से कस्तूरी की सुगंध आती है, तब उसका मन छटपटाने लगता है कि यह सुगंध बड़ी अच्छी है, कहां से आ रही है? उस मृग को इस बात का भान नहीं है कि कस्तूरी की वह सुगंध पहाडों की झाड़ियों या चट्टानों में नहीं अपितु अपने में ही है। इस ज्ञान के अभाव में अपने में ही रहने वाली कस्तूरी को वह प्राप्त नहीं कर पाता और उसकी तलाश में ही उसका जीवन समाप्त हो जाता है। क्या यही अवस्था आज के मानव की तो नहीं हो रही है?

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

इम्युनिटी का चोर

-विनुषी जैन, इन्दौर

वह चोर आ गया जो हम से हमारी इम्यूनिटी चुराना चाहता है और इस इम्युनिटी चोर को पकड़ने के लिए हमें आपकी मदद की जरूरत है।

यह चोर हम से हमारा इम्युनिटी शिल्ड चुराना चाहता है, जो आज हमारा सबसे बड़ा हथियार है। हमारी शिल्ड हमें उन सभी खतरनाक कीटाणुओं और बीमारियों से बचाती है जो हम पर बाहर से हमला करते हैं। हम इस चोर को हमारी शिल्ड चुराने नहीं दे सकते।

तो क्या आप इस चोर को पकड़ने के लिए तैयार है?

तो चलिए हम आपको तीन क्ल्यू देते हैं-

1. यह चोर हमेशा किसी न किसी चीज से ढका रहता है। कभी बोटल, कभी टिन, कभी पैकेट तो कभी बॉक्स।
2. यह चोर हमेशा दुकानों और सुपर मार्केट में पाया जाता है।
3. यह चोर फैक्ट्रियों में पैदा होता है।

✲ आपको क्या लगता है कि यह चोर कौन है?

: खुशी, क्या यह चोर हमारा टी.वी. तो नहीं?

✲ यह फैक्ट्री में बनता है, दुकानों में मिलता है और हमेशा बॉक्स में आता है।

: नहीं, मैं मानती हूँ कि बहुत ज्यादा टी.वी. देखना हमारे लिए अच्छा नहीं है, लेकिन यह हमारी इम्यूनिटी कैसे चुरा सकता है?

✲ ओह! क्या यह चोर पेंट तो नहीं? जो कभी बॉक्स में आता है, कभी टिन में और बनता भी तो फैक्ट्री में है।

: नहीं, मुझे लगता है कि यह चोर हमारे अंदर घुसकर हमला करता है, बाहर से नहीं।

✲ तो क्या यह चोर हमारे चिप्स, चॉकलेट्स, बिस्किट आदि हो सकते हैं?

: सही जवाब! लेकिन मैं थोड़ी कन्फ्यूज्ड हूँ कि ये चिप्स, चॉकलेट्स, बिस्किट आदि हमारी इम्यूनिटी शिल्ड कैसे चुराते हैं?

✲ यह बात एक उदाहरण से समझते हैं।

: यदि आप फल या सब्जी का एक टुकड़ा लेकर जमीन में गाड़ दें तो कुछ दिनों में क्या होगा? यह एक पौधे में अंकुरित हो जाएगा, लेकिन आप जमीन में चिप्स, बिस्किट या चॉकलेट्स को गाड़ते हैं तो क्या वह कभी पौधे के रूप में अंकुरित होगा? नहीं। क्योंकि उस चिप्स, चॉकलेट्स, बिस्किट में जीवन नहीं है और इसलिए वे किसी और चीज को जीवन भी नहीं दे सकते। ये **डैड फूड** कहलाते हैं। जो चीज खुद डैड है क्या वो कभी आपको जीवन दे सकती

है? नहीं।

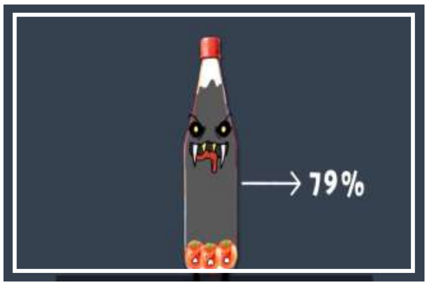

यह डैड फूड चोर हमारी बॉडी में जाकर डैथ वेट करता है। कैसे?

हमें बीमारियाँ/रोग देकर।

अधिक वजन बढ़ना यानी मोटापा (ऑबेसिटी)

त्वचा की समस्या

बालों की समस्या

फैटी लीवर

सांस में तकलीफ एवं अन्य कई बीमारियाँ

✲ तो हमें पता कैसे चलेगा कि कौन-सा फूड डैड है और कौन-सा नहीं?

: डैड फूड को पहचानना बहुत ही आसान है। जो भी चीज फैक्ट्री में बनती है, जैसे- चिप्स, नूडल्स, चॉकलेट्स, बिस्किट्स, कोल्ड ड्रिंक्स, आईसक्रीम वो डैड फूड कहलाती है। याद रखें- जो फूड पैकेट में बंद है, वह फूड नहीं गंद है।

दूसरी तरफ, जो फूड सीधे खेतों से आता है वह लिविंग फूड कहलाता है। जैसे- फल, सब्जियाँ, नट्स, सीड्स, कोकोनट, स्प्राउट्स, ग्रेन्स इत्यादि।

✲ पर क्रीमी कुकीज का क्या? आई लव इट।

: क्या तुमने कुकीज कभी किसी खेत में उगते देखे हैं? नहीं। तो यह डैड फूड है और ऑरेंज ज्यूस का क्या? इस पर तो लिखा होता है कि यह रियल है।

✲ किसी चीज के आगे रियल लिखने से वह रियल

नहीं हो जाती। ये ऑरेंज ज्यूस की बोटल फैक्ट्री से आती हैं और अंदर से पूरी तरह से डैड होती है।

: लेकिन ये फूड डैड होते हुए भी इतने अच्छे कैसे दिखते हैं? इसमें इतनी अच्छी स्मैल कैसे आती है?

✲ ताकि यह डैड फूड स्मैल करने में या दिखने में डैड ना लगे। इनमें बहुत सारे कैमिकल्स मिलाए जाते हैं, जिन्हें प्रिजर्वेटिव कहा जाता है। ये प्रिजर्वेटिव प्रोडक्ट की जिन्दगी को बढ़ा देते हैं, पर आपकी कम कर देते हैं।

✲ आपको पता है कि फैक्ट्री से आए ऑरेंज ज्यूस में कितना प्रतिशत असली ऑरेंज का ज्यूस होता है? केवल 25 प्रतिशत। बाकी 75 प्रतिशत प्रिजर्वेटिव, थिकनर्स और बहुत सारे आर्टिफिसियल फ्लेवर्स

* frozen or ready meals
* baked goods, including pizza, cakes, and pastries
* packaged breads
* processed cheese products
* breakfast cereals
* crackers and chios
* candy and ice cream
* instant noodles and soups

होते हैं। टोमाटो कैचअप में केवल 21 प्रतिशत ही टमाटर होता है। अब आपको भी पता है कि बाकी 79 प्रतिशत में क्या होता है।

और यह सब हमसे जान-बूझकर छुपाया जा रहा है।

✲ क्या आप कभी किसी फूड फैक्ट्री में गए हैं? क्या वहाँ कोई खिड़की थी? आपको वहाँ कोई खिड़की नहीं मिलेगी। खिड़की क्यों नहीं होती? क्योंकि वे नहीं चाहते कि आपको पता चले कि अंदर क्या चल रहा है। वे आपके खाने में क्या-क्या मिला रहे हैं।

✲ जो चीज ऐसी फैक्ट्रियों से आ रही है वह फूड कैसे

हो सकती है? यह तो प्रोडक्ट्स है।

: लेकिन वो ऐसा क्यों करते हैं?

✲ क्योंकि उनको आपकी इम्यूनिटी और हैल्थ से कोई मतलब नही है। वे बस पैसा कमाना चाहते हैं और अधिक पैसा कमाने के लिए वे हमेशा हमें लुभाने का तरीका ढूंढते हैं। कभी हमारे टी.वी. पर विज्ञापन दिखाते हैं, कभी न्यूज पेपर में। यह हमारी भोलेपन का फायदा उठा रहे हैं।

: जी हाँ, इसी लालच की वजह से आज कई बच्चे स्वस्थ जीवन नहीं जी पा रहे हैं। वे बीमारियों के

शिकार हो रहे हैं।

: हमारी इम्यूनिटी खतरे में है। हमें इस चोर को जाने नहीं देना चाहिए। हमें इसे सजा तो देनी ही चाहिए।

✲ इस चोर को सीधे हमारे डस्टबीन की जेल में भेज दें और अब से हम इसे अपने घर में कभी नहीं आने दें।

अगर यह हमारे घर में रहेंगे तो आखिर में हमारे पेट के अन्दर ही चले जाएँगे।

: हम कितने लक्की हैं कि हमने इस डैड फूड चोर को इतनी जल्दी पकड़ लिया। अब हमें अपने सारे दोस्तों व परिजनों को इसके बारे में सचेत कर देना चाहिए ताकि वे भी इस चोर को अपने घर से हटा सकें।

चलो आज से हम निश्चय करें कि-

मैं आज से सिर्फ लिविंग फूड खाऊँगा। गंदे डैड फूड को हाथ तक नहीं लगाऊँगा।

I take a pledge, never to consume dead food.

Never to consume dead food again.

Say no to dead food

Dead food = Death by food

No more dead food

Drop dead food

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश का भीषण गर्मी में तपती धरा पर गाँव-गाँव में पावन प्रवास : जगाते जा रहे धर्म की अलख : व्यसनमुक्ति एवं गुणशील आदि आयामों से जन-जन का जुड़ाव : मुमुक्षु बहिन अनमोलजी जैन की 6 जुलाई एवं मुमुक्षु सिद्धीजी नाहर की 3 अगस्त हेतु दीक्षाएँ घोषित : सर्वत्र हर्ष की लहर : जयनगर हुआ राममय

जो प्राप्त है वो पर्याप्त है –आचार्य श्री रामेश

जिसका मन शान्त है वही सुखी –उपाध्याय प्रवर

गुलाबपुरा, खारी का लांबा, गागेड़ा, खेजड़ी, जयनगर, शम्भूगढ़।

मन को प्रसन्नता दे जिनका दर्शन। मन में चेतना जगाए जिनका दर्शन।
मन को सुख-शान्ति दे जिनका वचन। ऐसे महान अध्यात्म योगी श्री रामेश को कोटि-कोटि वन्दन।

इस संसार में जो चलते-फिरते तीर्थंकर सम हैं। जो स्वयं अपनी आत्मा का कल्याण कर रहे हैं और जगत् की आत्माओं को आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर कर रहे हैं। ऐसे युगनिर्माता, आगमज्ञाता, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, नानेश पट्टधर, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा द्वारा इस भीषण गर्मी में तपती भूमि पर मारवाड़ से मेवाड़ में जिनशासन की अद्भुत धर्म प्रभावना से जन-जन हर्षित और पुलकित है। गाँव-गाँव, नगर-नगर में जैन-जैनेत्तर सभी त्यागी महापुरुषों के पावन दर्शन कर आध्यात्म का अमृत रस पान कर रहे हैं।

व्यसनमुक्ति एवं गुणशील आयाम से ग्रामीण जनता व छात्र-छात्राएँ तथा शिक्षक वर्ग निरन्तर जुड़ रहे हैं। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर भव्यात्माएँ स्व-पर कल्याण की साधना में निरन्तर समर्पित हो रहे हैं।

मुमुक्षु अनमोल जैन-टिटलागढ़ (उड़ीसा) एवं मुमुक्षु सिद्धीजी नाहर-धमतरी (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा उदयपुर में क्रमश: 6 जुलाई व 3 अगस्त की घोषणा से सर्वत्र खुशी की लहर व्याप्त हो गई। पूर्व में 4 दीक्षाएँ घोषित हो चुकी हैं। और भी दीक्षाएँ संभावित हैं। यह सब आचार्यदेव के अद्भुत अतिशय का परिणाम है। मेवाड़ सहित देश-विदेश से दर्शनार्थियों का तांता लगा हुआ है।

16 अप्रैल, गुलाबपुरा। प्रात: मंगलमय प्रार्थना श्री नि:श्रेयशमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी आगमिक देशना में फरमाया कि ''आज व्यक्ति संसार सुख में डूबा हुआ है, पर ये सब सुखाभास है। आत्मा का सुख सच्चा सुख है। जिसने अपनी आत्मा को जान लिया, जिसने अपने आप को जान लिया, वह पूरी दुनिया को जान लेता है। फिर उसके जीवन में आमुलचूल परिवर्तन हो जाता है। दृष्टि बदलने से सृष्टि बदल जाती है। दुनिया की ऐसी कोई चीज नहीं जिसका स्वाद जीव ने नहीं लिया हो। पुद्गल से कभी तृप्ति नहीं होती। शरीर भी धोखेबाज है, किस पर विश्वास करें? जिस पर विश्वास करेंगे वही विश्वासघात करता है। मात्र धर्म क्रिया न करें, अपितु धर्म में जीना सीखें।''

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने सच्चे श्रावक बनने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय संघ अध्यक्षजी आदि ने आचार्यदेव को तिरण-तारण के जहाज निरुपित करते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती की। गायकों ने गुरुभक्ति का अद्‌भुत नजारा प्रस्तुत किया।

तेला तप	कु. गरीमाजी रांका-बिजयनगर
50 पक्की नवकारसी	जयश्रीजी बोथरा-चैन्नई
माह में 2 दिन मोबाइल का त्याग	नौरतजी चपलोत
माह में 1 दिन मोबाइल का त्याग	रतनजी चौरड़िया, अरूणाजी नाहर

12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास, 12 पोरसी आदि का नियम कई लोगों ने लिया। दोपहर में उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री मुदितमुनिजी म.सा. ने तेले तप की आराधना की।

आसींद के विधायक हगामीलालजी मेवाड़ा व नगरपालिका गुलाबपुरा के चेयरमैन सुमितजी कालिया ने गुरुदर्शन कर विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के बाद कहा कि त्यागी-महापरुषों के पधारने से गुलाबपुरा की धरती पावन और पवित्र हो गई है।

आचार्य भगवन् ने अहिंसा, समता और नशामुक्ति की दिशा में कार्य को आगे बढ़ाने की अद्‌भुत प्रेरणा दी। राष्ट्रीय अध्यक्षजी आदि ने जयनगर संघ की ओर से अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग हेतु विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

आजीवन शीलव्रत	सागरमलजी-सज्जनदेवी सांड-निम्बाहेड़ा

17 अप्रैल, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)। प्रात:काल मंगलमय समता रविवारीय शाखा का आयोजन सामूहिक रूप से हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में निम्न बातों पर देशना फरमाई ''**1. सबके लिए समान दृष्टि रखनी चाहिए। कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। 2. हर आत्मा के साथ हमारा संबंध-संयोग हो चुका है। माता-पिता, भाई-बहिन, परिवार, धन-दौलत आदि सब संयोग हैं। माता-पिता का बहुत बड़ा उपकार है। 3. भोजन शरीर के लिए नहीं, साधना के लिए होना चाहिए। हमें शरीर की सुन्दरता नहीं बल्कि आत्मा की सुन्दरता को निखारना है। शरीर के प्रति ममत्व न हो। 4. साधु के निमित्त ज्यादा आहार न बनाना और न अलग से बनाना। ऐसा आहार साधु नहीं ले सकते।**'' आचार्य भगवन् ने सभा में उपस्थित सभी गुरुभक्तों को उस दिन के लिए संकल्प दिलाया कि व्यक्ति या पदार्थ किसी भी चीज के लिए भी प्रतिक्रिया न करें।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धन की अपेक्षा धर्म को अधिक महत्त्व दें। धन यहीं रह जाएगा, लेकिन धर्म साथ जाने वाला है।

प्रतिदिन धर्मस्थान में एक बार आने, 15 मिनट स्वाध्याय करने एवं घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

वर्ष में एक लाख गाथा का स्वाध्याय	हरीसिंहजी भण्डारी-कपासन
100 पक्की नवकारसी	लालसिंहजी चौपड़ा-अतरिया
50 पोरसी	मंजूजी रांका-जयनगर
होटल का त्याग	सुनीताजी नाबरिया
बाजार की मिठाई का त्याग	विजयजी डांगी, निर्मलजी डोसी, कन्हैयाजी चौधरी

परम गुरुभक्त सुश्रावक उम्मेदमलजी बुरड़-ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त की। बुरड़ परिवार व रिश्तेदारों ने अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

भीलवाड़ा एवं जयनगर संघ की ओर से अक्षय तृतीया हेतु भावभरी विनतियाँ गुरुचरणों में अर्पित की गई। राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी सहित चैन्नई, भीलवाड़ा, नवसारी, ब्यावर, अजमेर, बिजयनगर, जयनगर, बीकानेर, जोधपुर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने गुरुसेवा का अनुपम लाभ लिया। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

18 अप्रैल, खारी का लांबा (भीलवाड़ा)। गुलाबपुरा से छह किलोमीटर का पद विहार कर आचार्य भगवन् का खारी का लांबा महावीर भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री उम्मेदमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें समय मात्र का प्रमाद नहीं करना चाहिए। शुभ कार्यों व धर्माराधना में कभी भी विलम्ब नहीं करना चाहिए। बचपन में समय है, पर समझ और शक्ति नहीं है। जवानी में समझ और शक्ति है, पर समय नहीं है। बुढ़ापे में समय और समझ है, पर शक्ति नहीं है। हमें समय रहते हुए धर्म कार्यों में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। जीवन में सरलता, सहनशीलता आदि गुणों को निरन्तर आगे बढ़ाना चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने संघ की कल्याणकारी प्रवृत्तियों, आयामों से जुड़ने का आह्वान किया।

आजीवन शीलव्रत	कँवरलालजी कावड़िया
होटल का त्याग	सुशीलाजी श्री श्रीमाल

धर्मस्थान में प्रतिदिन आने एवं माह में चार दिन रात्रिभोजन का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। धार्मिक पाठशाला प्रारंभ करने का निर्णय महिला मण्डल ने लिया।

19 अप्रैल, गागेड़ा (भीलवाड़ा)। खारी का लांबा से छह किलोमीटर का पद विहार करते हुए आराध्यदेव आचार्य श्री रामेश आदि ठाणा का जयघोषों के साथ गागेड़ा में श्री रिखबचन्दजी चौधरी के निवास पर मंगल पदार्पण हुआ। यहाँ पर दिनभर दर्शनार्थियों का आवागमन रहा।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री उम्मेदमुनिजी म.सा. ने ''लाखों को पार लगाया है, भगवान तुम्हारी वाणी ने'' गीतिका के माध्यम से फरमाया कि जीवन में सत्संग का बहुत बड़ा महत्त्व है। सत्संग से अच्छे विचार और अच्छे आचरण को बल मिलता है। सत्संग से क्रूर हत्यारे अर्जुनमाली का जीवन सुधर गया। संतों के दर्शन व सत्संग का अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिए। मुनिश्रीजी ने टी.वी., मोबाइल से बचने की प्रेरणा दी। सरपंच श्री हस्तीमलजी चौधरी ने व्यसनमुक्ति अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

माह में चार दिन मोबाइल का त्याग	भोमराजजी चौपड़ा-खेतिया, सुरेशजी श्री श्रीमाल-दुर्ग
जमीकंद का त्याग	लीलाजी श्री श्रीमाल-दुर्ग
रात्रिभोजन त्याग एवं वर्ष में 200 दिन बड़े स्नान का त्याग	कंचनजी चौपड़ा-धमतरी

सुश्राविका विमलादेवी चौरड़िया-चैन्नई के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त की। शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला में ''राम गुरु का है सन्देश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'' कार्यक्रम के तहत व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दोपहर में ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। राष्ट्रीय अध्यक्षजी गुरुसेवा का निरन्तर लाभ ले रहे हैं।

20 अप्रैल, खेजड़ी (भीलवाड़ा)। परम प्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-7 का सात किलोमीटर विहार कर खेजड़ी गाँव में महावीर भवन में जय-जयकारों के साथ पदार्पण हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री अमितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि धन, परिवार में सुख नहीं है। सच्चा सुख धर्म और संयम में है। अनीति से कमाया हुआ पैसा कभी शान्ति नहीं देता। आज हिंसा व स्वार्थ का बोलबाला है। आज हर घर में टी.वी., मोबाइल,

कार, मोटर साईकिल आदि साधन हैं, पर इनसे साधना में कमी आई है। **''न दिन में है चैन और रात में भी बेचैन और कहलाते हैं जैन''**। आधुनिक सन्दर्भ में गीतिका **''विपदाओं से भरी जिन्दगी अमन-चैन का नाम नहीं''** प्रस्तुत की।

कुछ भाई-बहिनों ने गाँव में रहते हुए धर्मस्थान में दिन में एक बार आने का संकल्प लिया। अष्टमी, चतुर्दशी को रात्रिभोजन त्याग का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

चित्तौड़गढ़ संघ अध्यक्ष अशोकजी नाहर ने गाँव में रहते हुए बिना साधु-संतों के दर्शन किए पानी नहीं पीने का संकल्प लिया।

आजीवन शीलव्रत	टीकमचन्दजी चौधरी, राजमलजी चौधरी
टी.वी. का त्याग	रंगलालजी चौधरी
आजीवन मोबाइल त्याग	लक्ष्मीलालजी बाबेल

व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान ग्रामीणों ने लिए। स्कूलों में व्यसमनुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। विद्यार्थियों ने गुणशील के संकल्प लिए।

21 अप्रैल, अंटाली (भीलवाड़ा)। ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य भगवन् का जय-जयकारों के साथ अंटाली गाँव के महावीर भवन में मंगलमय पदार्पण हुआ। दिनभर दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निय में ज्ञानचर्चा हुई। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने धोवन पानी के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। कई भाई-बहिनों ने घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने का नियम लिया।

रात्रिभोजन त्याग	पारसमलजी बाबेल
जमीकन्द त्याग	प्रकाशजी बाबेल
24 उपवास	मयूरीजी बाबेल

परम गुरुभक्त समाजसेवी श्री शान्तिलालजी साँखला-मुम्बई के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त की। स्कूल में ''राम गुरु का है सन्देश व्यसनमुक्त हो सारा देश'' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

22 अप्रैल, दांतड़ा (भीलवाड़ा)। संयम साधक परमप्रतापी आचार्य भगवन् का मंगलमय पदार्पण दांतड़ा में हुआ। शान्ति भवन-भीलवाड़ा के पदाधिकारियों व सदस्यों ने शेखेकाल विराजने की पुरजोर विनती प्रस्तुत की। स्कूल में संत श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि नैतिकता, ईमानदारी, सच्चाई का जीवन में सर्वोत्तम स्थान होना चाहिए। आपश्रीजी ने टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप आदि से बाल एवं युवा पीढ़ी को बचाने के लिए पढ़ाई व स्वाध्याय पर जोर देने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने व्यसनमुक्ति, गुणशील पर विशेष प्रकाश डालते हुए सदैव ऊँचे लक्ष्य रखने की प्रेरणा दी। कैंसर जैसी बीमारी से बचने एवं तन-मन-धन की बर्बादी को रोकने हेतु व्यसनों से दूर रहने की बात महेश नाहटा ने कही। प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगणों ने व्यसनमुक्ति व गुणशील अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। विद्यार्थियों व शिक्षकों ने व्यसनमुक्ति व अन्य कई शुभ संकल्प लिए। ग्रामवासियों व शिक्षण संस्थान के लोगों ने आचार्यदेव के पावन दर्शन कर जीवन धन्य किया।

23 अप्रैल, नया शंभूगढ़ (भीलवाड़ा)। जैन स्थानक भवन में परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''अपनी प्रज्ञा में धर्म की समीक्षा करनी चाहिए। आवश्यक कार्य हेतु जो हिंसा की जाती है वह अर्थ हिंसा और जो अनावश्यक कार्य हेतु की जाती है वह अनर्थ हिंसा कहलाती है। साधु के सम्पूर्ण हिंसा का त्याग होता है। क्षुधा पूर्ति हेतु याचना से भिक्षा लेता है। श्रावक के संपूर्ण हिंसा का त्याग नहीं होता है। परिवार पोषण के लिए श्रावक द्वारा अर्थपूर्ण हिंसा होती है। अनर्थ हिंसा का त्याग श्रावक को करना चाहिए। व्यर्थ पानी का दुरुपयोग नहीं

करना चाहिए। एक बार मोबाइल टच करने से असंख्यात से तेउकाय जीवों की हिंसा होती है। कई बार अनावश्यक रूप से मोबाइल एवं अन्य विद्युत् उपकरणों का उपयोग किया जाता है। आज हमारी संवेदनाएँ समाप्त हो रही हैं। यदि हम ज्ञानपूर्वक, समझपूर्वक धर्म की आराधना करेंगे तो हमारे दृष्टिकोण में बदलाव आएगा। मेरे भीतर संवेदना जागृत हो जाए यह भाव होने चाहिए। धर्माराधना व धर्म स्थानक में समय अधिकाधिक लगाना चाहिए। जितनी ड्रेस आपके पास है उससे ज्यादा स्टॉक नहीं होना चाहिए। यदि दस ड्रेस हो और नई ड्रेस और लेनी हो तो पुरानी ड्रेस का त्याग होना चाहिए। ममत्व कम करने का लक्ष्य होना चाहिए।''

आचार्य भगवन् के आह्वान पर राष्ट्रीय अध्यक्षजी सहित कई भाई-बहिनों ने एतदर्थ शुभ संकल्प लिए।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने धोवन पानी के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कई भाई-बहनों ने घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने का संकल्प लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

24 अप्रैल, जयगनर। श्रद्धा और भक्ति की नगरी तथा राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीजी की जन्मभूमि (पैतृक गाँव) जयनगर में जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्य भगवन् का भगवान महावीर का दिव्य सन्देश ''जीओ और जीने दो'', ''संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'', ''जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'', ''न थांरा है ना म्हारा है, राम गुरु सगळा रा है'' आदि गगनभेदी जयघोषों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जैन समाज के अलावा गुर्जर, ब्राह्मण, नाई, तेली, माली, सुथार, लुहार आदि अनेक समाज के लोग अगवानी में उपस्थित थे। अयोध्या में जैसे राम का पर्दापण हुआ वैसे ही जयनगर में राम गुरु का पदार्पण हुआ।

परम प्रतापी, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''शान्ति बाहर नहीं हमारे भीतर है। कथनी-करनी का अन्तर हमारी अशान्ति का कारण है। हम जैसे अन्दर हैं वैसे ही बाहर से हों। मन, वचन, काया की एकरूपता से ही शान्ति की प्राप्ति होगी। दिखावा और जीवन एक हो जाएँ तो अशान्ति समाप्त हो जाएगी। आज लोगों को पैसों से प्यार है, किन्तु व्यक्ति से नहीं है। विश्व विश्वास पर टिका हुआ है। मैं अगर सही हूँ तो दुनिया से डरने की जरूरत नहीं है।''

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''मेरे तन में है राम, मेरे मन में हैं राम''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने भावोद्गार में कहा कि शुद्ध पावन हृदय, गंभीर आचरण, सरलता की तस्वीर मानो खुद ही प्रभु महावीर हैं। हमने महावीर को नहीं देखा, पर राम गुरु ऐसे महान गुरु हैं जो भगवान महावीर के सिद्धान्तों का पालन करते हुए साक्षात् महावीर लगते हैं। आज चारों ओर हर्ष का वातावरण है। जयनगर संघ अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव की तैयारी में लगा हुआ है। आचार्य भगवन् के गुणशील, समता सर्व मंगल और अन्य अनेक आयामों से परिवार, संघ, समाज और विश्व का उत्थान करने के लिए हम प्रयत्नशील बनें। स्थानीय संघ मंत्रीजी ने कहा कि आज जयनगर संघ, ग्रामवासियों व मेवाड़ के लिए सौभाग्य का सूरज उदित हुआ है। अक्षय तृतीया का पावन प्रसंग हमें प्रदान कर कृतार्थ करें।

महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने के लिए निवेदन किया।

आजीवन शीलव्रत	गौतमचन्दजी-सुशीलादेवी रांका, गणेशलालजी-लाडदेवी रांका
100 संवर	सम्पत्तराजजी कोठारी
जमीकन्द त्याग	शान्तिलालजी रांका, ज्ञानचन्दजी रांका

बाजार की मिठाई का त्याग गौतमजी रांका

मुमुक्षुओं की दीक्षा तिथियों की घोषणा होते ही जय-जयकारों और केसरिया-केसरिया गीतों से वातावरण गुंजायमान हो गया।

एक अलग कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ-जयनगर की ओर से मुमुक्षु बहिन अनमोलजी जैन, सुरेशजी-कान्ताजी जैन, माता विनोदजी जैन-बागोमुंडा, भाई अजीतजी जैन आदि का शानदार स्वागत अभिनन्दन राष्ट्रीय अध्यक्षजी, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीजी सहित स्थानीय संघ पदाधिकारियों ने किया।

मुमुक्षु बहिन अनमोलजी जैन अपने उद्गार में कहा कि महापुरुषों की असीम कृपा एवं परिजनों के सहयोग से मेरी संयम लेने की तमन्ना पूर्ण होने जा रही है। संसार छोड़ने योग्य है और संयम ग्रहण करने योग्य है। अपनी सन्तानों को एक बार आरुग्गबोहिलाभं जरूर भेजें, उनका जीवन सुधर जाएगा।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने मुमुक्षु बहिन के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

25 अप्रैल, जयनगर (भीलवाड़ा)। प्रात:कालीन मंगल बेला में श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने मंगलमय प्रार्थना करवाई। शासन नायक आचार्य भगवन् का ग्यारह साल के लम्बे अन्तराल के बाद पावन सौभाग्य से शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा., श्री मधुरमुनिजी म.सा., श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. से मिलन का अवसर प्राप्त हुआ। इस अद्भुत आध्यात्मिक मिलन को देखकर जनता हर्षित व पुलकित हो गई।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्यदेव ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष को हटाना बहुत ही आवश्यक है। धर्म एक मात्र धर्म है। धर्म क्रियाएँ करना अलग बात है और धर्म को जीवन में उतारना अलग बात है। वीतराग पथ ही धर्म है। जहाँ न किसी के प्रति राग और न किसी के प्रति द्वेष। संत चरण पापों का नाश करने वाला है। धर्म श्रवण करने से कल्याण होता है और पाप के मार्ग की जानकारी मिलती है। सभी आत्माएँ एक समान हैं। आत्माओं में भिन्नता नहीं है। आत्मतत्त्व का बोध प्राप्त करें। साधु से परिचय यानी उसके साधुत्व से परिचय होना चाहिए। जो अपनी आत्मा को जान लेता है वह दुनिया को जान लेता है। हमें शारीरिक सुख-सुविधा की ओर नहीं अपितु आत्मिक सुख-सुविधा की ओर बढ़ना है। संत श्री विनयमुनिजी म.सा. आदि विनय भाव के साथ शासन की अद्भुत प्रभावना कर रहे हैं।''**

शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में **''आज है पुलकित मेरा मनवा, गुरुचरणों में करते नमन''** भजन के माध्यम से फरमाया कि जब भी हो गुरुदेव के दर्शन समझो तीर्थ हो गया। शान्ति तीन स्थानों पर हैं- छोटे-से गाँव में, वृक्ष की छाँव में और गुरु के पाँव में। आज गुरुदर्शन करके जो आत्मिक आनन्द की प्राप्ति हुई है उसे बयां नहीं किया जा सकता। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर विराट व्यक्तित्व के धनी एवं महान साधक हैं। जो आचार-विचार में श्रेष्ठ होते हैं, वे ही तीसरे आचार्य पद और चौथे उपाध्याय पद के अधिकारी होते हैं। आज यह हुक्मसंघ निरन्तर ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहा है। हम संघनिष्ठ आत्मनिष्ठ एवं सच्चे मानव बनें।

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने सभा में मधुरता घोलते हुए ''मुझे गुरुचरण की लगन लगी'' भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि दुर्ग के बाद आज जयनगर में महापुरुषों के दर्शन का सौभाग्य मिला है। हृदय के आँगन में इतनी खुशी है कि हम बयां नहीं कर सकते।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. ने ''आज मेरे राम पधारे हैं, गुरु राम पधारे हैं'' गीतिका प्रस्तुत की। स्थानीय श्रावकों ने आज के दिवस को अलौकिक, अविस्मरणीय बताया।

जमीकन्द त्याग शान्तिदेवी ओझा

होटल त्याग	रतनदेवी रांका
माह में एक दिन मोबाइल त्याग	दलपतजी ओस्तवाल-मंगलवाड़, पुष्पाजी बड़ौला-ओस्तवाल
1000 सामायिक	चांदमलजी रांका
500 सामायिक	रेखाजी पानगड़िया, मंजूजी रांका

स्कूल में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम सम्पन्न हुए। दोपहर में ज्ञानचर्चा हुई। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान बोध करवाया।

26 अप्रैल, जयनगर। समता भवन में मंगलमय प्रार्थना श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म का सार है जैसा मैं अपने लिए व्यवहार चाहता हूँ वैसा व्यवहार दूसरों के लिए करूँ। जीवन में जब धर्म उतर जाता है तो भीतर परिवर्तन हो जाता है। मोक्ष के लिए मोह त्याग जरूरी है। मोह, ममता छोड़ने से विशाल आनन्द की प्राप्ति होती है। वैराग्यवती बहिन सिद्धी नाहर के भीतर संवेग-निर्वेद की भावना जगी और आत्मपथ में आगे बढ़ गई।''**

शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने अपने प्रेरक प्रवचन में फरमाया कि ज्ञानी बनने से पहले सच्चे इन्सान बनें। निन्दा, प्रशंसा में समभाव बनाए रखें। मात्र ज्ञान, थोकड़ा सीख लेने से धर्म नहीं होता। हमारे आचार-विचार में धर्म आना चाहिए। महान आचार्यदेव के सान्निध्य में हम अपने जीवन में बदलाव लाएँ। रोष किसी के प्रति न करें और दोष किसी का ना देखें। श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सच्चा सुख संयम में है। भौतिक पदार्थों में सच्चा सुख नहीं है। शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि ने **''सागर की गहराई में, पर्वत की ऊँचाई में, गुरु महिमा का अन्त नहीं, ग्रन्थों की सच्चाई में''** गीतिका प्रस्तुत की।

इसी बीच मुमुक्षु बहिन सिद्धी नाहर सुपुत्री किशोरकुमारजी ललितादेवी नाहर-धमतरी गातापार बोरझरा (छ.ग.) ने अपनी संयम भावना जाहिर करते हुए प्रतिज्ञा-पत्र का पठन किया एवं अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की असीम कृपा एवं पारिवारिकजनों के सुन्दर संस्कारों व शिविर की प्रेरणा के फलस्वरूप ही आज मेरी संयम की भावना साकार रूप लेने जा रही है। सभी के उपकारों के लिए मैं सदैव ऋणी रहूँगी। वीर पिता श्री किशोरकुमारजी नाहर ने अनुज्ञा-पत्र का पठन किया एवं वीर माता-पिता सहित कन्हैयालालजी-अनितादेवी-लखनपुरी, हेमन्तजी गांधी आदि ने गुरुचरणों में समर्पित किया। केशरिया-केशरिया गीतों एवं **''राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है''** आदि नारे सभा में गूँज रहे थे।

स्थानीय संघ मंत्रीजी ने आचार्य भगवन् के अतिशय का जिक्र करते हुए दीक्षार्थी बहिन का आत्मीय परिचय दिया।

रात्रिभोजन त्याग	शान्तिबाईजी ब्राह्मण
जमीकन्द त्याग	गुणवन्तजी लोढ़ा, चांदमलजी मीठूलालजी सुशीलजी लोढ़ा-निम्बाहेड़ा

दीक्षा में अन्तराय नहीं देने एवं दीक्षा की भावना को आगे बढ़ाने का संकल्प कई लोगों ने लिया। संथारा साधिका रतनबाई शान्तिलालजी लोढ़ा के चौविहार संथारा सहित देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शान्ति सन्देश प्राप्त किया।

एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिन कु. सिद्धीजी नाहर एवं परिजनों का आत्मीय बहुमान श्री साधुमार्गी जैन संघ, जयनगर की ओर से पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने शॉल ओढ़ाकर, माला पहनाकर एवं खोल भरकर किया। महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री रामेश शासन में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है।

मुमुक्षु बहिन व परिजनों के आदर्श त्याग की जितनी सराहना की जाए कम है। मुमुक्षु बहिन ने आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं परिजनों के उपकारों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया।

रात्रि में ग्रामीण भाई-बहिनों को श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने प्रवचन अमृतपान कराया, जिसमें सभी जीवों की रक्षा करने, ईर्ष्या, चिन्ता से दूर रहने, जीवन में कभी गुस्सा नहीं करने, सदैव मधुर बोलने, सरल-शान्त जीवन जीने की अद्भुत प्रेरणा दी।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने गुणशील आयाम से जुड़ने का सभी से आह्वान किया। व्यसनमुक्ति व गुणशील के संकल्प हुए।

27 अप्रैल, जयनगर। समता भवन में मंगलमय प्रार्थना श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने सुमधुर स्वरों में करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''साधु के दर्शन पुण्यकारक होते हैं। हमें जीवन में सदैव लक्ष्य के प्रति समर्पित होना चाहिए। श्रावक का लक्ष्य आरम्भ-परिग्रह से मुक्त होने, साधु जीवन स्वीकार करने एवं अन्तिम समय संलेखना-संथारा ग्रहण करने का लक्ष्य रखना चाहिए। जम्बूकुमार ने अपना लक्ष्य बनाया और अपनी शादी के दूसरे दिन ही अपनी पत्नियों एवं अनेक जनों के साथ अपने संयम जीवन के लक्ष्य को पूर्ण किया।''**

शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नवकार महामंत्र में आचार्य का पद गरिमापूर्ण है। जो आचार-विचार में श्रेष्ठ होते हैं वे ही इस पद के सच्चे अधिकारी होते हैं। यह पद जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व का पद है, कोई बच्चों का खेल नहीं। आज आचार्य भगवन् के साथ उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. के दर्शन कर मन आह्लादित हुआ है। आप महान साधक हैं, संयम के सजग प्रहरी हैं, ज्ञान के सागर हैं। व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व की पूजा होती है। साधु नहीं, साधुत्व की पूजा होती है। चरण नहीं, आचरण की पूजा होती है। दोनों महापुरुषों के प्रबल पुरुषार्थ से आज संघ निरन्तर ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है।

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर चलते-फिरते आगम हैं। **तिन्नाणं तारियाणं** के जहाज हैं। दोनों महापुरुषों के जीवन के कण-कण में आगम समाए हुए हैं।

श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने ज्ञान हानि व ज्ञान प्राप्ति के कारणों की व्याख्या करते हुए निरन्तर ज्ञान-ध्यान सीखने की अद्भुत प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि ने **''तूं सांचो, थारो सांचो रे दरबार रे''** गुरुभक्ति गीतिका प्रस्तुत की।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का विभिन्न क्षेत्रों को पावन करते हुए धर्मनगरी जयनगर में पधारते ही चारों ओर खुशियों का माहौल व्याप्त हो गया। सभा में उपस्थित जनता ने प्रतिदिन 15 मिनट धार्मिक पुस्तक पढ़ने का संकल्प लिया।

वर्ष में 2 तेले, 12 उपवास	कमलादेवी रांका
व्यसनमुक्ति का नियम	लालचन्दजी रांका
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	छितरमलजी सूर्या, रिखबचन्दजी सूर्या

जयनगर के जैनेत्तर भाई-बहिनों ने हर एक कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र की विशेष व्याख्या की।

सजोड़े आजीवन शीलव्रत	श्री गौतमचन्दजी-मंजूदेवी रांका, जयनगर, ओंकारमलजी गुर्जर, हीरालालजी गुर्जर, रामलालजी गुर्जर, रायमलजी गुर्जर, भागीरथीजी गुर्जर-गोपालपुरा

28 अप्रैल, पुराना शंभूगढ़। आचार्य भगवन् आदि चारित्रात्माओं का वर्द्धमान जैन स्थानक में जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परमप्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''बाहर के पदार्थों से मिलने वाला सुख क्षणिक है। आत्मा का आनन्द अपार सुख देने वाला है। धर्म शरीर के सुख के लिए नहीं अपितु आत्मा के आनन्द की ओर ले जाता है। हमारी दृष्टि शरीर पर नहीं, आत्मा पर होनी चाहिए। फिर जीवन में कोई ऊहापोह की स्थिति नहीं रहेगी। कोई कुल्हाड़ी से काटे या कोई फूल बरसाए, कोई फर्क नहीं रहेगा। शरीर और भौतिक पदार्थों के ममत्व से दूर होने की जरूरत है। आत्मा की चर्चा करना सरल है, पर आत्मा की राह पर चलना बहुत ही कठिन है।''

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि साढ़े तीन करोड़ रोम-रोम में देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। भक्ति में दिखावा, प्रदर्शन व बनावटीपना नहीं होना चाहिए। महिला मंडल ने **''सोने रो सूरज उगयो''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के आगमन को अनन्त पुण्यवानी का उदय बताते हुए अधिक से अधिक विराजने की विनती की।

आजीवन शीलव्रत	धर्मीचन्दजी चंचलदेवी सिंघवी, शिखरचन्दजी बोरदिया
जमीकन्द का त्याग	सुगनचन्दजी डूंगरवाल
रात्रिभोजन त्याग	मदनलालजी जैन, सन्तोषजी आँचलिया

वीर पिता वर्द्धमानजी कटारिया ने तेले तप का प्रत्याख्यान लिया।

दोपहर में श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने साधु भिक्षाचर्या एवं संतों से बातचीत व व्यवहार की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पुराना शम्भूगढ़ की सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय रही।

29 अप्रैल, पुराना शंभूगढ़। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्यदेव ने अपनी अमृत निर्झर वाणी में फरमाया कि ''ज्ञान जब आचरण में उतर जाता है तभी वह सच्चा ज्ञान है। ज्ञान का फल आचरण है। ज्ञान को आचरण में आना जरूरी है। भगवान महावीर ने ज्ञान को आचरण में ढ़ाला। ज्ञान आचरणयुक्त होने से ही सच्चे सुख की प्राप्ति होगी। मन के विपरीत कोई बात आ जाए तो क्रोध आ जाता है। क्रोध के क्षणों में अपना संतुलन बनाए रखना बड़ा कठिन कार्य है। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष से आत्मा भारी बनी हुई है। जब तक आत्मिक-धार्मिक ज्ञान नहीं होगा तब तक प्रगति नहीं हो सकती। ज्ञान आचरण में ढ़ल जाना चाहिए। इसके लिए सतत् प्रयत्न करना होगा।'' आचार्य प्रवर के श्रीमुख से ''आज मैं किसी की प्रतिक्रिया नहीं करूँगा'' संकल्प पूरी सभा ने लिया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''**जीवन में सुखी कौन है? क्या जिसके पास धन, सम्पत्ति, पद-प्रतिष्ठा, शोहरत है वह सुखी है? वास्तव में सुखी वह है जिसका मन शान्त हो। धोखाधड़ी करना गलत है, फिर भी करता है। वह शान्त नहीं है। जो सही को समझता, सही को पालन करता है वही सुखी है। कोई काम गलत है यह जानते हुए भी वह कार्य कर रहा है, लेकिन हमें सही करने की हिम्मत करनी है।**''

श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सुख में फूलना नहीं, दु:ख में घबराना नहीं।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. ने आदि साध्वीवृन्द ने ''गुरु राम की जय हो'' गीतिका प्रस्तुत की।

शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा. का जोधपुर से विहार करते हुए गुरुचरणों में पधारना हुआ।

धर्मस्थानक में प्रतिदिन एक बार आने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया।

रात्रिभोजन त्याग	गौतमजी संचेती, ज्योतिजी मेड़तवाल, खुशबूजी रांका
एकासन का एकान्तर	ललितजी कटारिया-रतलाम
1000 सामायिक	कमलादेवी डागा-गंगाशहर
बाजार की मिठाई का त्याग	ममताजी सिंघवी, कमलाबाई सांड
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	अजयजी बाफना-शिरपुर, पूर्णिमाजी कटारिया-रतलाम, आशाजी पामेचा, फूलादेवी डूंगरवाल

दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने सचित्त-अचित्त की जानकारी प्रदान की। चैन्नई, बैंगलोर, अमरावती, शिरपुर, ब्यावर, कोलकाता, बिजयनगर, उदयपुर, जयनगर, जोधपुर आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

30 अप्रैल, पुरानी परासोली। समाजोत्थान के आयामों के प्रदाता आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का समता भवन जयनगर से 8 किमी. विहार कर जय-जयकारों के साथ पुरानी परासोली महावीर भवन में मंगल पदार्पण हुआ।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रावक को आगम ज्ञान होना बहुत जरूरी है। साधु-संतों की हम जय-जयकार करते हैं, लेकिन उनके संयमी जीवन में सहायक बनना है। साधु के लिए जल्दी और ज्यादा आहार बनाना नहीं है। मुनिश्री ने अनाचार पर विस्तार से समझाइश दी। धोवन पानी के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। घर में रहते हुए एक गिलास धोवन पानी पीने का नियम 21 भाई-बहिनों ने लिया। दिन में एक बार धर्मस्थानक में आने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

बाजार की मिठाई का त्याग	विमलाजी बंब
वर्ष में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग	पिस्ताजी बंब
माह में एक दिन मोबाइल का त्याग	पारसमलजी कांठेड़, हेमलताजी कोठारी, शान्तिलालजी संचेती, समताजी बंब

आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने दर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लिया। राष्ट्रीय मंत्रीजी आदि श्रावकों ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पुरानी परासोली की सेवाएँ सराहनीय रही।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा., शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-7 समता भवन, जयनगर में विराजमान हैं। धर्म-ध्यान की पावन गंगा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। त्यागी-महापुरुषों के मेवाड़ क्षेत्र में आगमन से धर्मप्रेमी जनता हर्षित व पुलकित है।

विगत दिवसों में आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर व विराजित समस्त चारित्र आत्माओं के दर्शन-वंदन हेतु बड़ीसादड़ी, बोहेड़ा, सूरत, पूना, बिजयनगर, गुलाबपुरा, ईरोड़, मुम्बई, खेतिया, जगदलपुर, तोंगपाल, दुर्ग, मैसूर, पिपलियामण्डी, खेतिया, चैन्नई, विजयनगर, मुम्बई, धमतरी, आसींद, चित्तौड़गढ़, मैसूर, ब्यावर, उदयपुर, जयनगर, भीलवाड़ा, रतलाम, भीम, बैंगलूरु, शंभूगढ़, दिल्ली, बीकानेर, कोलकाता, नोखा, कपासन, देवरिया, शेरपुर, हैदराबाद, नागदा जंक्शन, गंगाशहर आदि स्थानों से दर्शनार्थी उपस्थित होकर दिव्य देशनाओं से प्रभावित हुए।

-महेश नाहटा

समाज जागृति में अग्रणी

श्रमणोपासक की सुखद यात्रा

ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने ''ज्ञानवान एवं क्रियावान'' श्रावक-श्राविका समाज के निर्माण के नित नए आयामों से हम सभी का मार्गदर्शन किया है। श्रमणोपासक के माध्यम से समय-समय पर विभिन्न आयामों के संदर्भित सामग्री प्रकाशित कर पूर्ण प्रयास किया गया, जिससे लोगों में इस दिशा में उल्लास व जोश जगा।

श्रमणोपासक सदैव ही पाठकों को रचनात्मक राह पर आगे बढ़ाने एवं आत्मकल्याण के लिए जागृत करने की दिशा में प्रयासरत रहा है। इसी की एक झलक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास कर पुन: इस दिशा में पूर्ण जोश व मनोयोग से कदम बढ़ाने का आह्वान कर आचार्यदेव उवं उपाध्याय प्रवर के प्रयासों में शामिल होने का निवेदन करता है।

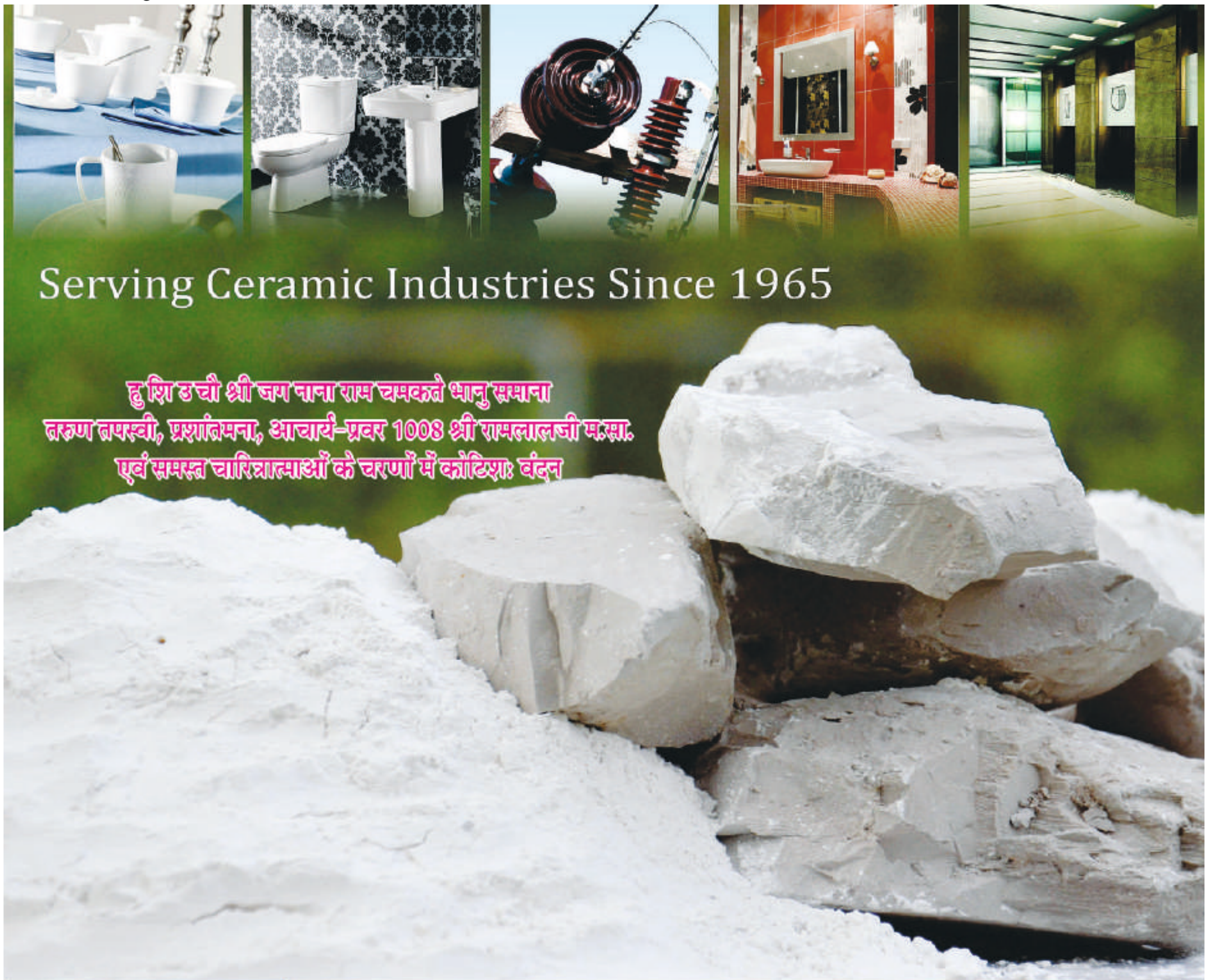

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 I Email: sipanigrand@gmail.com

आयामों को उकेरें चित्रों में

जन-जन की आस्था के केन्द्र परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने साधना की अनन्त गहराइयों में डुबकी लगाकर प्राणीमात्र के कल्याण के लिए लगभग प्रतिवर्ष एक नया आयाम हमें प्रदान किया है। आप द्वय महापुरुषों का अनुसरण करते हुए लाखों जैन एवं जैनेत्तर समाज ने इन आयामों को आत्मसात् कर समाज उत्थान के साथ-साथ स्वयं की कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया। अब हम श्रमणोपासक के माध्यम से इन आयामों को पुन: जागृत करने के उद्देश्य से एक प्रतियोगिता का आयोजन करने जा रहे हैं, जिसमें आपको आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त विभिन्न आयामों को अपने चित्रों के माध्यम से उकेर कर आयामों के संदेश व भाव को प्रदर्शित करना है। चित्र इतना सरल व सारगर्भित हो कि उसे देखने वाला उस आयाम के मूल भावों व संदेश को सहज ही समझ सके।

1. प्रथम तीन विजेताओं के चित्रों को श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जाएगा।
2. प्रथम दस विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।
3. प्रथम 50 विजेताओं को प्रशस्ति पत्र (सर्टिफिकेट) प्रदान किया जाएगा।
4. आपके द्वारा बनाए गए चित्र हमें व्हाट्सएप्प नं. 9314055390 अथवा ई-मेल news@sadhumargi.com पर 15 जून 2022 से पूर्व भिजवावें। प्रतियोगिता के लिए कोई आयु सीमा नहीं है। अपनी रचनाओं के साथ अपना नाम, पता एवं मोबाइल नं. अवश्य भेजें।

यह बात विशेष ध्यान में रखें कि चित्र केवल हाथों से ही बनाया गया हो और आयामों को समझाने हेतु मर्यादित चित्र ही बनाए जा सकते हैं। तीर्थंकर अथवा चारित्रात्माओं के चित्र न बनाए जाए यह बात विशेष ध्यान में रखें।

-सह सम्पादिका

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, मो. : 9509081192
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

आजीवन (अर्द्ध मूल्य)	(केवल भारत में)	500/-
	(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक	(केवल भारत में)	60/-
	(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक	(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य		10/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-
E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner
State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	publications@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231933008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक
लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
•SINCE 1977•

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING
LEAK PROOF
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
UV STABILIZED
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
IS 15778 : 2007 ISI CM/L NO : 2526149
cftri CERTIFIED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक :**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261